नमस्तस्यै

आवरण चित्रः श्रीमती आशा मिश्र

नमस्तस्यै

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5311-508-1

दाम : 350 रूपया

पहिल संस्करण : 2018
आवरण : श्रीमती आशा मिश्र

प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone: 01202343563

नमस्तस्यै
A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

पूज्य प्रपितामह स्वर्गीय गुमानी मिश्रक

संस्मरणमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाओ देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल।

श्री उमेश मण्डल (बेरमा) बहुत उत्साह ओ परिश्रमपूर्वक एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ टंकित केलाह आओर एकरा पुस्तकाकार देलाह। एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिंद पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

२९ मई २०१८

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए।

नमस्तस्यै

१.

हमर पिताक नाम छलनि हरिकान्त। ओ अपना समयमे मिडिल पास रहथि। कुस्ती खेलाथि। घोड़ा चढ़थि। लगानी ओसुलथि। खेती-बारी करथि। सभ तरहेँ हरल-भरल जिनगी छलनि। दू भाइ छलाह। दूटा बहिन सेहो छलनि। बहिन सभहक बिआह यथासमय सम्पन्न परिवारमे भए गेलनि। तकर बाद लोकक अभाव खटकनि, तेँ हमर बाबा, बाबूक बिआह करा देलखिन। बएस कोनो बेसी नहि रहनि। मुदा ओहि समयमे बिआह हेतु बएसक कोनो प्रतिबन्ध नहि रहैक। नीक कुल-शील देखि कए हुनकर बिआह भेलनि। सासुरमे खूब मान-दान होनि। घोड़ापर सजल-धजल जखन ओ सासुर पहुँचथि तँ गाम दलमलित भए जाइत छल।

साले भरिमे द्विरागमन सेहो भए गेलनि। हमर माए ड्योढ़ीक पुतोहु छलीह। इलाकामे धाक छलनि। नौकर-चाकर लागल रहैत छलनि। दिन कोना बितैक किछु पता नहि चलैक। लोक जाहि सुखक कल्पना कए सकैत छल से सभ सहजहि सुलभ छल।

दुर्भाग्यवश ई समय बेसी दिन नहि रहल। एक दिन हमर बाबू साँझ कए बाधसँ घर अबैत छलाह। रस्तामे कोनो विषधर गछारि लेलकनि आओर कैक हबक्का मारलकनि। ओ देखिते-देखिते चितंग भए गेलाह। ई दुखद समाचार चारूकात पसरि गेल। जे उपचार सम्भव छलैक से सभ भेल। ओझा-गुनीसँ लए चटिबाह धरि सभ अपना तरहेँ प्रयास केलक ,मुदा देहसँ हुनकर प्राण जे निपत्ता भेल

से घुरि नहि आएल। एहि आकस्मिक दुर्घटनासँ सौंसे परोपट्टा हाकरोस कए रहल छल।

ओहि समयमे हमर माएक बएस छलैक बीसम साल। बिआह भेला दू साल भेल रहैक। सुखी-सम्पन्न परिवारमे ओकर बिआह भेल रहैक। इलाका भरिमे ओहि परिवारक धाक रहैक। एहने धाक रहैक जे ओहि घरक लग-पास केओ घोड़ापर नहि चढ़ि सकैत छल। जन-बोनिहार सभ बिना अढ़ौने दिन-राति खटैत रहैत छल। अन्न-पानि करमान लागल रहैत छल। एक पाँतिसँ पचासोटा बखारीमे अन्न भरल रहैत छल। मुदा असमयमे हमर पिताक देहान्तक बाद सभ किछु बदलि गेल।

हमर काका घरक मालिक भेलाह। सैंकड़ो बीघा जमीन छलनि। मुदा हमर माएकेँ केओ देखनाहर नहि। एक तँ लोक चलि गेलै, संग लागल ओकर जमीन- जायदादसभपर हमर काका काबिज भए गेलाह। हमर माएकेँ मात्र खोरिसमे किछु मोन अनाज भेटनि। एतेक जल्दीमे एना भए जाएत से उम्मीद ककरो नहि रहैक।

माएक हालति बेहाल छल। ऊपरसँ संतानक होनहारी सेहो छल। ने चिकरि सकैत छल, ने छाती पीट सकैत छल। जखने होस होइक की भावी संतानक चिन्तासँ आतुर भए जाए। की करए? ककरा कहैक अपन दुख?

मुदा संतानक आगमनक सम्भावना जेठक दुपहरिआमे गाछक छाह सदृश छल। ओएहटा उम्मीद बाँचल रहि गेल रहैक। गाम-घर गामे-घर होइत छैक। केओ ककरो मुँह नहि रोकि सकैत अछि। अपन-अपन सुरमे सभ मस्तंग रहैत अछि। स्त्रीगणसभकेँ

तँ कोनो मसाला चाही। मिनटोमे बात गाम भरिमे पसरि जाएत। सएह भेल जखन हमर जन्मक समय आएल। सभ कहए लागल जे ई संतान अशुभ थिक। अभागल थिक। जन्मसँ पहिने अपन पिताकेँ खा गेलि..!

बात एतबे नहि भेलैक। मसोमात तँ ओ भइए गेलीह संगहि गर्भवती रहथि। ताहि बातकेँ जोर-सोरसँ प्रचारित कएल गेल जाहिसँ समाजक जानकारीमे बात आबि जाए। समाजक खिधांससँ बचबाक हेतु ई जरूरी छल।

की भेलैक, किएक भेलैक, ओहिमे ओकर की दोष जे एहि पृथ्वीपर आएलो नहि अछि? ओ तँ अपने अज्ञात भविष्य दिस बढ़ि रहल छल। कहि नहि जन्मक बाद ओकरा के देखत? माएक कनूनी अधिकार नाममात्रक छलैक वा किछु छलैहे नहि। पिता गुजरि गेल रहैक। धन-सम्पत्तिक उत्तराधिकारी के होएत से भावी संतानक लिंग तय करतैक। कानूनक निर्माता सभक स्त्रीवर्गक प्रति निष्ठुर दृष्टिक कारणेँ आधासँ अधिक जनसंख्या शक्तिहीन बना देल गेल छल। मुदा किएक? एकर उत्तर के देत? गुलाम समाजकेँ अपन हाथ-बाट तँ होइत नहि अछि। सएह अपनो देशमे होइक। भारतमे की कानून लागू होएत से ब्रिटिश संसद तय करैक। ❑

२.

केओ किछु केओ किछु बाजए लागल। लोक जे कहौक ,मुदा हमर काका बड़ खुस भेल रहए। भाँग पीबि बैसले छलाह कि हमर जन्मक समाचार भेटलनि। बेटी भेल रहैक ताहि बातकेँ पाछू राखि हमर पिताकेँ संतान भेलैक, पहिचान रहि गेलैक ताहि बातसँ

ओ बहुत खुस भेल रहथि। महादेव! महादेव! कए चिकरि उठल रहथि। प्रसन्नतामे नचारी गाबए लागल रहथि। देआद-बादसभ जमा भए गेल रहए। गामक लोकसभ से आबि गेल रहए। एहन आनन्दक समय एतेक जल्दी आएत से उम्मीद नहि रहैक। यदि बेटा भए कए अबितहुँ तखन की होइत, कतेक उत्सव होइत से सोचल जा सकैत अछि। हमर जन्मक समाचार बिजलोका जकाँ पसरि गेल। बधाइ देबए वलाक ओर-अन्त नहि छल। ईसभ चलिए रहल छल कि हिजड़ासभहक मण्डली नचैत-गबैत पहुँचि गेल। आठ-दस आदमीक गुट छल। ककरो हाथमे ढोल, ककरो हाथमे झालि, केओ हरमुनिआ तँ केओ मजीरा पीटि रहल छल। एकटा हिजड़ा नचैत-नचैत हमर काकाकेँ गछाड़ि लेलक। दोसर सोहर गाबि-गाबि लोकक मोन रिझाबए लागल। तेसर, चारिम झौहरि खेलाए लागल। देखिते-देखिते तेहन माहौल बनल जे हमर काका सन्दुक खोलि देलखिन। मुँहमांगा बकसीस देलखिन। हिजड़ासभ मस्त भए नचैत-गबैत ओहिठामसँ प्रस्थान केलक।

गाम भरिमे उत्साहक माहैल। जकरे देखू मस्त भेल चलि रहल अछि। बधाबा बाजि रहल छल। अवसर छल ड्योढ़ीमे देवनक ओहिठाम कन्याक जन्मक।

प्रसन्नताक बाते छलैक। दू पुस्तसँ ओहि परिवारमे कन्या भेले नहि छलैक। फेर एहि कन्याक तँ पिता किछुए दिन पूर्व गुजरि गेल रहैक। ओहि समय विधवा बनल हमर माए एकदम जबान छलीह। कहि नहि, कोन साँप कटलकैक जे हमर पिता टन दए रहि गेलाह। कोनो इलाजो नहि भए सकलनि । हमर माए मसोमात भए गेलीह।

ओमहर हमर माए संतानक जन्म दए बेसुध छलि। कनिको

होस होइक तँ कानए लागैत। लोकसभ अपसिआँत भए गेल। अपना तरहसँ सभ प्रयास कए थाकि गेल ,मुदा ओकर मोन ठहरबे नहि करैक। संतानक मुँह देखि जे आनन्द होइक से पतिक मृत्युक पीड़ासँ दबि जाइक। थोड़बे दिन पहिनेक गप्प छलैक। कोना बिसरि जइतैक? बिसरबोक सीमान होइत अछि। तकरो हेतु किछु समय चाही। अखन तँ घाव हरियरे छलैक। ओहो एहन जकर पीड़ा जीवन भरि भोगवाक रहैक। बैधब्यक व्यथासँ आहत ओकर अन्तर्मन बुझि नहि पाबि रहल छलैक जे अपन भावी संतानकेँ कोना कए स्वागत करए। तथापि दग्ध मोनकेँ एकटा आश तँ भइए गेल रहैक। सएहसभ आस-पड़ोसक लोकसभ बुझबाक प्रयास करैक। मुदा ओकर मोन वशमे रहए तखन ने..?

हमर दाइ माएकेँ बुझेबाक बहुत प्रयास केलनि । मुदा ओ सम्हरबे नहि करथि । सभ परेसान भए गेल रहैक। आखिर एहि दूधपीबा बच्चाक पालन केना हेतैक ? एकर माएक सुधि-बुधि हेराएल छैक! सुधरबाक नामे नहि लए रहल छैक..! मुदा समय समाधान अपने अनैत छैक। संतानक मुँह देखि-देखि माएक ममत्व जगलैक। ओ सिनेहसँ चैं-चैं कनैत अपन संतानकेँ करेजमे साटि लेलक। माएक संसर्गसँ बच्चाकेँ जे भेलैक से भेलैक लोकसभ आश्वस्त भेल। हमर दाइ बहुत प्रसन्न भेल रहथि। केओ चिकरि उठल-

“आब बच्चा बचि गेल । ओकर माएकेँ सुधि फिरि गेलैक।”

हमर माए हमरा दूध पीआबए लागलि। अपन करेजसँ सटल संतानकेँ देखि बाजि उठलि-

“अपराजिता... ।”

समाज सभ दिन अपन सुविधानुसार नियम, कानून बनबैत अछि। सामर्थ्यवान, सम्पन्न लोककेँ जाहिसँ असुविधा नहि होइक सएह कानून बनि जाइत अछि, समाजक नियम/विनियम सेहो तेहने भए जाइत अछि। उचित/अनुचितके देखैत छैक? एहि संसारमे नित्य नाना प्रकारक अन्याय होइत अछि, निर्दोष लोकक हत्या कए देल जाइत अछि, कतेको नवालिगक अपहरण भए जाइत अछि, कतेको बालिका जनमिते जंगलमे फेकि देल जाइत अछि, भगवान की कए लैत छथि? पूर्वजन्मक कर्म, भावी प्रवल, भागक रेख पता नहि की-की व्याख्या कए घटना/दुर्घटनाकेँ दबा देबाक माहौल बनाओल जाइत अछि। भोर होइत अछि, साँझ होइत अछि, सभ अपनामे बेहाल रहि जाइत अछि। जे हेबाक से होइत रहैत अछि।

हम बेटी भए जन्मल रही। यदि बेटा भए अबितहुँ तँ राजक मालिक होइतहुँ। सौ बीघा जमीन-जायदाद, कलम, पोखरि, विशाल महल, सभक उत्तराधिकारी होइतहुँ। बेटी भेलहुँ ताहिमे हमर की अपराध? प्रकृतिक व्यवस्था कही, नियति कही वा महज संयोग, जे केओ बेटा केओ बेटी जनमैत अछि। बस एतबे बातसँ ओकर भाग्य बदलि जाइत छैक। अधिकार बदलि जाइत छैक। हमरा संग सएह भेल। बेटी हेबाक कारण तत्कालीन कानून पैतृक सम्पत्तिमे हमरा गुजर-बसर ओ बिआहक व्यबस्थाक अतिरिक्त किछु अधिकार नहि दए सकल।

हम तँ निर्वोध बच्चा रही। दूध पीबी, कानी आओर की- की करी से किछु स्मरण नहि अछि। मुदा हमर माए इएह सोचैत रहैत छल जे हम यदि बेटा होइतहुँ तँ ओकर भाग्य किछु आओर होइत।

हमर जन्मक समाचार गाम-गाम पसरि गेल। सर-कुटुम्बसभ बेरा-बेरी आबए लागल। हमर नाना बहत रास उपहारसभ लेने अएलाह। के-के नहि आएल। हमर पिताक आकस्मिक, असामयिक निधनक बाद एतेक जल्दी शुभ समाचार भेटल रहैक। केओ पाछू नहि रहए चाहलक। सभ आएल, सभ गेल ,मुदा हमर माएक अन्तर्मन अपन पतिक देहावसानसँ तेना ने रुक्ष भए गेल रहैक जे ओकरा फेरसँ हरिआएब सम्भव नहि लगैक। ओ एक हिसाबे विक्षिप्त भए गेलि छलीह। खने हमरा दुलार करैत आ खने कानए लगैत।

एही तरहेँ मास दिन समय बीति गेल। हम कनेक-मनेक हाथ-पएर हिलाबए-डोलाबए जोगर भेल होएब कि बड़ी जोर पेट झड़ी होमए लागल। ओहि समयमे कोनो डाक्टरी इलाज तँ रहैक नहि। हम जीब की मरब से हाल भए गेल। हमर माएकेँ बड़का झटका लगलैक। ओसभ किछु बिसरि हमरा अपन करेजसँ सटने रहैत। भगवानकेँ रहि-रहि कए सुमरैत।

“हे दीनानाथ! एकरा ठीक कए दहक। हे भगवती! एकरा ठीक कए दिऔक...।” -एतबे रटैत। मुदा ओकर गोहार सुनल गेलैक। गाममे एकटा बैद छलाह। ओ किछु-किछु दबाइ-दारु केलाह। झार-फूक सेहो भेल। सभक परिणाम भेल जे हम ठीक भए गेलहुँ। हमर माएक जान-मे-जान आएल। तकर बाद ओसभ किछु बिसरि हमरामे लागि गेलि से लगले रहलि।❑

३.

समयक चक्र आगू घुमल। घुमैक छलैक। हम अपन माएक

कोरमे सुरक्षित रही। दूधपीबा बच्चाकेँ आओर चाहबे की करी? दूध आओर दुलार दुनू भेटि रहल छल। मुदा हमरा की पता जे हमर पिता हमरा आबए-सँ पहिनहि प्रस्थान कए चुकल छथि। हमरा की पता जे यदि हम बेटा भए जन्म लितहुँ तँ ओहि राजपाटक उत्तराधिकारी होइतहुँ जे बेटी भेनहि चुकि गेलहुँ। मुदा हमर माएकेँ एकर अखियास रहैक। घर वला चलि गेलैक से कष्ट छलैहे, हमरा बेटा नहि भेने दोसर-दोसर कष्ट होमए लगलैक।

क्रमशः देआद-बादक रुखि बदलए लागल। ओहि समयमे मसोमातक सामाजिक अधिकार जे रहैक से ओकरो भए गेलैक। असगरि हमर माए की-की करितए? हमरा पालथि, हमर पिताक असमय निधनक स्मरणमे दिन-राति अपसिआँत रहथि। गुजर-बसरक व्यवस्था करथि। समाज ओ कानूनसँ मात्र खोरिसक अधिकारिणी छलीह, से भेटि रहल छलनि। हमर चिन्ता सेहो ओकरा होइत छलैक। केना बढ़ब, के देखत, केना बिआह होएत?

हमरा लए एतेक चिन्ता तखनहिसँ करब जरूरी नहि छलैक। हमरा अखनो से सोचि हँसी लागि जाइत अछि। बिआह कए अपन दायित्वक इतिश्री करबा हेतु व्याकुल रहबाक कोनो तरहेँ उचित नहि कहल जाए सकैत अछि। आइ-काल्हिक समय नहि रहैक। जतेक कम बएसमे बेटी बिआहल जाएत ततेक प्रतिष्ठा सुरक्षित रहत। लोकक सोच एहने रहैक। ताहिमे एकटा मसोमात कइए की सकैत छलीह?

एक असामयिक घटना जाहिपर ककरो वश नहि छलैक, जे हमर युवा, स्वस्थ सभ तरहेँ सम्पन्न पिताक देहावसान कए देलक, ओहि परिवारक भविष्यकेँ उलटि देलक। यदि हमर पिता जीवित रहितथि, तखन ककरो हिम्मति नहि होइतैक जे हमर माएक ई हाल

करैत। जे-से एकटा उपदेश लए ठाढ़ नहि रहि सकैत। ओकर आर्थिक सामर्थ्यकेँ एना निचोड़ि नहि सकैत। मुदा ईसभ तँ आब मात्र कल्पने रहि गेल छल। यर्थाथक धरातलपर ठाढ़ हम एकटा नान्हिटा बच्चा आओर तकर मसोमात माएकेँ कोनो बहुत विकल्प नहि छलैक।

सभ किछु होइतहु गाम-गामे होइत छैक। हमर पिताक सहोदर तँ भाँगमे मस्तंग रहैत छलाह, मुदा हुनकर पितिऔतसभमे कए गोटाक ध्यान हमरापर रहैत छलैक। एक दिन हमर काका अपन पितिऔतसभसँ गप्प करैत छलाह कि ओसभ हमर चर्च उठा देलखिन। सभहक बच्चा इसकूल जाइत छलैक। हम असगरि घरमे टल्ली मारैत रहैत छलहुँ। पाँचम वर्ष भए गेल छल...।

हमर काकाकेँ माथमे ई बात धँसलैक। आन बच्चासभक संग हमरो नाम इसकूलमे लिखा देलक। पहिलबेर मास्टरक मुहेँ अपन नाम सुनलिऐक-

“अपराजिता।”

हम कतेक प्रसन्न भेल रही। ओहि दिन इसकूल जाए। मारि बच्चा सभकेँ हँसैत, बजैत देखलिऐक। चटिआसभकेँ खाइत देखिऐक। बच्चासभकेँ खेलाइत, धुपाइत देखिऐक। ततेक नीक लागल जे नित्य भोर होइते माएकेँ इसकूलक तैयारी करए हेतु विवश कए दिऐक। इसकूल हमरा हेतु जबरदस्त आकर्षण भए गेल छल।

नित्य-प्रतिक दिनचर्यामे इसकूल जाएब सभसँ प्रिय लगैत छल। गामक एक छोरपर इसकूल छल। ओहिठाम पाँचमा धरि पढ़ाइ होइत छलैक। आगू पढ़बाक हेतु गाममे इसकूल नहि छलैक। ताहि हेतु गामसँ बहराएब जरूरी छलैक। गामसँ पाँच माइल दूर

उच्च विद्यालय छलैक। गामक एकाधटा बच्चा ओतए पढ़ैत छलैक। दूरी ओ कतेको तरहक असुविधाक कारण अधिकांश बच्चाक पढ़ाइ-लिखाइ पाँचमे धरि सीमित भए जाइत छलैक। तकर बाद ओसभ अपन पुस्तैनी व्यवसायमे लागि जाइत छल। एहन परिस्थितिमे हम आगू पढ़ि सकब तकर सम्भावना बहुत कम छल। तकर हमरा कोनो चिन्ता नहि छल। सत कही तँ ज्ञानो नहि छल जे पाँचमाक बादो पढ़ाइ होइत छैक आओर यदि होइत छैक तँ कतए? बहुत आगू सोचि कए होइतैक की? जखन जे हेबाक हेतैक सएह हेतैक। तेँ वर्तमानमे ओहि इसकूलक नित्य-प्रतिक दिनचर्यामे बान्हल रहब प्रर्याप्त छलैक।

इसकूलमे कैकटा बच्चासभ हमर दोस्त बनि गेल। ओहिमे अधिकांश लग-पासक गामक छलैक। तेँ इसकूलक बाद हुनकासभसँ भेँट नहि होइत छल। इसकूल जेबाक एक प्रमुख आकर्षण अपन दोस्तसभसँ भेँट-घाँट होइत छल।

इसकूल लग पहुँचिते जेना चुहचुही बढ़ि जाइत छल। बच्चासभकेँ फुदकैत-खेलैत देखि हमरो मोन ओहिमे अविलंब मिलि जेबाक हेतु व्यग्र भए जाइत छल। इसकूल पहुँचलहुँ, झोरा फेकलहुँ आओर भागलहुँ बच्चासभक लग। पता नहि कहाँसँ एतेक गप्पसभ फुराइत छल। ताबतेमे प्रार्थनाक घन्टी बजैत। बच्चासभ भागैत प्रार्थना करए। हमर स्वर नीक छल। प्रार्थना करबेबाक हेतु हमरे भार देल गेल छल। हम निधोख सुस्वर सरस्वती बन्दना करी आओर तकर बाद प्रारम्भ होइत छल पढ़ाइ-लिखाइ जे चारि-पाँच घन्टी धरि चलैत रहैत छल। बीचमे खेलक घन्टीमे राजकुमार, हरिनन्दन, अरुण, गरमसिंह एक दिस आओर लड़कीसभक

एकदिस खेल-धूप होइत छल। ❑

४.

एक दिन सौंसे गाममे हल्ला भए गेलैक जे अपराजिता हेरा गेलि। केओ कहैक लकरसुँघा आएल रहैक, ओएह लए चलि गेलैक। केओ किछु, केओ किछु कहैक। जतेक आदमी, ततेक तरहक गप्प। हमर माए तँ छाती पिटैत-पिटैत बेहाल रहैक। तामसमे हमर काकाकेँ दस हजार फज्झति केलक। मुदा ओ की करितथि? भाँग पीबएसँ हुनका फुरसति होइतनि तखन ने किछु आओर सोचितथि।

भेलैक ई जे हम इसकूल हेतु बिदा भेलहुँ जरूर ,मुदा रस्तामे एकटा बबाजी लबनचूस देलक। लबनचूस खाइते हम बेहोस भए गेलहुँ। तकर बाद की भेलैक, किछु मोन नहि अछि। दू दिनक बाद जखन होस आएल तँ देखी जे एकटा कोनो विशाल भवनमे पड़ल छी। चारूकात बन्द कोठरीमे हम राखल गेल रही। ने केओ आबि सकैत छल आओर ने जा सकैत छल। हमरा ओहि कोठरीमे कोनो चीजक अभाव नहि छल। तरह-तरहक खेलौना, नाना प्रकारक मधुरसँ भरल ओहि कोठरीमे हम असगरे छलहुँ। कखनो काल एकटा बुढ़िआ हमर हाल-चाल पुछए अबैत। हमरा माए मोन पड़ैत, गामक बच्चा मोन पड़ैत, इसकूलक खेल-धूप मोन पड़ैत, ऑखिसँ नोरक धार बहैत देखि ओहि बुढ़िआकेँ सेहो कना जाइक, मुदा ओ बाजैत किछु ने। अपना भरि हमरा बौंसबाक प्रयत्न करैत। किछु-किछु खुआबक प्रयास करैत आओर चलि जाइत।

ओमहर हमर माएक हाल-बेहाल छलैक। ओकर जीबाक

एक मात्र सहारा हमहीं छलिऐक। ओहो परोक्ष भए गेल छलैक। छाती पिटैत-पिटैत कतेको बेर बेहोस भए गेलि। डाक्टर, बैद बजाबए पड़लैक। कहुना-कहुना कए ओकर जान बाँचल।

हम ओहि कोठरीमे बन्द छटपटाइत रही। ओमहर हमर माए बफारि तोड़ए। मुदा हमरा गामसँ अपहृत केनिहार सभ अपन धन्धामे लागल छल। ओकरासभकेँ पता रहैक जे हम अपन परिवारक एकमात्र आशा छी। हमर घरक सम्पन्नताक सेहो ओकरासभकेँ जानकारी भए गेल रहैक। इएहसभ सुनि हमरा अपहृत करबाक योजना बनाओल गेल। कतेको दिन ओसभ हमर पछोड़ केलक। हमर नित्य-प्रतिक आवागमनक समय, रस्तासभक रेकी केलक। आओर एक दिन अपन लक्ष्यमे सफल एहि मानेमे रहल जे हमर अपहरण कए लेलक। ओकरासभकेँ ई अनुमान नहि भए सकलैक जे हमरा पिता नहि छल। ओसभ नहि बुझि सकल जे बिना पिताक बेटी गाछसँ खसल पात जकाँ अछि जे खसत तँ सुखा कए नष्टे होएत आओर किछु नहि। हमर अपहरणकर्तासभ ढाकीक-ढाकी टाका उगाही करए हेतु योजना बना रहल छल। ताहि हेतु हमर काकाकेँ गुमनाम चिट्ठी पठओलक जे तीन दिनक पेसतर ओकरासभकेँ दू लाख टका देल जाए तखने अपराजिताकेँ छोड़ल जाएत अन्यथा ओकर जीवित लौटबाक कोनो सम्भावना नहि। संगहि एहि मामिलाक जानकारी पुलिसकेँ नहि देल जाएत अन्यथा परिणाम घातक होएत। पैसा कखन ओ कतए, ककरा देल जाएत से अलगसँ ओही दिन सूचित कएल जाएत।

ओहि समयमे दू लाख टकाक बड़ महत्व होइत छल। चिट्ठी पढ़ि हमर काकाकेँ तँ जेना लकबा मारि देलकनि । अबाजे नहि

निकलैक, मुदा हमर मोह तँ रहबे करनि । अपहरणकर्ताक हाथे हमरा मरए तँ नहि दितथि। तखन की करथि से फुरा नहि रहल छलनि।

हमर हालति देखि बुढ़िआकेँ बहुत दुख होइक। ओ स्वयं अपहरणकर्तासभसँ त्रस्त छलि। ओकर हार्दिक इच्छा रहैक जे जेना-तेना हमरा ओहिठामसँ निकालल जाए, मुदा कोनो गरे नहि बैसैत छलैक।

ओहि बुढ़िआक अपने खिस्सा रहैक। ओ स्वयं अपन अतीतसँ ओझराएलि, थाकलि, झमारलि परिस्थितिसँ लाचार छलि। नहि चाहिओ कए ओहि दुर्दान्त अपराधीक संगोरमे रहैत छलि आओर ओकरसभक कहल करैत छलि। की छलैक ओकर मजबूरी ओ किएक एना मजबूर भेल छल? तँ सुनि लिअ।

ओहि बुढ़िआक नाम असलमे छलैक पुष्पा। ओ एकटा पैघ घरक पुतोहु छलि। दियादी झगड़ामे ओकर पतिक हत्या भए गेलैक। हत्या केनहार ओकर पतिक अपने सहोदर छलैक जे आब एहि अपराधी गिरोहक सरगना बनल अछि। भाएक हत्याक अपराधमे ओकरा आजन्म जहल भेल। मुदा ओ जहल फानि कए पड़ा गेल आओर से अखन धरि पड़ाएले अछि। पता नहि ककरा-ककरासँ ओकर संगति भेलैक, कतए-कतए गेल। अन्ततोगत्वा, ओ लूट-पाट आओर हत्याक कतेको मामिलामे फँसैत चल गेल।

पुष्पाक पतिक हत्याक बाद ओकर एकमात्र संतानक रक्षाक कोनो ब्योंत नहि रहि गेल। एक राति ओकर देओर ओकरासभकेँ गामक घरसँ उठा अनलक। कहि नहि, कतए-कतए घुमबैत रहल। घुमैत-घुमैत ओसभ एहि जंगल महलमे आनल गेल। ओकर बेटा

कतए निपत्ता भए गेल से बुझिओ नहि सकलि। कनैत-कनैत ओकर नोर सुखा गेल। हृदय पाथर भए गेलैक । विक्षिप्त जकाँ रहए लागलि। मुदा ओकर बच्चाक कोनो अता-पता नहि लागल। पुष्पा अपन दिओरकेँ कतेको बेर अपन बेटाक मारफत हाथ-पैर जोड़लक ,मुदा ओ ठहाका पाड़ए लागए। व्यंग्य आओर

क्रूरता सँ भरल आक्षेपक संग कतहु घसकि जाइत। हत्या, लूटपाट ओकर नित्य-प्रतिक धन्धा छल। ओ तँ दोषी ठहराओल गेल छलहे। केओ आओर की करितैक? जेलमे ओ मोछा ठाकुरक नामसँ कुख्यात छल। जाबे जेलमे रहल, जेलक दादा रहए। छोट-मोट नवागन्तुक कैदीसभ ओकर चाकरी करैत छल। जेलर बाबू सेहो ओकरासँ डरैत छलैक। कारण ओ स्वयं चोर रहैक। कैदी हेतु देल गेल अन्न-पानिकेँ चोरा कए बेचि दैक। अपन पैघ-पैघ मोछक चलते मोछा ठाकुर नाम प्राप्त कए ओ गौरवान्वित छल। भए सकैए मोछा ठाकुरक जेलसँ फरार होमएमे जेलरोक हाथ रहल होइक। ताहि बातक जाँच पड़ताल भेबो केलैक। मुदा जेलर बेदाग साबित भेल आओर मोछा ठाकुर फरार भेल से भेले रहि गेल। ❑

५.

दू दिनक बाद फेर केओ हमर काकाकेँ एकटा चिट्ठी पठओलक। ओहि चिट्ठीमे ओकरा स्थान ओ समयक सूचना देल गेलैक, जतए ओकरा फिरौती लए पहुँचक रहैक। ओहिमे इहो लिखल रहैक जे दगाबाजी केलापर गम्भीर परिणामक हेतु तैयार रहए।

ओतेक पैसाक जोगार एतेक जल्दी नहि भए सकलैक।

तथापि जे किछु सम्भव भेलैक से लए ओ नियत समयपर नियत स्थानपर पहुँचल। मोछा ठाकुर स्वयं ओहिठाम मौजूद छल। पैसाक बोरा लेबाक हेतु अग्रसर भेल कि कतहुँसँ गोली चलबाक आबाज भेल। मोछा ठाकुर ओतहि धराम दए खसल।

ओमहर पुष्पा हमरा लए ओहि कोठरीसँ निपत्ता भए गेलि। भेलैक ई जे मोछा ठाकुर ओकरा हमरा सुंझा ओगाही करए गेल छल। पुष्पाकेँ ई मौका भेटलैक आओर हमरा लेने भागलि। संयोगवश भगैत-भगैत ओ ओहीठाम पहुँचि गेलि जतए मोछा ठाकुरक लास पड़ल छल। हमर काकाक नजरि हमरापर पड़लनि। ओ झपट्टा मारलाह आओर हमरा लैत इएह-ले ओएह-ले चम्पत भए गेलाह।

असलमे भेलैक ई जे मोछा ठाकुरक प्रतिद्वंदीसभ पुलिसक मुखविर बनि गेल छल। ओ सभटा सूचना पुलिसकेँ दए देने रहए। पुलिस तँ ओकरा पाछू छलहे। पुलिसकेँ अबैत देखि ओ भागवाक प्रयत्न केलक, मुदा सफल नहि भए सकल। कनीके कालमे ओकरा आओर पुलिसमे गोलीवारी होमए लगलैक आओर ओ पुलिसक गोलीसँ ठामहि रहि गेल।

इलाका भरिमे हमर लौटि जएबाक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल। हमरा ओतेक होस नहि रहए ,मुदा एतबा तँ बुझलिऐक जे एकटा महान संकटसँ उबरि गेल रही। हमर माएक प्रसन्नताक अंत नहि छल। ओकरा फुरेबे नहि करैक जे हँसए कि कानए। ओहि माहौलमे पुष्पा दिस ककरो ध्यान नहि गेल। हमरा लए कए हमर काका गाम भागि गेलाह। लोकसभ सेहो गाम दिस ससरल। मुदा पुष्पा...। ओ तँ मोछा ठाकुरकेँ मृत देखि ठहाका पाड़ए लागलि। ठहाका ततेक विभत्स ओ जोरदार छल जे सम्पूर्ण वातावरणकेँ

हिला कए राखि देलक। बात एतबेपर नहि ठहरल। ओ प्रचण्ड पागल जकाँ मोछा ठाकुरक लासक चारूकात नाचए लागलि, गाबए लागलि। ओ बड़बड़ाइत रहलि-

"आब ले हमर जमीन-जायदाद। ले हमर घर-घराड़ी। हमर घर वला आबिते होएत। तोरा छोड़तह नहि। अन्यायक प्रतिकार कइए कए रहत। अपन अधिकार लइए कए रहत।"

महाभारतमे दुस्साशनक लासपर नचनिहार पुरुष छलैक भीम जकरा डरे के-के ने डराइक। जकरा कतेको हाथीक बल रहैक। मुदा एतए तँ एकटा वृद्ध महिला चिर प्रतिक्षित प्रतिशोधक अग्निमे धधकि रहल छलि। की ओहो मोछा ठाकुरक छाती फाड़ि देत? लगए तँ तेहने।

पुष्पाक अट्टाहास सुनि किछु ग्रामीण घुरि अएलैक। ओसभ जस-के-तस मुरुत जकाँ ठाढ़े रहि गेल। चीत्कारक स्वर ओकरासभकेँ गतिशून्य कए देलक। केओ किछु बुझिए नहि पाबि रहल छल। आखिर ई वृद्धा के अछि? की कहए चाहैत अछि? ई मृतक एकरा कोन अन्याय केलक?

केओ किछु कहैत ताहिसँ पहिने ओ फेर चिकरए लागलि-

"कतेक बेर अएताह राम? कतेक पाथर बनल अहिल्याक उद्धार करताह। ई कलियुग छैक। सुनैत जाउ औ लोकसभ। तेँ ई राक्षसक नाश रामक प्रतीक्षा नहि कए सकल।"

एतबे बाजल की फेर ओएह ठहाका मारलक। निठ्ठाह पागल भए गेल छलि। गौंआँकेँ के किछु नहि बुझा रहल छलैक जे की करए? पुष्पा ककरो सुनए हेतु तैयार नहि छलि। आखिर बात हमर काकाक कान धरि गेलैक। हमरे संगे तँ ओ आएल छलि। ई बात बुझिते

हमर काकाक आत्मा काँपि उठल। मुदा ओ कोनो हालतिमे हमरा एसगरि नहि छोड़ए चाहैत छलाह। तेँ चारि-पाँचटा बुझनुक लोककेँ पठौलथि जे पुष्पाकेँ कहुना अपना ओहिठाम लए आनए।

पुष्पाक उग्र रूप देखि ककरो ओकरा टोकबाक हिम्मति नहि भेल, बुझेबाक तँ बाते छोड़ू। पता नहि कतएसँ ओकरा हाथमे दबिला आबि गेलैक। ओ बेरि-बेरि मोछा ठाकुरक चारूकात घुमि-घुमि नृत्य कए रहल छलि। सभ डरा गेल, कदाचित ओ दबिला ओकरेपर ने चला दैक। इएह-ले ओएह-ले सभ अपन जान लए भागल। पुष्पा ओहिना रहि गेलि।

कनी कालमे पुलिसक आला अधिकारीसभ ओतए पहुँचल। मोछा ठाकुरक लासकेँ थाना लए जेबाक रहैक। एक ट्रक पुलिस आएल। चारूकात घेरि लेलक। अधिकांशक हाथमे हथियार छल। जकरा हाथमे से नहि छल से सभगोटे मोट-सोट लाठी भाँजि रहल छल। देखिते-देखिते मोछा ठाकुरक लासपर पुलिसक कब्जा भए गेलैक।

लास चल गेल ,मुदा पुष्पा एसगरे ओतहि चिकरैत-भोकरैत रहि गेलि। कतहु केओ नहि। लास चलि गेलाक बाद ओ धराम दए खसलि आओर राति भरि ओहिना रहि गेलि। भोरे लोक ओकरा तकलक। ओ ओहिना बेसुध पड़ल छलि। हमर माए सेहो उत्सुकतावश ओकरा देखए गेलीह। ओ ओकरा देखि छगुन्तामे पड़ि गेलीह। ओ तँ ओकर नैहरक छलैक। ओ पुष्पाकेँ नाम लए कैक बेर उठओलक। पुष्पा तकलकै। आँखि खोलिते हमर माएकेँ चिन्हि गेलि। ओ माएकेँ बात मानि ओकरे संगे बिदा भए गेलि। इलाकामे गर्द पड़ि गेल। हमरा ओहिठाम ओकरा देखबाक लेल के-के नहि आएल।

एहि घटनाक बाद गाममे लोक सतर्क भए गेल। केओ अपन बच्चाकेँ असगरे कतहु नहि जाए दैक। कैकटा बच्चा इसकूल गेनाइ छोड़ि देलक। हमरो संग सएह भेल। हम चौथा पास कए पाँचमामे गेले रही कि एहि आफदमे फँसि गेल रही। हमर काका हमरा कोनो हालतिमे इसकूल पठबए हेतु राजी नहि भेलाह।



६.

यदि पुष्पा नहि रहैत तँ कहि नहि हमर की गति होइत? हमरा मारि देल जाइत कि कतहु कोनोठाम बेचि देल जाइत? की होइत तकर किछु अनुमान करब कठिन अछि, कारण मोछा ठाकुर आओर ओकर संगीसभ तँ राक्षस छलहे। टाकाक आगू किछु नहि सुझाइक। मुदा की गति भेलैक? कहाँ गेलैक ओकर घमण्ड? अत्याचारक पाराकाष्ठा कए ओसभहक श्राप लेने अपनाकेँ कहाँ बचा सकल?

मोछा ठाकुर छलहो आततायी। अपन सहोदर भाएक हत्या कए देलक। ओकर जमीन-जाल सभ कब्जा कए लेलक। ततबेपर नहि ठहरल। ओकर पत्नी धरिकेँ नहि छोड़लक। ओकर एकमात्र संतान तँ की केलक तेकरा आइ धरि कोनो पता नहि लगलैक।

आखिर ओकरो अन्त भेल। मुदा कतेको गोटेक जिनगी बरबाद कए गेल। पुष्पा तँ एकटा बानगी छलि। ओकर निकटस्थ छलि ,मुदा आन-आन कतेको लोक ओकर दुष्टतासँ परेसान छल। हमहूँ ओहिमे सँ एकटा रही। पैसाक लालचमे हमर अपहरण कए

लेलक। फिरौतीक मांग जतेक फुरेलैक, ततेक बढ़ा देलक। मुदा ओही पापे तरे बरबाद भए गेल। पैसा तँ हाथ नहिए लगलैक। मुदा हमरा तबाह कए गेल। एकटा छोट-छीन बच्चा मासो काल कोठरीमे बन्द रहल। माएक एकमात्र आशाक किरण विलुप्त भए गेल छलि। सोचक छल जे ओहि माएपर की गुजरल होएत? कोनो ओ जीवित रहि गेल से आश्चर्य लगैत अछि। मुदा समय सभ शक्ति प्रदान कए दैत अछि। से नहि होइतैक तँ पाण्डव, द्रोपदीक अन्याय कोना देखिते रहि जइतथि, कोना उचित समयक प्रतीक्षा कए सकितथि। हमरो माए सएह सभ किछु-किछु सोचैत समय कटने होएत। आखिर अपन नान्हिटा संतानकेँ फेरसँ अपना लग देखि सकल। तकर सभटा श्रेय छलैक पुष्पाक। पुष्पाक इज्जति हमरे घरमे नहि अपितु परोपट्टामे होमय लगलैक। लोक ओकरा बारेमे पूछताछ करए लगलैक। ओ के अछि? कतएसँ आएलि? ओकर केओ समांग छैक की नहि? तरह-तरहक जिज्ञासा लोकमे होएब स्वाभाविक छलैक। मुदा ओकरा अखनो एतेक शक्ति नहि भेल छलैक जे किछु प्रत्युतर कए सकए।

आखिर हमर माए आगू आएलि। लोक सभहक जिज्ञासाकेँ शान्त करबाक हेतु ओ सभकेँ एकट्ठा केलक। माएक मुहेँ पुष्पाक कथा सुनि लोकसभ जतबे अबाक छल ततबे क्षुब्ध। अपना लोकक हाथे एहन अत्याचार होइत से लोक नहि सोचि सकैत छल ,मुदा सएह भेल रहैक। यर्थाथक धरातलपर अनुमान ओ तर्ककेँ कोनो महत्व नहि रहि सकलैक। लोकसभ एक स्वरसँ कहलक-

“पुष्पाक संग बहुत अन्याय भेलैक। मुदा प्रतिकार की भए सकैत छल?”

सभक ध्यान पुष्पा ओ ओकर कएल तांडवपर छलैक। हम उपेक्षित जकाँ अनुभव करए लगलहुँ। इसकूल गेनाइ बन्द भए गेल। घरमे कोनो मनोरंजनक साधन नहि छल। रहि-रहि कए मोनमे बीतल बातसभ घुमए लगैत छल। जंगल महलमे बिताओल गेल एक-एक दिन पहाड़ सन बीतैत छल। मुदा आब तँ हम ओहिठामसँ स्वतंत्र भए गेल रही। अपन घरमे रही। माए लगीचमे छलि, तथापि मोन प्रसन्न नहि छल तकर कारण स्पष्ट थिक।

हमर इसकूल छुटि गेल छल। संगी-साथीसभसँ भेँट-घाँट छुटि गेल छल। हम एकदम एसगरि पड़ि गेल रही। माएक अन्तर्मन तँ दग्ध छलहे। ओ कतेक कए सकैत? जे कए सकैत से करए, मुदा ओकर सीमान छलैक। हम कोनो बेटा तँ रही नहि, जे ओ खेलाइ-धुपाइ लेल हमरा स्वतंत्र छोड़ि दैत। फेर हमरा संगे तँ अप्रत्याशित दुर्घटनो भए गेल छल।

नान्हिटा बएसमे एतेक उठा-पटक नहि हेबाक चाही। ने हमरा मोनपर एतेक बोझ रहक चाही। मुदा ओ समय आइ-काल्हि जकाँ नहि रहैक। बच्चोक अधिकारपर समाजक प्रतिबन्ध बहुत मजगूत रहैक। हम घुरि अएलहुँ, दानवक मुहसँ बँचि अएलहुँ से हमर इसकूलमे सभकेँ बूझल रहैक। मास्टरसभ अनुमान करए जे थोड़ेक दिनमे सभ किछु सामान्य भए जाएत आओर हम फेरसँ इसकूल आबए लागब।

मास दिन जहन बीति गेल आओर हम इसकूल नहि गेलहुँ तँ एक दिन मास्टर साहेब हमरा ओहिठाम अएलाह। हुनका गाममे सभ जनैत छलनि। हुनकर घर गामसँ सटले छलनि। नाम छलनि- शशिकान्त। ओ बहुत आदर्शवादी शिक्षक छलाह। हमरा बहुत

मानैत छलाह। हुनका बूझल रहनि जे हमरा पिता नहि अछि। ताहि स्थानक पूर्ति तँ सम्भव नहि छल ,मुदा जे सम्भव छल से ओ करैत छलाह।

हमर बाबूक अभावक पूर्ति करबाक सामर्थ्य यदि ककरोमे छल तँ से हमर शिक्षासँ भए सकैत छल। से बात ओ बेरि-बेरि हमर भंगपीबा काकाकेँ कहथिन। मुदा ओहि दिन तँ अपन बात रखबाक जखने प्रयास केलाह कि हमर काका बमकि उठलाह -

"हम अपन बच्चाक भविष्य नीकसँ बुझैत छी। अहाँ के छी परामर्श देनिहार?"

मास्टर साहेब अबाक रहि गेलाह। मुदा ओहो छलाह सिद्धान्तक पक्का लोक। अपन बात स्पष्ट करैत नारी शिक्षाक महत्वपर अड़ि गेलाह। अपना ओहिठामक इतिहासक गप्प उठबैत गार्गी, भारतीसभक नाम गना गेलाह। इहो कहि गेलाह जे यदि शिक्षाक उचित अवसर देल जाए तँ बेटी ककरोसँ कोनो मामिलामे कमतर नहि रहत।

मुदा ओ समय आइ जकाँ नहि छलैक। हमर काकाकेँ शशि बाबूक बात नहि अड़घलैक। ओ चिकरि उठलाह-

"अहाँ अपन सीमानमे रहू। हमरा अपन बच्चासभहक भविष्यक स्वयं चिन्ता अछि।"

आब ओ की करितथि? मास्टर साहेब खाली हाथ इसकूल लौटि गेलाह। हमर कपारमे चौथासँ बेसी पढ़ाइ नहि लिखल छल से सएह भेल। हम फेर इसकूल नहि जा सकलहुँ। ❑

७.

फगुआक समय रहैक। गाम-घरमे साँझक फागक मधुर ध्वनि गुंजित भए रहल छल। ठाम-ठामलोक सभ डाफ, झाइल लए गबैत रहैत छल। प्रकृति सेहो संग दए रहल छलैक। पिअर टुह-टुह सरिसवसँ खेत सभ पाटल छल। हबामे मनमोहक सुगन्ध पसरि रहल छल। एहन समयक स्वागत सम्पूर्ण प्रकृति कए रहल छल। ओमहर हमर काका हमर बिआहक तैयारीमे भिड़ल छलाह। बारह वर्षक कन्याक बिआह हेतु सम्पूर्ण शक्तिसँ आतुर हमर काका एकटा सुखी-सम्पन्न वर ताकि लेने छलाह। हमर माए बहुत विरोध कएलक। हमर बएसे की रहए? मुदा ओकर किछु नहि चललैक। बिआह तय भए गेल। तकर समर्थनमे नाना तरहक तर्क हमर काका दैत रहलाह। हारि कए हमर माए बिआहक तैयारीमे लागि गेलीह।

ओहि समयमे कम बएसक कन्याक बिआह कोनो नव गप्प नहि छलैक। तेरह वर्ष तँ आदर्श मानल जाइत छल। ओहिसँ बेसी बएस भेलापर समाजमे निन्दा होइत छल। लोक-लाजक बहुत ध्यान कएल जाइत छल। बिआह की होइत छैक तकर किछु ज्ञान नहि छल। एतबा बुझाएल जे भोज-भात भए रहल छैक। उत्सवक माहौल रहैक। गाम-गामसँ लोकसभ आएल रहैक। तरह-तरहक मिठाइ, पकवानसँ घर भरल रहैक। हमरा माए खने दुलार करए, खने कानए लागए। रहि-रहि कए ओकर छाती जेना फाटए लागए। नान्हिटा बच्चा सासुर चल जाएत, से सोचि कए जेना ओकरा बकोर लागि जाइक। मुदा सत्य तँ सएह रहैक। हमर बिआहक समय आबि गेल रहैक।

साँझ होइते बरिआतीक आगमनक प्रतीक्षा होमए लागल। ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ बसक-बस बरिआती जेबाक परम्परा नहि छलैक। पाँचटा बरिआती अएलैक। तकरो बेसीए बूझल जाइक।

गीत गाइनसभक मधुर संगीतसँ सम्पूर्ण वातावरण मंत्रमुग्ध छल। बरिआतीक स्वागतमे सौंसे गामक लोक लागल छल। हमर काकाक आनन्दक कोनो सीमा नहि छल। हमर माए एहि बातसँ प्रसन्न छलि जे बर सुन्दर, सुखी-सम्पन्न ओ सज्जन व्यक्ति रहथि। एसगरे रहथि। भाए-बहिन नहि छलैक। छोट-छीन परिवार। पर्याप्त सम्पत्ति छलैक। ताहिपर सँ बर पढ़लो रहैक। आब की चाही?

बरकेँ परिछन हेतु बजाओल गेलनि। बर देखि हमर माएक छाती जुड़ा गेलैक। अतीब सुन्दर, गोर-नार, ठाढ़ नाक पैघ-पैघ आँखि, लगैक जेना कोनो देव लोकसँ आएल हो। एहि बातक ककरो ध्यान नहि रहलैक जे एहि तइस वर्षक बरक कनिआ मात्र बारह वर्षक छैक। कन्याक उज्जवल भविष्यसँ सभ आशान्वित रहथि, प्रसन्न रहथि। बिआहक विधि सभ आगू बढ़ल। ओमहर बरिआतीसभक स्वागत होइत रहल। कोनो वस्तुक कसरि नहि रहल। रहबो किएक करतैक? ड्योढ़ीक कन्याक बिआह छलैक ने।

दू दिन धरि बरिआतीक स्वागत होइत रहल। कोनो चीजक कमी नहि रहलैक। बरिआतीसभ अतिशय प्रसन्न रहथि। कनिआकेँ देखि तँ मोन गदगद भए गेलनि। अतीव सुन्दरी मुदा नेने । हमर ससुर तरह-तरहक गहना अनने छलाह। पैरसँ माथ धरि गहनासँ छाड़ि देल गेलनि। दोसर दिन सायं काल बरिआती वापस गेल। सभकेँ यथोचित बिदाइ देल गेलनि। परोपट्टामे ओहि बिआहक चर्चा

होइत रहल। सभ किछु भेल ,मुदा हमरा बिआहक एतबे ध्यानमे रहि गेल जे खूब भोज-भात भेलइ। नीक-नीक गहनासभ आएल। कपड़ा-लत्ताक तँ अम्वार लागि गेल छल। बर की होइत छैक से बुझबाक तँ लूरि नहि छल।

साँझमे बरिआती चल गेलाक बाद घरक लोकसभ निश्चिंत भेल। बरिआतीसभ पिअर-पिअर धोती पहिरने, काजर, चानन केने जेमहरे जाथि लोक टकटकी लगौने देखैत रहैत। हमर ससुर जाइत काल बहुत प्रसन्न रहथि। बहुत आशीर्वाद देलाह। ❑

८.

हमर बिआहक समाचारसँ हमर मास्टर साहेब (शशिकान्त बाबू) बहुत दुखी भेल रहथि। यद्यपि ओ किछु कए नहि सकलाह ,मुदा चुप्पो नहि बैसलाह। बेरि-बेरि हमर काकाकेँ बुझेबाक प्रयत्न केलाह। ओतबे नहि, हमरो बुझबथि। मुदा हमरा ओतेक लूरि कहाँ छल? हमर माए बेबस रहथि। ओकरा चिकड़बाक-भोकड़बाक आदति छलैक। तेँ केओ ओकर विरोधक स्वरकेँ ततेक महत्व नहि दैक।

मास्टर साहेबक अन्तर्मनमे एहि घटनाकेँ बहुत गम्भीर चोट लागल छल। ओ प्रगतिवादी विचारक प्रखर व्यक्तित्वक लोक छलाह। ओ हारि मानए हेतु तैयार नहि छलाह। ओहि दिनसँ गाम-गाम घुमि कए बेटी सभहक पक्षमे वातावरण बनाबए लगलाह। जे बेटी कहिओ इसकूल नहि गेल छल, सेहोसभ इसकूल आबए लागल। मास्टर साहेब इलाकामे चर्चित भए गेलाह। मास्टर

साहेबक प्रयास कारगर होमए लागल रहैक कि एकदिन कोनो बच्चाकेँ इसकूलमे साँप काटि लेलकैक। साँपक जहर उतारबाक बहुत प्रयास कएल गेल ,मुदा कोनो असरि नहि भेलैक। देखिते-देखितेमे ओ बच्चा मरि गेलैक। ओहि बचिआक आकस्मिक मृत्युसँ गाममे हरकम्प मचि गेल। ओकर माता-पिता तँ इसकूलपर धरना धए देलक। मास्टर साहेब की कए सकैत छलाह? इसकूलक जर्जर घरमे पता नहि कतेक विषधर नुकाएल होइक। डरे लोकसभ अपन-अपन धिआ-पुताकेँ इसकूल पठओनाइ बन्द करा देलक। इसकूलक देबालसभ जर्जर छल। भदवारिमे तँ सभ साल कोनो-ने-कोनो देबाल खसि पड़ैत छल। फेर ओकरा कहुना कए ठाढ़ कएल जाइत छल। कतेको बेर एकर सिकाइति अधिकारीसभकेँ कएल गेल ,मुदा किछु नहि भेल। ढहल-ढनमनाइत खपरासँ छारल इसकूलक भवनमे इलाकाक बच्चासभ कहुना कए पढ़ैत छल।

साँप काटि लेबाक दुर्घटनाक बाद तँ इसकूलमे पड़ाहि लागि गेलैक। इसकूल बन्द हेबाक स्थितिमे पहुँचि गेल। तीनटा शिक्षक आओर पाँचटा विद्यार्थी रहि गेल रहैक। ओहो पाँचटा विद्यार्थी नियमित नहि अबैक। असलमे लोकमे शिक्षाक प्रति आकर्षण नहि छल। बेटीक इसकूल गेनाइ तँ व्यर्थ लगैत छलैक। घरक काज केनाइ माता-पिता, भाएक सेवा केनाइ, सिलाइ-फराइ केनाइ ओकर मूल काज छल। एहि परिस्थितिमे परिवर्तन आनब आसान नहि छलैक। बेटीक बिआह भए जाइक तँ वैतरणी पार भए गेल।

मास्टर साहेब मास्टर कम, समाज सुधारक बेसी छलाह। देश गुलाम छल। तरह-तरहक प्रतिबन्धसँ समाजक प्रगति अबरुद्ध छल। जातीय संघर्ष, धार्मिक उन्माद चारूकात पसरि रहल छल।

अंग्रेजसभक कुचेष्टासँ समाज खण्ड-खण्ड बँटि गेल छल। आपसी मतभेदक हबा दए शासन करैत रहब ओकरसभक मूल उद्देश्य छल। सरकारी नौकरी करैत सामाजिक संघर्षक रुखि बदलब मास्टर साहेबकेँ कठिन भए रहल छल। फेर ओ इसकूल चलिओ नहि रहल छल। विद्यार्थी अएबे नहि करैक, क्रोटि उपाय केलाक बादो इसकूल भम्ह पड़ैत छल। उल्टे अभिभावकसभ उपराग दैत रहैत छलैक।

मास्टर साहेब घरक सुखी-सम्पन्न लोक छलाह। जीवन-यापन हेतु मास्टरीपर निर्भर नहि रहथि। गाँधीजीक उच्च विचारसँ प्रभावित रहथि। समाजमे नव चेतना आनबाक हेतु कृत संकल्प छलाह। तेँ एक दिन मास्टरीक नौकरीसँ त्यागपत्र दए पूर्णकालिक समाजसेवक बनि गेलाह।

गर्दनिमे झोरा, खादीक धोती, कुर्ता पहिरने गाम-गाम अलख जगबए लगलाह। स्वतंत्रता आन्दोलनक विहाड़ि सौंसे बहि रहल छलैक। कतेको राष्ट्रीय नेतासभ राष्ट्र चेतनाकेँ जगेबाक प्रयास करएमे लागल छलाह। मास्टरो साहेब ओहीमे तन-मन-धनसँ लागि गेलाह। ❑

९.

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे भाग लेबए मास्टर साहेब सौंसे देशक भ्रमण करए लगलाह। पैघ-पैघ नेतासभसँ परिचय भेलनि। गामपर रहबाक, ओहिठामक खेत-पथार देखबाक अवसर कमे भेटनि। देआद-बादसभ एहि अवसरक अनुचित फएदा उठाबए लागल। हुनकर जजातिक बिदति करब आम बात भए गेल छल।

मास्टरी छुटि चुकल छलनि। खेती-पथारीसँ उपजा से नहि भए रहल छल। ताहिसँ परिवार चलब समस्या भए गेल छलनि। मुदा हुनकर उत्साह कम नहि भए रहल छल। आखिर एकसँ एक राष्ट्रीय नेता सर्वस्व त्याग कए समाज सेवा कए रहल छलाह। सेसभ बात तँ ठीक रहैक ,मुदा घरक खर्चा कतएसँ चलत? ई समस्या दिन-प्रतिदिन गम्भीर भए रहल छल।

मास्टर साहेब गामसँ बाहर गेल रहथि। गामपर हुनकर परिवार छल। एक राति हुनकर घरमे डकैती भए गेल। घरक जे काजक वस्तु छल सेसभ गोट-गोट कए लुटि लेलक। गाममे ककरो हिम्मति नहि भेलैक जे कनिको विरोध करैत। आओर जे केलक से केलक मास्टर साहेबक पत्नीकेँ डाँरपर तेहन प्रहार केलक जे ओ भुजरी-भुजरी भए गेल छल। ओहि दिनसँ हुनकर पुत्र सेहो चंपत भए गेल।

प्रात भने सौंसे गामक लोक करमान लागल छल। थाना-पुलिससभ एकजुट भए गेल। मास्टर साहेबक परिवारसँ ककरा एतेक शत्रुता छलैक जे एहन बदला लेलकै? तरह-तरहक गप्पसभ दिन भरि होइत रहलैक। पुलिस आएले छल कि मास्टर साहेब सेहो घुमैत-फिरैत वापस गाम आबि गेलाह।

घरक हालति देखि मास्टर साहेब गुम्म पड़ि गेलाह। केओ किछु बाजि नहि रहल छल। ताहिसँ अन्देशा बढ़ैत गेलनि। घरमे जाइते विभत्स दृष्य देखिते धराम दए खसलाह।

एहि दुर्घटनाक बाद जे मास्टर साहेब गुम्म भेलाह से गुम्मे रहि गेलाह। कतबो प्रयास करथि परन्तु बजले नहि होनि। डाक्टरसभ नाना प्रकारसँ प्रयास केलक ,मुदा कोनो असरि नहि भेल । ओकर

बादसँ मास्टर साहेब असगर चुपचाप असोरापर बैसल रहैत छलाह।

स्वतंत्रता आनदोलनमे भाग लेबाक क्रममे कतेको नीक लोकसभसँ हुनकर सम्पर्क भेल रहनि। मुदा दुर्दिनमे केओ संग नहि देलक। असगर गुम्म-सुम्म रहलासँ हुनकर माथ खसकैत गेलनि। विचार क्रम गड़बड़ाए लगलनि। क्रमश: लोकसभकेँ चिन्हबो नहि करथि।

मास्टर साहेबक ई स्थिति देखि ग्रामीणसभ चिन्तित छलाह। मुदा समाधान किछु फुराइन नहि। डाक्टर-बैदसभ व्यर्थ भए गेल। सभ आश्चर्य करए जे एतेक व्यस्त रहए वला मास्टर साहेब केना एहेन भए गेलाह? ❑

१०.

बरिआतीसँ गाम लौटलाक बाद हमर ससुरक प्रसन्नताक अन्त नहि छल। सौंसे गामकेँ भोज देल गेल। गीत-नादसँ समस्त वातावरणमे आनन्द पसरि रहल छल। जे केओ आबैत तकरा हमर ससुर ऑंजुर भरि-भरि मधुर देने बिना बिदा नहि करितथि। आनन्दोत्वसक ई क्रम साल भरि कोनो-ने-कोनो तरहेँ चलिते रहल।

गामक लोकसभ हमर ससुरक उत्साह, प्रसन्नता देखि दंग रहथि। चतुर्थीक भारसँ हमर सौंसे दरबाजा पाटल छल। रंग-विरंगक माँछ करमान लागल छल। हमर माए तँ भारसभ देखि छगुन्तामे पड़ि गेलि। “जरूर एकर सासुर बहुत धनाढ्य अछि। एतेक भार ओहो एहन सजल-धजल सभहक वशाक बात नहि

थिक।” सभ हँसैत-बजैत छल। गाम भरि बैन परसल गेल। तखनहुँ माँछक सरबाक परिस्थिति भए गेल। अन्ततोगत्वा, बाँचल माँछ जन, बनिहारमे बाँटल गेल। केओ खाली नहि गेल। कहबी छैक जे चतुर्थीक उतारा होइत अछि कोजागरा। कोजागरामे कनिआ ओहिठामसँ वरक ओतए भार अएबाक छल। कोजागराक डाला ततेक नमहर छल जे ओकरा दस गोटे मिलिओ कए उठा नहि पाबि रहल छलाह। तरह-तरहक साँठ, तरह-तरहक मधुर, पकबान, पान, मखानसँ भरल, गज-गज करैत डाला जखन रस्ते-रस्ते आगू बढ़ैत छल तँ लोककेँ ठकबिदोर लागि जाइत छल। सभ एक दोसरसँ कानाफुसी करए लगैत छल। “कतएसँ एहन सजल-धजल डाला आबि रहल अछि? किनका ओहिठामक जाएत?” डालाक पाछू-पाछू अनगिनित संख्यामे भार आओर ओकरा उघैत भरिआसभक दृष्य देखैत बनैत छल।

एतेक भारी डाला, एतेक संख्यामे भार जखन दरबाजापर पहुँचल तँ ओकर शोभा देखैत बनैत छल। कतेक भारमे तँ ततेक सामग्री राखल छल जे भरिआसभकेँ रस्ता नापब पराभव छलैक। चारि डेग चलैत कि थाकि जाइत। ओहि समयमे आइ-काल्हि जकाँ गाड़ी- छकरा तँ रहैक नहि जे लोक सामानसभ ट्रक वा गाड़ीमे लादि कए पहुँचा दैत। ओहि समय तँ भरिआ ओ भारक चला-चलती छलैक। जतेक भार गेल, ततेक सोहनगर गप्प।

भारसभ तँ पहुँचि गेल ,मुदा समस्या रहैक जे एतेक सामग्रीक हेतैक की? खएबाक सामग्री जेना मधुर, केरा, दही, माँछ तँ टीकैत नहि। घरमे कतेक खर्च होएत? अपन दिआदसभकेँ तँ सबजाना नोते छलनि। तखन कएल की जाए? माँछक बड़का-बड़का मूरा,

ओ खोरक-खोर दही नष्ट नहि भए जाए ताहि हेतु सौंसे गाममे घरे-घर बैन परसल गेल। नौकर-चाकर, जन-बनिहार सभहक घर माँछ-मधुरसँ भरि गेलैक।

इलाकाक प्रसिद्ध नटुआ गीत गोविन्द गाबि कए लोकक मनोरंजन करथि।

"धीर समीरे यमुना तीरे बसति बने बनमाली... ।"

लोकसभ प्रसन्न भए नटुआक ऊपर टाकाक वर्षा कए देथि। कैक दिन धरि चलए वला एहि नृत्य कार्यक्रममे के-के नहि अएलाह।

द्विरागमनक हेतु कोनो जल्दी नहि रहैक। ओहि समयमे तीन साल, पाँचो सालक बाद द्विरागमन होइक। मुदा हमर सासु अड़ि गेलखिन। साल भरिक भीतरे द्विरागमन भए गेल। सोचल जा सकैत अछि जे ओतेक कम बएससँ सासुर बसब केहन भेल होएत। हमर माए बहुत परेसान रहथि। हम तँ कनैत-कनैत धरती-आकाश एक कए देलिऐक। हमर काका सेहो बहुत कानल रहथि। द्विरागमनक दिन मानएमे आनाकानी केलखिन ,मुदा हमर ससुर अड़ि गेलथि।

एतेक कम बएसमे कनिआ बनि सासुरमे रहब कठिन भए सकैत छलैक। मुदा हमर सासु बहुत नीक रहथिन। अपन बेटी जकाँ दिन-राति हमर देखभाल करथिन। मानदान तँ ततेक होइत छल जे थोड़बे दिनमे नैहर बिसरा गेल। सासुरमे एतेक सम्मान होइत छल जे हमरा नैहर जेबाक इच्छा नहि भेल। मुदा कहिओ काल माए मोन पड़ि जाइत तँ कानए लागी आ कि हमर ससुर, सासुकेँ होनि जे कोना मनाबी, की कए दी। ❑

११.

एक दिन अहल भोरे सौंसे गाममे हाक पड़ि रहल छल। भेलैक ई जे मास्टर साहेब अपन घरसँ निपत्ता भए गेल छलाह। काल्हि साँझ धरि तँ कैकगोटा हुनका ठामहि देखने रहनि। मुदा राता-राती की भेल? ककरा एहन शत्रुता भए गेल जे विपत्तिसँ आहत, बौक भेल ओहि व्यक्तिकेँ ओहू हालमे नहि छोड़ि सकल।

मास्टर साहेबक अपन के छलैक? जेहो छलैक सेहो कात भए गेल। जाहि व्यक्तिक सामर्थ्यपर विपत्तिक ग्रहण लागि गेल हो तकर संग के पुरत आओर कथी लेल? थाना-पुलिसमे के जाइत? ओहिना मास्टर साहेबक नाम आन्दोलनकारीसभक संगे सुमार होइत छल। कतेको तरहक फसादमे हुनकर नाम जाने-अनजाने अबैत रहैत छल। तेहन व्यक्ति हेतु अंग्रेजक पोसल पुलिस किएक किछु करितैक।

असलमे मास्टरक माथा हिल गेल रहैक। ओ पूर्णकालिक बताह भए गेल रहथि। ई कोनो एकाएक भेलैक से बात नहि। क्रमश: होइत एहि परिवर्तनकेँ केओ बुझि नहि सकलैक आओर एक दिन जखन ओ प्रचण्ड बताह भए गाम छोड़ि कतहुँ चलि गेलाह तँ लोकक चर्चाक विषय भए गेलैक। चर्चेटा, केओ किछु केलक नहि। मास्टर साहेबक ओहिठाम भेल डकैतीमे, आओर तकर विरोध केलापर परिवारक सदस्यक हत्यामे मोछा ठाकुर गिरोहक हाथ छल। मोछा ठाकुर भने मरि गेल छल वा मारि देल गेल छल ,मुदा ओकर गिरोह अखनहुँ सक्रिय छल। तूँ डारि-डारि, हम पात-पात से कहब छल डकैतक ओहि गिरोहक। फिरंगीसभ थाकि गेल, किछु नहि कए सकल।

असलमे डकैत बनबाक कारखाना छल ओहिठामक समाज। लोकमे बढ़ैत गरीबी, सामाजिक उत्पीड़न, समाजक सम्पन्न लोकक अत्याचारक प्रतिकार करबामे असमर्थ लोकसभ कतेको बेर एहि रस्ताकेँ अपनबैत छल आओर सदा-सर्वदाक हेतु समाजक मुख्यधारासँ कटि जाइत छल।

एक हिसाबे शासन तंत्र मजगूत भेल शोषक तत्वक संवर्धक बनि कए रहि गेल छल। गाम-घरमे कतेको लोक नर्कक जिनगी जीबैत छल। जखन सेहो सम्भव नहि होइत छल, दिन भरि खटि कए साँझमे बिना बोनि लेने एक छिट्टा गारि-मारि संगे घर धरि धिआ-पुता आओर पत्नीकेँ सहैत देखैत छल, तँ सोचल जाए सकैत अछि जे ओकरा मोनमे की-की होइत रहल होएत? कहक माने जे सामाजिक अन्तर्विरोध प्रतिकारक एकटा अभिव्यक्ति छल डकैती। एकरा पाछू आर्थिक विषमता मूल कारण छल। भए सकैए जे मोछा ठाकुरक गिरोहक लोकसभक एही तरहक समस्या रहल हो। मुदा छल ओसभ देशभक्त। ओहिमे सँ किछु गोटे स्वतंत्रता आन्दोलनसँ रूचि रखैत छल। गाहे-बगाहे जनाधार पार्टीक समर्थकसभक विचारसँ अवगत होइत रहैत छल। मुदा ओकरासभकेँ ओ रस्ता पसिंद नहि छलैक। ओकरा क्रान्तिकारी युवकसभसँ मेल खाइत छलैक।

ओकरसभक सोच रहैक जे जखन अंग्रेज बलपूर्वक शासन कए रहल अछि तखन ओकरा बलपूर्वक विरोध करब कतहुसँ गलत नहि कहल जा सकैत अछि। सेसभ तँ अपना जगहपर जे रहैक से रहैक ,मुदा कतेको बेर निर्दोष आदमी सेहो ओकरसभक चपेटमे आबि जाइत छल। ओएह हाल भेल रहैक पुष्पाक।

पुष्पाक पाछू डकैतक गिरोह एहि लेल पड़ि गेल रहैक जे ओ मोछा ठाकुरक खिलाफ मुखबिरी केने रहैक। ओकरासभक मोछा ठाकुरक प्रति बहुत सम्मान रहैक। मोछा ठाकुर ओकरसभक एक हिसाबे मार्ग दर्शक रहैक, सरगना तँ रहबे करैक। ❑

१२.

मोछा ठाकुरक गिरोह हाथ धो कए पुष्पाक पाछू पड़ल छल। ओकरासभकेँ पता लागल रहैक जे पुष्पा मास्टर साहेबक ओहिठाम अछि, तेँ हुनका ओहिठाम ओसभ चोट केने छल। परिणाम तँ बूझले अछि।

पुष्पा अपने अपसिआँत छलि। ओकर बेटाक कोनो अता-पता नहि रहैक। मोछा ठाकुर सभटा पैतृक सम्पत्ति हरपि लेने रहैक। यद्यपि आब ओ जीवित नहि छल, मुदा ओकर गिरोहक डर तँ छलहे। तेँ केओ पुष्पाक संगे ठाढ़ होमए हेतु तैयार नहि छल।

पुष्पा गाहे-बगाहे अपन गाम गेबो केली। मुदा ओहिठामक हालति देखि रहि नहि सकलीह। किछु गोटेकेँ हुनकासँ सहानुभूति रहैक। मुदा ओहोसभ डरे चुप्पे रहि गेल। पुष्पा वापस हमरा ओहिठाम आबि गेलीह।

पुष्पा अपन सम्पत्ति वापस प्राप्त करबाक हेतु चिन्तित रहैत छलि। मुदा ओहूसँ बेसी चिन्ता ओकरा अपन एकमात्र बेटाक छलैक जकर कोनो अता-पता नहि चलि सकलैक। जीवितो छैक की नहि, सेहो नहि पता। पुष्पाकेँ विश्वास रहैक जे ओकर बेटा सलामत छैक। कतए छैक, कोना छैक, की करैत छैक, से तँ नहि जनैत रहैक ,मुदा माएक हृदय बेरि-बेरि कहि उठैत जे ओ जीवैत

छैक। से सोचि कए ओ आओर अहुरिआ काटए लगैत छलि। करवनो अपनापर, करवनो भाग्यपर तामस होइत छलैक। समाधान किछु फुराइत नहि छलैक। ओकरा एहि बातक सन्तोष छलैक जे मोछा ठाकुरक ठेकान लागि गेलैक। एहि बातक ओकरा कनिको पश्चाताप नहि रहैक जे ओ मोछा ठाकुरक लास देखि केना ताण्डव केने छलि। अपितु, ओकर हृदयमे तेहन धधरा अरवनो उठैत छलैक जे गामक गाम सुड्डाह भए जाइत। ओकर ऑंखिक प्रचण्ड ज्वाला केओ देखि नहि पबैत छलैक। ओकर अन्तर्मनक अशान्ति समुद्र जकाँ अथाह छलैक ,मुदा कहिओ ने कहिओ ज्वार भाटा तँ अएनहि छलैक, से अएलैक।

ओहि दिन दुपहरिआमे पुष्पा असगरे असोरापर बैसलि छलि। एकाएक जेना ओकरा घुरमा उठलैक। ओ भागए लागलि। कतबो केओ प्रयास केलकैक, ओ नहि रुकलि । ओ ततेक बेगसँ आगू बढ़लि जे ककरो हाक देबाक धरि हिम्मति नहि भेलैक। पुष्पा भगैत गेलि, अविराम।

बाप रे बाप! ई के छैक? एना किएक दौड़ि रहल अछि? जैह देखलक से देखिते रहि गेल। अबाक, शून्य भेल देखैत रहि गेल। भगैत-भगैत एकटा पूलपर जा कए जोर-जोरसँ अट्टहास करए। पगला मास्टरकेँ पुलपर गाँधी टोपी पहिरने देखिते चिचिआ उठल-

“फेक एहि टोपीकेँ! एहिसँ किछु नहि हेतौक। पकड़ ई दबिला...।“पता नहि की-की चिकरैत रहल। असगरि हाथमे दबिला लेने ओ मास्टर दिस बढ़लि।

“हे भगवान! आब की होएत? की भए गेलैक एहि बुढ़िआकेँ

केहन बढ़िऑ संच-मंच रहैत छलैक। आइ तँ ककरो चिन्हओ नहि रहल छैक।"

अबैत-जाइत लोक बजैक। जा धरि ओ पूलपर ठाढ़ि रहलि, लोक ओ रस्ता छोड़ि कात भए गेल। छगुन्तासँ देखैत रहल। पूलक ओहि छोरपर पागल भेल मास्टर आओर ओहि छोरपर दबिला लेने पुष्पा।

कहीं पुष्पा मास्टरक हत्या नहि कए दैक। कहीं मास्टर आत्म रक्षार्थ पुष्पाक दबिला ओकरेपर ने चला दैक। लोकसभ बेचैन छल,मुदा किछु कए नहि पाबि रहल छल।

पुष्पाक रक्त रंजित नेत्रमे मुण्डसँ आच्दादित कालीक दर्शन होइत छल। पुष्पा आगू बढ़ल जा रहल छलि। मास्टर एकटक ओकरा देखैत रहल। ओकरा भेलैक जेना असुर भयाञुनि समस्त दुष्टक संहार कए मुण्डमाल धारण केने ओहिठाम सद्यः उपस्थित भए गेल छथि।

मास्टरक आवेग देखैत बनैत छल। ओ वायुवेगसँ दौड़ल। पुष्पाक आगू धराम दए दण्डवत खसि पड़ल। आओर करवद्ध प्रार्थना करैत रहल-

"या देवी सर्वभूतेषू शान्ति रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥"

एहि दृष्यकेँ केओ देखलक, केओ नहि देखलक। जे नहि देखलक सेसभ की-की नहि सुनलक। जे देखलक से की-की नहि बाजल। केओ कहैक साक्षात् काली असबार भए गेल छथि। केओ कहैक जे ओ निठ्ठाह बताहि भए गेल अछि। जतेक मनुक्खक, ततेक रंगक गप्प।

पुष्पा मास्टरकेँ धाराशायी देखैत जेना विचारमग्न भए गेलि। फेर जोरसँ अट्ठाहास करए लागलि-

"तूँ के छह? टोपी वला एहन भाभट किएक धेने छैं? अपन असली रूपमे आबिजो नहि तँ चला देबौ दबिला।"

ओ वास्तवमे दबिला आगू बढ़ौने छलि कि घोड़ापर असबार एकटा युवक ओकर हाथ पकड़ि लेलकैक। ओहि घुड़सबारक पाछू-पाछू पाँचटा आओर घुड़सबार चलि रहल छल। ओसभ अत्यन्त मजगूत छल। सभगोटे अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित छल। बीच-बीचमे "बन्दे मातरम्" केर जयघोष करैत आगू बढ़ि रहल छल कि पुलक बीचमे एहन दुर्दान्त दृष्य देखि ठमकि गेल। पुष्पाक हाथ संधानसँ पकड़ि ओ घुड़सबार घोड़ासँ उतरि गेल। पुष्पा ओकरा देखिते चिकरि उठलैक-

"के?"

"हम छी राजकुमार, तोहर बेटा!"

"नहि, नहि तूँ राजकुमार नहि छैं। केओ छली हमर बेटाक नाम लए हमरा धोखा देबए चाहैत छैं।"

कतबो राजकुमार बुझाबक प्रयास करैक ओ मानए हेतु तैयार नहि छल। कतेको दिनसँ अपन बेटाक प्रतीक्षामे छलि आओर आइ जखन ओ सद्यः अकस्मात ओकरा सम्मुख ठाढ़ छैक तँ पुष्पाक मति-गति सभ हरा गेल अछि। मुदा राजकुमार अपन माएकेँ चिन्हि गेलैक। अनमन ओकरे सन माएक मुँह छलैक। ओ माएकेँ गोहरबैत रहल। पुष्पा किन्नहुँ मानबाक हेतु तैयार नहि छलैक। ओकर आँखि अखनहुँ रक्त रंजित छलैक। हाथमे दबिला ओहिना

छलैक, मुदा पैर ठमकि गेल छलैक। प्राय: अन्तर्मनसँ कोनो घ्वनि ओकरा सुनाइत छलैक-

"ई तँ हमरे बेटा अछि।"

माएक ई दशा देखि राजकुमार के तँ जेना बज्र खसि पड़लैक। ओना, ओकरा कोनो उम्मीद नहि रहैक जे ओकर माए जीवित होएत। ओकरा अपनो जीवित रहबाक कोनो सम्भावना नहि रहैक ,मुदा कहबी छैक जे मारए- वलासँ जियाबए- वलाक हाथ बेसी नमगर होइत छैक।

गामसँ अपहरण कए लए जाइत काल मोछा ठाकुर ओकरा बीचमे पड़ैत धारमे धकलि देलकैक। अन्हार गुज्ज रातिमे उफनैत धारक प्रवाहमे ओ भसिआइत-भसिआइत काशी पहुँचि गेल। ओहिठाम मलाहसभ महाजाल फेकने छल। ओहि महाजालमे ओ फँसि गेल। मलाहसभकेँ बहुत पैघ माँछकेँ फँसि जेबाक ततेक प्रसन्नता छलैक जे ओसभ धराधर जाल खींचए लागल। मुदा जखन ओहि महाजालमे पाँच हाथक बेहोस मनुक्ख भेटलैक तँ ओसभ गुम्म रहि गेल। केओ कहैक जे मुरदा छैक, फेरसँ दहा दही।

मुदा एकटा बूढ़बा मलाह डाक्टर बजा अनलकैक। डाक्टर ध्यानसँ देखलक तँ साँस चलैत बुझेलैक। ओ राजकुमारकेँ तुरंत अस्पताल लए भागल। धन्य कही ओकर प्रयासकेँ आओर राजकुमारक भाग्यकेँ। तीन दिनक बाद ओ आँखि खोललकैक। आगू-पाछू केओ ओकर देखनिहार नहि छल। दस दिन इलाजक बाद ओकर जान तँ बाँचि गेलैक,मुदा समस्या छल जे आब ओ जाए तँ कतए?

संयोगवश अस्पतालमे एकटा क्रान्तिकारी गुटक युवकक

इलाज चलि रहल छल। ओकर शायिका लगीचेमे छल। इलाजक क्रममे ओकरा राजकुमारक स्थितिक जानकारी भेलैक। ओ एहि बातक चर्च अपन संगीसभसँ केलक। सभगोटे ई निर्णय केलक जे राजकुमारकेँ अपने संगे लेने चली।

दोसर दिन भेने राजकुमार आओर ओकर अस्पतालक पड़ोसी संगे संग अस्पतालसँ छुट्टी पाबि अज्ञात स्थान दिस बिदा भए गेल। राजकुमार लग कोनो दोसर विकल्पो नहि रहैक। ❑

१३.

एमहर हमर ससुर अपन एक मात्र संतानक बिआह, कोजगराक बाद दुरागमनक प्रतीक्षामे नित्य महादेवकेँ गोहरबैत रहैत छलाह। हमर सासुक स्थिति तँ आओर खराप छलनि। एक-एक दिन गनि रहल छलीह। एहि बातक किछु संज्ञान नहि रहलनि जे हम मात्र बारह वर्षक छलहुँ। "एतेक छोट नेनाकेँ माएक कोरसँ फराक करब अन्याय होएत। ओतबे नहि, हमर माए एकदम एसगरि भए जाएत।"

सभ अपन-अपन समस्यासँ परेसान छल। ककर के सुनत? हमर सासुकेँ सेहो केओ दोसर नहि छलनि। पुतहु आबि जएबाक उम्मीदमे कतेको दिनसँ जीबि रहल छलीह।

आखिर ओ समय आबिए गेल। हमर ससुर हमर नैहरमे हठ कए देलखिन। हमर काका बड़ कानलथि । ओ कि कनलाह, कानल तँ हमर माए। एक मात्र संतानक वियोगक अवश्यभावी आशङ्कासँ क्षत-विक्षत अन्तर्मन हाकरोस पाड़ि रहल छल। करवनहुँ

कानए, करवनहुँ चिकरए, भोकरए। हमर ससुर अड़ि गेल छलाह। ओहिसँ पूर्व दू बेर दिन फेरा गेल छल।

भोरसँ साँझ-धरि कन्नारोहटि होइत रहैत। जखन करवनो खाएक अबैत, तखन कनबाक नवीन श्रृंखला प्रारम्भ होइत। माएक हाल बेहाल छल। ओकर जन्म तँ जेना कानए हेतु भेल रहैक। जखने भरल जबानीमे हमर पिता गुजरि गेलखिन तखने ओकर सर्वस्व चलि गेलैक। सुखक छाँहो कतहुसँ नहि रहि गेलैक।

हमर जन्मसँ जे कनेक आशा जगओलक सेहो आब हटि रहल छल। उपायो की छल? आखरि बेटी भए जन्म लेने छलिऐक। यदि भागक तेजगर रहैत तँ हम बेटा भए आएल रहितहुँ। ओतेकटा राज-काजक मालिक होइतहुँ, माता-पिताक वंशक रक्षा कए सकितहुँ। मुदा एहिमे हमर की दोष?

भगवानो मानव निर्मित एहि देबालकेँ नहि तोड़ि सकैत छलाह। जनमिते दू रंगक दुनिआ, दू रंगक रेबाज, दू रंगक कानून। आश्चर्य ई जे ओसभ अन्याय देखितहुँ चुप रहैत छथि। सभ किछु जनितहुँ अपरिचित बनल रहैत छथि। द्विरागमन हेबाक छलैक से भए गेल। ओहि समय हम तेरह वर्षक बच्चा रही। बेसी चीज बुझबे नहि कएलिऐक। नैहरसँ सासुर पहुँचि गेलहुँ। हमर सासुक आनन्दक तँ अन्ते नहि छलनि । गाम-गाम बैन बँटैत रहि गेलीह। केओ खाली हाथ नहि गेल। गीत-नादसँ तँ समस्त वातावरण कतेको दिन धरि आनन्दक वर्षा करैत रहल।

हमरा सासुरमे ततेक मान-दान भेल, सासु ततेक ध्यान राखए लगलीह जेसभ बिसरा गेल। करवनो काल कए माएक उचाट जखन आबए, तँ कनाइत जरूर। से सुनि हमर ससुर हंगामा ठाढ़ कए

देथि।

“कोनो कष्ट नहि होनि हिनका।”

सासु, ससुरक एहन सिनेह भगवानसभकेँ देथु।

मुदा हमर नैहर तँ हरा गेल छल। माएसँ भेँट होएब दुर्लभ भए गेल छल। अपन इसकूलक संगीसभ मोन पड़ैत रहैत छल। एक दिन हमर नैहरसँ खबासिन आएलि । हमर माएकेँ बहुत मोन पड़ैत छलिऐक, तेँ जिज्ञासा हेतु, पठओलकैक । खबासिनीसँ बहुत रास बातसभ पता लागल। इहो बुझलिऐक जे इसकूल खसि पड़लैक, जे मास्टर पागल भए गेलैक। आओर-आओर कतेको समाचारसभ भेटल। ❑

१४.

मास्टर साहेबक समाचार सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेल रही। रहि-रहि कए खबासिनीसँ हुनका बारेमे प्रश्न करैत रहलिऐक। मुदा किछु समीचीन उत्तर नहि भेटए। आखिर एहन सोझराएल सरल आओर समाजिक लोकक ई स्थिति कोना भेल?

पुष्पा कोना दहाड़ि कए मास्टरक गाँधी टोपी खसओलक, कोना मास्टर ओकर पैरपर खसि पड़ल से सुनि तँ छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। ईसभ तँ कोनो खिस्सासँ बेसी चोटगर लगैत छल। जाबे ओ खबासिनी रहल हम ओकरा एहि बातसभकेँ खोद-बेद करैत रहलहुँ।

खबासिनी वापस गाम आएलि। गामक रस्तेमे मास्टर देखा गेलैक। नंग धरंग, आधा धोती ओढ़ने, आधा पहिरने। कखनहुँ उजरा टोपी माथपर, कखनहुँ जमीनपर। बानर वला हाल भए गेल

रहनि। ताहिपर सँ रहि-रहि कए भाषण करए लागथि।

महात्मा गाँधी, तिलक, गोखले ककर- ककर नाम लए जोर-जोरसँ भाषण करैत रहैत छलाह। जेना सौंसे स्वतंत्रता आन्दोलनक छार-भार हुनके माथपर होनि । महात्मा गांधीक नाम लए ओ कैक बेर उत्तेजित भए जाइत छलाह। हुनकर भाषण सुनि केओ छगुन्तामे पड़ि जाइत। कतहुसँ कोनो दुबिधा नहि बुझाइक। लगैक जेना ककरो आत्मा हुनकामे घुसिआ गेल छनि । कनीकाल भाषण देलाक बाद फेर ओएह ताल-पैतरा शुरू कए दितथि। एक दिन तँ दौड़ल-दौड़ल इसकूलक खसल टाटसभकेँ सोझ करए लगलाह। हाथमे छड़ी लए जोर-जोरसँ चटिआसभपर बिगड़ए लगलाह-

“पढ़बे करोगे कि मरबो करोगे।”

मुदा ने ओतए कोनो चटिआ छल आओर ने केओ मास्टर।

“निट्ठाह बता भए गेलाह।”

सभ सएह कहैत आगू बढ़ि जाइत।

ओहि दिन इसकूलक सामनेक मैदानमे स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल जनाधार पार्टीक नेताक आगमन रहैक। ध्वनिविस्तारकसँ गाम-गाम लोकसभकेँ बैसारमे अएबाक हकार देल गेल। चारि बजेसँ बैसार रहैक। स्वतंत्रताक हेतु लोकक मोन छटपट करैत छल। तेँ लोकक करमान लागि गेल। बैसार शुरू हेबाक छल। जनाधार पार्टीक टोपीधारी नेतासभ आबि चुकल छल। “बन्दे मातरम्” केर नारा लागि रहल छल। सम्पूर्ण वातावरण देश भक्तिक गीतसँ ओत-प्रोत भए गेल छल।

एतबेमे मास्टर एकटा छोटसन माइक हाथमे लेने जोर-जोरसँ बाजए लगलाह -

"जनाधार पार्टी मात्र ढोंगीक जमावरा अछि। समाजमे चारूकात अन्याय पसरल अछि। स्त्री समाज अधिकार हीन भए नाना प्रकारसँ शोषित भए रहल अछि। की होएत एहेन स्वतंत्रता लए कए, जतए आधा आबादी अशिक्षित, अधिकारहीन भए सदिखन अपन अधिकारक हेतु लड़ैत रहितहुँ अनाथ रहैत अछि?"

जनाधार पार्टीक नेतासभ ओहि विक्षिप्त व्यक्तिक भाषण सुनि गुम्म पड़ि गेलाह। लोकसभकेँ ठकविदरो लागि गेलैक। आपसमे कानाफूसी प्रारम्भ भए गेल।

"ई किन्नहुँ बताह नहि अछि।"

मास्टर जे माइक पकड़लाह से पकड़ने रहि गेलाह ,चुप्प हेबाक नामे ने लेथि। बैसारक आयोजकसभक सभ प्रयास व्यर्थ साबित भए रहल छल। मास्टर अड़ि गेल छलाह जे जाधरि इसकूल फेरसँ नहि बनत ओ चुप नहि हेताह, किन्नहुँ बैसार नहि होमए देताह।

एतबहिमे चारिटा मुस्टंड कतहुँसँ आएल। सभ मोछ पिजा रहल छल। "जनाधार पार्टीक जय"क नारा संग आगू बढ़ल आओर मास्टरक माइक छीनि लेलक। केओ हुनकर नरेठी पकड़लक तँ केओ ठामहि उठा कए लए भागल। बैसार चलि पड़ल। क्रान्तिकारीसभक अपन सोच छलैक। ओसभ प्रगतिशील मंचक नामसँ काज करैत छल। ओकरसभक कहब छलैक जे स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी अछि सामाजिक परिवर्तन। ओसभ कहैत छल जे राजनीतिक स्वतंत्रता यदि भेटिओ गेल, तैओ गरीब, महिला ओ अन्य शोषित वर्गक उद्धार ताधरि नहि होएत, जाबे शोषक व्यक्ति समूल नाश नहि होएत, ताहि हेतु चाहे भले किछु अनट करए

पड़ैक। तकर पाछू ओकरसभक अपन सोच छलैक। आखिर राजनीतिक सत्ता अपन वर्चस्वक स्थापना हेतु बलप्रयोगक तँ करिते अछि। सही की से तँ भविष्यक बात रहैक ,मुदा ओकरो समर्थक छलैक। युवक पुरुष ओ स्त्रीसभ ओकर संग छल। फिरंगीसभ हाथ धो कए ओकरसभक पाछू पड़ल रहैत छलैक।

क्रान्तिकारी कही, प्रगतिशील मंचक कार्यकर्ता कही, ओसभ अपन उद्देश्यक हेतु किछु करबाक हेतु कृत संकल्प छल। दिन-राति गबैत रहैत छल-

“सरफरोशी की तमन्ना, आज मेरे दिलमे है।

देखना है जोर कितना बाजुए कातिलमे है।”

जनाधार पार्टीक लठैतसभ मास्टरकेँ उठा-पुठा कए कात केनहि छल कि बैसार स्थलपर घोड़ापर चढ़ल दन-दन करैत प्रगतिशील मंचक युवक लोकनि हबाइ फाइरींग करैत पता नहि कतएसँ टपकि पड़ल। बैसारमे पड़ाहि लागि गेल। कनीकालमे पूरा मैदान खाली छल। सैंकड़ोक चप्पल, जुता, यत्र-तत्र खसल छल।

प्रगतिशील मंचक युवक आगू बढ़ल। जनाधार पार्टीक मंचासीन नेतासभकेँ चुनौती दैत फेर हबाइ फाइरींग केलक। नेतासभ इएह-ले ओएह-ले जान लए लए भागल। मुस्टंडसभक हालति तँ कहए जोगर नहि रहि गेल छल। किछु टाकाक चक्करमे ओसभ अपन आत्माकेँ बेचि चुकल छल।

प्रगतिशील मंचक युवकमे एकटा छल राजकुमार जे किछु दिन अपन विक्षिप्त माएकेँ पुलपर सँ लए भागल छल। आइ मास्टर साहेबकेँ ओही हालमे देखि ओकरा नहि रहल गेलैक। ओ चिकरि उठल। ततेक जोरसँ चिकड़ल जे लगलैक कोनो बम बिस्फोट भए

गेल होइक। ओ मोचण्डसभ जान लए भागल से घुरि नहि तकलक। राजकुमार मास्टर साहेबकेँ घोड़ापर बैसओलक आओर अपन संगीसभक संगे आगू बढ़ि गेल।

ओहि दिनक घटनाक चर्चा कतेको दिन धरि परोपट्टामे होइत रहलैक। केओ कहैक जे जनाधार पार्टीक विचार सही अछि तँ केओ 'प्रगतिशील मंच'क समर्थक भए जाइक। कुल मिला कए एकटा जबरदस्त वैचारिक संघर्षक वातावरण बनि गेल छल।

प्रगतिशील मंचमे आधासँ बेसी महिलासभ छलैक। कतहु-ने-कतहु कोनो अन्यायक प्रतिकार नहि हेबाक कारणेँ विद्रोही स्वभावक भए गेल छलैक। अधिकांश महिला गरीब परिवेशसँ अबैत छलि ,मुदा सम्पन्न परिवारक लोक सेहो छलीह। एकटा महिला तँ श्मसान घाटसँ प्राण बचा भागल रहैक। समाजक अत्याचारक पराकाष्ठा तँ तखन भए गेलैक जखन ओकरा जबरदस्ती ओ अनिक्षापूर्वक सती करबाक हेतु श्मसान घाट धरि पहुँचा अएलैक। मुदा की ने की भेलैक जे ओ जान-बेजान भगलैक। से तेहन भगलैक जे घुरि नहि तकलकैक। एहन जान-बेजान भगैत महिलाकेँ केओ प्रगतिशील मंचक कार्यकर्ता देखलकैक। ओकरा मंचक डेरापर लए अनलकैक। बचि गेलै। सम्भवत: ओकरा जीनाइ छलैक। मुदा कतेको लोक सतीक नामपर जीविते डाहि देल गेल। जेकरा संगे से नहि भेलैक ओहो जीवन भरि वैधव्यक पीड़ा सहैत रहली। नाना प्रकारक यातना, अपमान सहैत चल गेलीह। यद्यपिसभ पुरुष कोनो-ने-कोनो स्त्रीक कोखसँ जनमैत अछि, तथापि ओकर आस्तित्वपर ग्रहण लागल रहैत अछि।

एहिसभ तरहक अन्यायक सामाजिक प्रतिकार करए चाहैत

छल प्रगतिशील मंच। मुदासभसँ बड़का समस्या रहैक अर्थक व्यवस्था। ताहि हेतु ओकरासभकेँ कैक बेर गैरकानूनी तरीका अपनाबए पड़लनि । ओही क्रममे ओकरासभक भेँट-घाँट समाजकक प्रगतिशील लोकसभसँ होइक मुदा प्रगतिशील मंचक सोचसँ कमे लोक सहमत होइक तथापि जानक डरे किछु-ने-किछु चन्दा दए दैक। ❑

१५.

साल भरिक बाद हमर बिदागरी भेल। नैहरमे माए हमरा देखिते कानए लागलि । हुनकर कानब सुनि कए सौंसे गामक स्त्रीगणसभ जमा भए गेलैक। हमरो बहुत कनाए लागल। लोकसभ ओकरा बुझओलक। कन्ना-रोहटि बन्द भेलाक बाद हमर हाल-चाल पुछए लागलि। सासुरमे हमरासभ तरहेँ सुख छल से जानि माएकेँ बहुत प्रसन्नता भेलैक। लोकसभमे बैन बाँटल गेल।

हम अपन संगीसभक हाल-चाल पुछलिऐक। माएसभकेँ समाद देलकैक। बेरा-बेरीसभ आबि कए हमर भेँट कए गेल। मुदा मास्टर साहेबक किछु समाचार नहि भेटए। सभ एतबे कहलक जे ओ बताह भए गेल छथि। आब कतए छथि, कोन हालमे छथि से निजगुत बात केओ नहि कहि सकल।

पुष्पाक समाचार सेहो ओतबे बुझलिऐक जे ओ आब एहिठामसँ पता नहि कतए चल गेल। ओकर उग्र व्यवहारक चर्चा सेहो लोक केलक मुदा फिलहाल कोन ठाम अछि, ओकर की हाल छैक, से केओ नहि कहि सकल।

अपन गाम अपने होइत छैक। ओहिठामक लोक-वेद, खेत-पथार, पोखरि-इनारसभसँ अपनत्व भए जाइत छैक। ताहिसभकेँ एकाएक छोड़ि बेटी सासुर जा बसैत अछि। छैक ने मार्मिक बात? हमर तँ बाते अलग रहैक। नान्हिटा बच्चाक बिआह कए हमर काका निश्चिंत भए गेलाह। मुदा हमर नेनपन तँ हरा गेल। नैहरसँ सासुरक रस्तामे हम स्वयं किछु आओर भए गेल रही। बएस तँ ततबे रहए जे माएक आँचरसँ बाहर भए दरबाजा धरि जा सकितहुँ, खेलितहुँ, धूपितहुँ। मुदा भाग्य नियंताकेँ से मंजूरो होइक तखन ने? साल भरिक बाद नैहर आएल रही। अपन संगी, साथीसभ एक-एक कए भेँट भेल। तरह-तरहक खिस्सा पिहानीसभ सुनैत-सुनैत दिन बीति जाइक। साँझ होइते माए घर लए आनथि। दिन भरि जतेक घुमि सकी, जतेक गोटेसँ भेँट भए सकए से करी। ताहिमे कोनो अवरोध नहि।

एक दिन सभ बच्चा संगोर कए इसकूल पहुँचलहुँ। टूटल, ढनमनाएल माटिक देबालसभ अवशेष पड़ल छल। एकटा विद्यार्थी नहि छल। केओ मास्टर नहि। हमरसभक प्रिय मास्टर तँ बताहे भए गेल रहथि। हम बच्चा रही, मुदा अखियास अपन बएसक संगतुरिआसभसँ बहुत बेसी छल। अपने बएसक पितिऔतसभकेँ इसकूल जाइत देखिऐक, खेलैत देखिऐक, अपने आपमे ग्लानि होमए लागैत। भगवानकेँ मोने-मोन उपराग देबए लगिअनि-

“हे विधाता! हमर कोन गलती। अहाँ हमरा पुरुष बनबितहुँ तँ आइ हम अपन माए, पिताक उत्तराधिकारी रहितहुँ। अपन घर-घराड़ी, खेत-पथारसभक रक्षा कए सकितहुँ। मात्र बेटी हेबाक चलते हमरसभ किछु स्वाहा भए गेल। हाथ मलिते रहि गेल हमर

माए। देआद-बाद सभटा लुटि लेलक।"

बात एतबेपर नहि ठहरल। आगू कोनो परेसानी नहि होइक, तेँ जल्दीसँ बिआह-दान कए निश्चिन्त भए गेलि। बाह रे समाज। केहन-केहन कानून बना लेलक। अपने लोक जखन शत्रु भए जाइछ तँ रक्षा के करत? सएहसभ सोचैत रही कि हमर संगीसभ आबि गेलि आओर हम खेल-धूपमे लागि गेलहुँ।

बहुत दिनक बाद एतेक रास बच्चासभक संगे उन्मुक्त भए खेलेबाक अवसर प्राप्त भेल छल। तेँ जी-जानसँ खेल-धूपमे लागि जाइ। दुपहरिआ खसिते तरह-तरहक खेल-धूप शुरू भए जाइत। लग-पासक बच्चासभ जमा होइत आओर तेहन धमाचौकड़ी होइत जकर कोनो अन्त नहि। बेसी हल्ला सुनि कैक बेर हमर काका चिकरि उठितथि ,मुदा हमरा देखिते सकदम भए जैतथि। कतहु-ने-कतहु मोनमे ग्लानि होमए लगितनि। "एतेक कम बएसमे सासुर बसैत छैक। कनीक दिन लेल अएलैक अछि। फेर सासुर चलि जाएत। कहिआ आओत, नहि आओत...।" सेसभ सोचि ओ गुम्म पड़ि जाइत छलाह। अबाक रहि जाइत छलाह।

ओहि दिन साँझमे गबैआ आएल छल। सौंसे गामक लोक ओकर गीत-नादक आनन्द लए रहल छल। नचारी, भगवती गीतसँ प्रारम्भ कए विद्यापतिक कतेको गीत गओलक। धिआ-पुताक संगे हमहूँ कतेक आनन्दित रही। मुदा हमर माए सोगाएल, असगरे घरेमे पड़ल रहथि, कारण हमर बिदागरीक दिन मनबए सासुरसँ केओ आबि गेल छल। ❑

१६.

प्रगतिशील मंचक कार्यकर्तासभ ओना छल देशभक्त, समाजक हितकारी विचार रखैत छल, सौंसे पसरल अन्याय, शोषण, भेद-विभेदकेँ समाप्त कए समता मूलक व्यवस्था स्थापित करए चाहैत छल, मुदा ओकरासभकेँ साधन सीमित छलैक। सामान्य आदमी धरि पहुँचबाक अवसर कम छलैक कारण फिरंगी ओकरासभक पाछू हाथ धो कए पड़ल छल। झूठ-फूस मोकदमामे नाम धए देब, तरह-तरहसँ प्रतारित करब आम बात छल।

जनाधार पार्टीक लोक सेहो प्रगतिशील मंचक विरोधी छल। तकर मूल कारण आपसी प्रतिद्वंदिता तँ छलहे, सैद्धान्तिक मतभेद सेहो रहैक। मुदा ओकरोसभकेँ कतहुँ-ने-कतहुँ एहि बातक अंदाज रहैक जे प्रगतिशील मंचक युवक-युवतीसभ राष्ट्रभक्त अछि, भने ओकर रस्ता फराक होइक।

ओना तँ बने-बने भटकैत, समाजमे आतंक, लूट-पाट करैत जीबैत छल डकैतक गिरोह। मुदा ओहोसभ कतहु-ने-कतहु सताओल गेल छल। अन्यायक मान्य आओर कानूनी प्रतिकार नहि कए सकल छल, तेँ हथियार उठा लेने छल। कतेको हत्या, लूटपाटक घटनासभमे सामिल छल। जाहिर छैक जे कानून ओकरासभक पाछू पड़ल छलैक। करखन के पकड़ाएत, के जिअत, के मरत तकर कोनो ठेकान नहि छल। एक हिसाबे जान हाथमे राखिए कए ओसभ रहैत छल।

मोछा ठाकुरक मृत्युक बाद गरम सिंह ओहि डकैत गिरोहक सरगना भेल। नामे गरम सिंह रहैक। सोचल जा सकैत अछि जे ओ

केहन रहल होएत।

इलाकामे डकैतीक घटना बढ़ए लागल। संगे प्रगतिशील मंचक गतिविधि सेहो गाम-गाम पसरए लागल। फिरंगीसभक सूचना तंत्रकेँ ई बात नहि बुझाइक जे आखिर एकरासभकेँ आर्थिक मदति कतएसँ आबि रहल अछि। प्रगतिशील मंच फिरंगी ओ जनाधार पार्टीक नेता दुनूक हेतु संकट भए गेल छल। तकर मूल कारण छलैक जे ओसभ भाषणमे कम आओर त्वरित कारबाइमे बेसी विश्वास रखैत छल। प्रगतिशील मंचक महिला कार्यकर्तासभ फिरंगीसभक नाकमे दम कए देने छलि कारण ओसभ आसानीसँ घरे-घर घुसिआ जाइत आओर जरूरी संवाद कतएसँ कतए पहुँचि जाइत। ओकरा आगू फिरंगीसभक सूचना तंत्र पछड़ि गेल छल।

डकैतसभक सरगना गरम सिंह हमरे गामक छल। ई बात तँ तरवन खुजल जखन कि एक दिन प्रगतिशील मंचक जंगलमे बैसार भए रहल छल। गरम सिंह अपन दल-बलक संगे ओहि ठामसँ गुजरि रहल छल। प्रगतिशील मंचक बैसार देखि ओसभ कात भए ओकरसभक बातसभ सुनलक। ओकरा रामकुमार चिन्हएमे आबि गेलैक। बच्चामे दुनू गोटे गामक इसकूलमे पढ़ैत छल। हमहूँ ओही इसकूलमे पढ़ैत रही। मास्टर साहेबकेँ ओसभ धर दए चिन्हि गेल।

गरम सिंहक भेँट रामकुमारसँ भेलैक तँ दुनू गोटेक आनन्दक वर्णन नहि छल। दुनू दलक लोकसभ छगुन्तामे पड़ि गेल। ❑

१७.

राम कुमार आओर गरम सिंहक आपसी दोस्ती बढ़िते

गेलैक। एहिसँ प्रगतिशील मंचक आओर लोकसभ गरम सिंह आओर ओकर संगीसभक सम्पर्कमे आएल। एक हिसाबे गरम सिंहक गुट प्रगतिशील मंचक सदस्य बनि गेल छल ,मुदा खुलि कए एहि बातकेँ प्रकट करबासँ सभ परहेज करए, कारण यदि बात खुजितैक तँ प्रगतिशील मंचक जनतामे सद्भावना घटतैक। ओसभ अराजकतावादी तँ कहबिते अछि, डकैतक सहयोगी हेबाक कारण सामाजिक ओ कानूनी रूपसँ प्रताड़ितो कएल जाएत। मुदा भितरिआ सम्पर्क दुनू गुटमे बढ़िते गेल। मास्टर साहेब आओर पुष्पा सन-सन कतेको लोकक शरणस्थली छल प्रगतिशील मंच। एहि कारणसँ ओकरासभकेँ समाजमे सहयोग बढ़ि रहल छल। जनमानसमे ओकरसभक मानवताबादी छवि बनि रहल छल जे जनाधार पार्टीक लोकसभकेँ बेचैनीक कारण छलैक। मुदा ओकरासभकेँ प्रगतिशील मंचक तोड़ नहि भेटि रहल छल। रामकुमारक समस्या मात्र ओकर माएटा नहि छलैक। मास्टर साहेबक देखभाल सेहो ओकरे करए पड़ैक। आओर कतेको असहाय, असमर्थ लोकसभ ओकरासभक संस्थासँ जुड़ि गेल रहैक। ओहिमे किछु गोटे तँ ओकरासभक संगे रहैक, किछु गोटे यत्र-तत्र पसरल रहैक आओर मौका-कुमौका अबैत जाइत रहैक।

यद्यपि समाजमे सती प्रथा रुकि गेल रहैक, तथापि गाहे-बगाहे एहन प्रसंग सुनएमे अबैत। लोक तखनहुँ ओकरा महिमामण्डित करबासँ पाछू नहि रहैत। मुदा एहन घटनासभ आब अपबाद भए गेल रहैक। लेकिन समस्याक ई अन्त नहि छल अपितु अधिकांश मामिलामे ई नव-नव समस्यासभक प्रारम्भ छल।

समाजमे विधवासभ जीबैत लास छलि। कोनो अधिकार

नहि। यदि बेटा भेल तखन तँ पारिवारिक सम्पत्तिमे ओकरा हिस्सा भेटि सकैत छलैक, अन्यथा ओहो नदारद। विधवाकेँ पारिवारिक सम्पत्तिमे मात्र जीवन निर्वाह योग्य खोरिसक हक रहैक। एक हिसाबे तँ अन्यायक पराकाष्ठा रहैक। बेटा, बेटीमे जन्मजात भेदभावकेँ धार्मिक, सामाजिक आओर कानूनी मान्यता रहैक। तेँ बेटीकेँ जनमिते कतेको ओहिठाम उदासी भए जाइत छल। प्रगतिशील मंच समाजमे महिलाक पराभवसँ चिन्तित छल। ओहि काजकेँ आगू बढ़ाबए हेतु समाजमे जनचेतना आनबाक हेतु ओसभ प्रयत्नशीलो छल ,मुदा परिणाम अपेक्षाकृत निराशाजनक छलैक कारण समाजक अधिकांश लोक धरि ओकरासभक पहुँचे नहि रहैक। लोकसभ सीमित स्वार्थ आओर सहज प्रवृतिक कारण कोनो तरहक नव प्रयोग करएसँ बचैत छल। जे केओ सुरखुरेबो करथि तिनका ततेक झंझटि होमए लगलनि जे आगू केओ एहन प्रयास करएसँ बचैत छल। मास्टर साहेबक उदाहरण सामने छल। एकटा एकदम निर्दोष आदमीक सत्यानाश भए गेल छल। ओकर परिवार बरबाद भए गेल छल आओर कर्मक्षेत्र, जे गामक पाठशाला छल, तकरा नष्ट कए देल गेल छल। एहिसँ ककरो की फएदा भेल? मुदा सेसभ सोचबाक ने ककरो फुरसति रहैक आओर ने प्रयोजन बुझाइक। एकाध गोटा जे सम्पन्न छल से अपन सम्पत्तिक रक्षामे लागल रहैत छल आओर शेष अपन जीवन बचबएमे निरंतर एहि प्रयासमे जे कहुना एकहु साँझ भोजन होइक आओर जान बाँचि जाइक। एहिसभ विषयपर प्रगतिशील मंचक रामकुमार ओ डकैतसभक सरगना गरम सिंहकेँ बीचमे कतेको बेर बहस होइत रहैत छलैक। निर्दोष आदमीक लूटपाट, हत्या कए ओकर धन-सम्पत्ति हरण कए लेब कोनो तरहेँ उचित बात नहि लगैत छल। एही

बिन्दुपर दुनू गोटेमे कैक बेर मतान्तर टकरावक रूप धए लैत छल। बात बढ़ैत देखि दुनू दिसक लोकसभ थोड़-थाम्ह लगा दैक आ अपन-अपन काजमे चल जाइक।

मास्टर साहेबक घरमे डकैती आओर ओकर पत्नीक डकैतसभ द्वारा हत्याक गप्प राजकुमारकेँ नहि बिसराइक। रहि-रहि कए ओकर मोनक कचोट गप्प-सप्प लक्षित होइत छल। मुदा ओकरा ई नहि बूझल छल जे एहि कुकृत्यक नायक गरमसिंह आओर ओकर गुटक लोक छल। एहि घटनासँ गरमसिंह सेहो दुखी छल।

असलमे ओसभ मास्टर साहेबक ओहिठाम धोखासँ पहुँचि गेल रहए। ओकर सभक लक्ष्य ओही गामक जमिन्दार हरिहर राय छलैक। ओ मास्टर साहेबक पड़ोसी छल। डकैतसभ हरिहर रायक घर दिस बढ़िए रहल छल कि मास्टरक घरसँ ओकर जबान होइत बेटा टार्चक लाइट बारलक। हल्ला सुनि ओ घरसँ बहराए लागल। डकैतक सरगना गरम सिंह ओकरा चेतओलकै जे भागि जो। मुदा ओ हल्ला करए लागल। ताबतेमे मास्टरक पत्नी घरसँ बाहर भेलखिन। बेटाकेँ ओझराइत देखि ओहो चिकरए-भोकरए लगलीह। डकैतसभ एहि बातसँ परेसान भए गोली चला देलक। मास्टरक पत्नी ठामहि रहि गेलीह। प्रात भेने डकैतक सरगनाकेँ जखन सभ बातक अखिआस भेलैक तँ बहुत दुखी भेल मुदा आब की? मास्टरक सर्वस्व नष्ट भए गेल रहैक।

प्रगतिशील मंचक लोकसभ आपसी चर्चामे एहि घटनाक उल्लेख करिते छल। संगहि डकैतक गिरोहसँ फराके रहबाक चर्चा सेहो करैत छल। मुदा कहबी छैक जे मजबूरी जे ने करा दिऐ।

ओकरसभ आर्थिक तंगी बढ़ल जाइत रहैक। सामाजमे जनाधार पार्टी लोकक वर्चस्व बढ़ल जाइक। सरकारो ओकरे संग दए दैत कारण प्रगतिशील मंचक उग्र रुखिसँ ओसभ बेहतर विकल्प बुझाइत छलैक। अंततोगत्वा डकैतसभक प्रगतिशील मंचमे बिलए भए गेलैक। एहि हेतु रामकुमार ओ गरम सिंहक आपसी सम्पर्क बहुत कारगर साबित भेल। ई तय भेल जे डकैत गिरोहक सदस्य आब ओतबे डकैती करताह जाहिसँ प्रगतिशील मंचक आर्थिक आवश्यकताक पूर्ति भए सकए। ओहो फिरंगी द्वारा संचालित सरकारी बैंक, रेलबेक वा सार्वजनिक सम्पत्तिसभकेँ मूलत: ठेकाना लगाओल जाएत। शेष समयमे समाजमे प्रगतिशील मंचक गतिविधिपर ध्यान देल जाएत।

प्रगतिशील मंचक संशोधित नाम प्रगतिशील विचारमंच भए गेल। एकर मूल उद्देश्य सामाजिक परिवर्तनक संग देशकेँ अंग्रेजक चंगुलसँ मुक्त कराएब छल। एहिमे सभसँ बाधक जनाधार पार्टीक टोपीधारी नेतासभ छलथि जे ओकरा परास्त करए हेतु अंग्रेजोसभसँ गुप-चुप बैसार करएसँ परहेज नहि रखैत छलाह। मुखमे राम बगलमे छुरी। मुदा प्रगतिशील विचार मंच एकर किछु परवाह केनहि बिना अपन काजमे लागल रहैत छल। ❑

१८.

द्विरागमनक बाद दोंगामे बेस चीज-वस्तु हमरा नैहरसँ आएल छल। हम एकबेर फेरसँ अपन सासु-ससुरक चास-बासपर बिराजमान भए गेल रही। लोकसभक आबाजाही तँ लगले रहैक। हमर नैहरसँ खबासनी मासमे दूबेर अबस्से आबि जाइत छल

जाहिसँ हमरा ओहिठामक समाचारसभ भेटि जाए । नैहरक चर्चा होइक आओर नोर नहि खसए से भइए नहि सकैत अछि।

माए कोना अछि? काका कोना छथि? कोनो अछि हमर संगी-साथी। इसकूलिआ विद्यार्थीसभक तँ विशेष जिज्ञासा रहिते छल कारण कनिके दिनका नेनाक सुखद स्मृतिमे ओकर पैघ स्थान छल। ओतए नित्य किछु काल हम स्वतंत्रतापूर्वक अपन संगीसभक संगे गप्प करी, खेल धूप करी। आब सुनै छी जे इसकूल टूटि गेल। मास्टर साहेब बताह भए गाम छोड़ि देलनि। काका नित्यप्रति भांग खाए ओहिना अलमस्त रहैत छथि।

हमर दोंगाक थोड़बे दिनक बाद हमर सासुर डीहगामामे अगिलग्गी भेलैक। बहुत रास घरसभ जरि कए खाक भए गेल। बोराक बोरा अन्न पानि स्वाहा भए गेल। बखारीसभसँ तँ कहि नहि कतेक दिन धरि धुँआ उठैत रहल। सौंसे गामक लोक यत्र-तत्र शरण लेने छल।

ओहि समयमे सरकारी सहायता नाममात्रक होइत छलैक। विदेशीसभक हुकुमत छलैक जे स्थानीय चापलूससभक मदतिसँ देशकेँ सालोंसँ गुलाम बनौने छल। अगिलग्गीक बाद जनाधार पार्टी ओ प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्तासभक गाममे कैम्प खसल छल। ओसभ यथासाध्य लोकसभक कष्टकेँ कम करबाक प्रयास केलक।

एही क्रममे पहिल बेर हमरा रामकुमार ओ गरमसिंहसँ भेँट भेल। ओसभ डीहगामा अबितहि हमर खोज केलक आओर भेँट होइतहि बड़ प्रसन्न भेल। ओकरासभक स्वागतमे कोनो कसरि नहि रहल। हमर सासु ससुर ओहनो हालतिमे ओकरासभक पर्याप्त ध्यान

रखलथि। एहि बातसँ ओहोसभ बहुत प्रसन्न रहथि जे हमर नैहरक लोकसभ हाल-चाल लेबए आएल अछि।

गप्प-सप्पमे आओर-आओर संगीसभक चर्चा स्वाभाविक छल। ओतेक रास विद्यार्थीमेसँ बूधन काकाक पुत्र अरुणक चर्चा जोर-सोरसँ भेल कारण ओ बहुत पढ़ाइ केलक। ततबे नहि, ओ विदेशमे परीक्षासभ पास कए कलक्टर भए गेल छल। आओर कोनो विद्यार्थीक एहन भविष्य नहि बनलैक।

गामक इसकूल बन्द भए गेलाक बाद बेसी विद्यार्थी तँ पढ़ाइ छोड़ि खेती-बारीमे लागि गेल छल। मुदा अरुण पढ़ए हेतु गाम छोड़ि दरभंगा चल गेल। पढ़ाइमे औअलि आबए लागल। तँ घरक लोकसभ ओकरा पटना पठा देलखिन। ओहीठामसँ आगूक रस्ता खुजल। प्रतियोगिता परीक्षा देबए लन्दन चल गेल। तकर बाद पहिले प्रयासमे ओ प्रतियोगिता परीक्षा पास कए गेल। एहि परीक्षाकेँ ओहि समयमे पास करब मामुली बात नहि छल। थोड़बे दिनक बाद ओ कलक्टर बनि गेल।

ओहि समयमे कलक्टर बनब अपना देशक लोकक हेतु भारी बात छलैक। अंग्रेजी पढ़ाइ करबसभक वशाक बात नहि छल। फेर कलक्टर बनए हेतु तँ विदेशमे अंग्रेजसभ द्वारा संचालित प्रशासकीय सेवा परीक्षा पास करब बहुत दुरुह काज छल। अंग्रेजक अधीन काज करए हेतु कतेको गोटे तैयारो नहि होथि। एहने समय साल रहैक जे राष्ट्रभक्तसभ प्रशासकीय सेवा पास केलाक बादो ओकरा त्याग कए राष्ट्रीय आन्दोलनसँ जुड़ि गेलाह। ई मामूली त्याग नहि छल।

अरुणक एहि सफलतासँ सौंसे जिला-जबार गौरवान्वित

भेल। देश भरिमे महत्वपूर्ण लोकसभमे ओकर नाम अबैत छल। एहि बातसँ कोनो पिताकेँ गर्व भए सकैत छलैक। बूधन काकाक तँ पैर जमीनपर रुकबे नहि करनि। ओ हमर पितिऔत काका छलाह। हमर बाबा हुनकर पिताक सहोदर भाए रहथिन। मुदा खानदानमे शिक्षा ओ पदमे ओ औअलि आबि गेल रहथि। सभ ठाम हुनके चर्च होइत रहैत छल।

रामकुमार ओ गरमसिंह अपन संगीसभक संगे राति भरि डीहगामामे काज करैत आओर भोर होइते निपत्ता भए जाइत। लोकसभ ओकरसभहक अनुग्रहित भए गेल छल। जकरे देखू, सभक मुहेँ ओकरासभक प्रशंसा सुनएमे अबैत। मुदा केओ ओकरसभक नाम नहि जानैत छल। बुझैत-बुझैत लोक एतबे बुझलक जे ओसभ प्रगतिशील विचार मंचक कार्यकर्ता अछि। आओर किछु नहि। नित्य नव ढवमे ओसभ प्रकट होइत। गाममे ओकरसभक यश पसरि गेल।

हम तँ एतबे बातसँ खुस रही जे हमर नैहरक लोक बेरपर काज आएल। हमरे घरक नहि अपितु कोनो-ने-कोनो रूपे पुरा गामक मदति केलक। आओर कोनो अपेक्षा नहि रखलक। प्राय: हमरा छोड़ि केओ ओकरसभक नाम-गाम धरि नहि बुझि सकल।

हमर धिआ-पुताक संगीसभ एहन नीक काज केलक ताहि बातसँ हम आनन्दमे रही। अरुणक समाचार सुनि सेहो बहुत प्रसन्नता भेल। मुदा एहि बातसँ अखनो दुख होअए जे हम नहि पढ़ि सकलहुँ। ❑

१९.

मास्टर साहेब ओ पुष्पा जखन कखनो गप्प करथि तँ लोक गुम्म पड़ि जाए। कोनो प्रकारसँ मानसिक असंतुलनक संकेत नहि बुझाइक। देखनाहर, सुननाहरसभ गुम्म पड़ि जाइत छल। बताहोक कतेको प्रकार होइत छैक ताहि बातपर लोककेँ विचार करबाक उत्तम अवसर छलैक- ई दुनू गोटा। एक दिन मास्टर साहेब पुष्पाकेँ संकेत कए भाषण करए लगलाह। हुनका कहबाक तात्पर्य जे पुष्पाकेँ अपन हक छोड़क नहि चाही। आब जखन ओकरा अपन एक मात्र संतान वापस भेटि गेलैक अछि आओर ओ सशक्त अछि, तँ अपन सम्पत्तिकेँ देआद-बादसँ मुक्त करा लेबाक चाही। मुदा पुष्पा किछु बजबे नहि करैक। ओकरा अन्तर्मनमे डर पैसल रहैक से हटबे नहि करैक। मास्टर साहेब ओकरा बेरि-बेरि सुनबथि :

अधिकार खो कर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी, दण्ड देना धर्म है।

परन्तु पुष्पा अपन बेटाकेँ किछु नहि कहैत। ओकरा डर होइक जे कहीं ओकरा एकमात्र संतान फेर ने विलुप्त भए जाइक। यएहसभ सोचैत सोचैत ओ फेर अपन पुरान समयमे लौटि जाइत। किछु, किछु बड़बड़ाइत आओर गुम्म भए जाइत।

प्रगतिशील विचार मंचक बैसारमे सभक मत रहैक जे मास्टर साहेब, पुष्पा ओ एहने आन-आन लोकसभकेँ मानिसक स्वास्थ्य लाभक हेतु प्रयत्न कयल जाए। ताहि हेतु हुनकासभकेँ मानसिक चिकित्सालय, काँके (राँची) लए जएबाक कार्यक्रम छल। सभक ई सोच छलैक जे एहन प्रताड़ित, दुखी आत्मासभकेँ सहायता करब

मानवीय कर्तव्य थिक। देशक स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी थिक जे ओहिमे रहनिहार लोक मनुक्खक जीवन जीबए। एही मुद्दापर ईसभ जनाधार पार्टीक पछाड़ि रहल छल। कारण ओसभ तँ खाली उपरे-झापरे काज करए। बैसार, भाषणबाजीसँ लोककेँ उत्साहित तँ कए दैक, मुदा जाहि घरमे चुल्हि नहि फुकाइत छल से कि जानैत स्वतंत्रताक स्वाद। आर्थिक परतंत्रता मनुक्खक सर्वस्व हरण कए लैत अछि चाहे ओ जकरा द्वारा आओर जाहि स्तरपर हो। अंग्रेज चल जेतैक तँ केओ दोसर ठाढ़ भए जेतैक। शोषणमुक्त, समतामूलक, समन्वयवादी समाजक स्थापना होएत तखनहि स्वतंत्रताक फएदा समाजक दलित, शोषित वर्ग धरि पहुँचि सकत अन्यथा ओकर सम्पूर्ण लाभ बलगर वर्ग सोखि लेत। से कहब छलैक ओकरासभक।

प्रगतिशील विचार मंचक जन कल्याणकारी कार्यक्रमक अनुसार मास्टर साहेब, पुष्पाकेँ काँकेक मनोचिकित्सालयमे भर्ती कराओल गेल। किछु आओर एहने लोकसभकेँ ओतए आनल गेल। जानि बुझि कए ओकरसभक नाम लोककेँ नहि बताओल गेल कारण ओकरासभक पाछू फिरंगीसभ हाथ धो कए पड़ल छल आओर ताहीसँ ओसभ ततेक उत्पीड़ित होइत गेल जे अपन-अपन माथपर सँ नियंत्रण खतम कए लेलक। आओर भए गेल आजाद...।

कतेक दुखद परिस्थिति रहैक तकर वर्णन सुनि केओ उद्वेलित भए सकैत छल। उद्वेलित मास्टरो भेलाह, पुष्पा सेहो भेली आओर कतेको एहने उद्वेलित होइत-होइत काँके पहुँचि जाइत गेल।

रामकुमार स्वयं हुनकासभकेँ दूटा आओर संगीसभक संगे काँके मानसिक रोगी अस्पताल काँकेमे भर्ती करओलक।

ओहिठामसँ लौटएमे कैक दिन लागि गेलैक।

रामकुमार वापस अपन अड्डापर आबि रहल छल कि डकैतक गिरोहसभपर फिरंगीसभक बढ़ैत चोटक समाचार भेटलैक। जहिआसँ अरुण ओहि जिलाक कलक्टर भेलैक एहन लोकसभक पराभव भए गेल छल। यद्यपि ओ अरुणकेँ नीकसँ जनैत छल ,मुदा ओकरा भेँट करबासँ कोनो फएदा नहि लगैत छल कारण ओ आखिर छल तँ फिरंगीसभक नौकर। ओकरे आदेशपर चलैत छल।

ओना किछु मामिलामे अरुण समाजमे यश प्राप्त केने छल। चोरी-चकारी लूट-पाटसभ ओकरा अएलाक बाद बहुत कम भए गेल छल। मुदा तकर फएदा तँ समाजक सम्भ्रान्त वर्ग धरि सीमित रहि गेलैक। जकरा किछु छलैहे नहि, तकर की लुटेतैक? तेँ ओकर प्रयास एकभगाहे रहि गेल छल। अंग्रेजक अधिकारी रहैत ओ आओर कइए की सकैत छल? जहिआसँ अरुण ओहि जिलामे आएल गरम सिंह ओ ओकर गुटक लोकक हालति पातर भए गेल छल। ❑

२०.

खबासिनीक आबाजाही लागले रहैक। ताहि माध्यमसँ नैहरक आओर लग-पासक घटना क्रमसभ हमरा पता लगैत रहैत छल। मास्टर साहेब आओर पुष्पाकेँ काँकेमे भर्ती केलाक समाचार सेहो खबासिनीक माध्यमसँ भेटल। आओर गप्पसभ होइते रहैक कि लागल जेना धरती जोर-जोरसँ हीलि रहल अछि। सभ भूकम्प-भूकम्प बजैत घर छोड़ि पड़ाएल।

मुदा भागैत कतए? भयानक गुड़गुड़ीक आबाजक संग लगैक जेना पृथ्वी फाटि जाएत। जमीनपर ठाढ़ रहब पराभव छल। केओ खुट्टा पकड़ने ठाढ़ छल तँ केओ किछु। माल-जालसभ चिकड़ि भोकरि रहल छल। कुकुरसभ पहिनहिसँ भुकए लागल छल। कतेको घर ढनमनाए खसि पड़ल। कतेकोमे दरारि पड़ि गेलैक। अन्न-पानि चीज-वस्तुसभ बरबाद भए गेलैक। कतेको गोटे घायल भए गेल। कतेकोक हार-पाँजर टूटि गेलैक। के ककरा सम्हारत? कतहु पैर रखबाक जगह नहि रहैक।

ओहि दिन पहिल बेर डीहगामामे घरसँ दरबाजा दिस हम आएल रही। कनिआ-पुतरासभ भागलि । घरक घर स्वाहा भए गेल। थोड़बे कालमे पृथ्वीक ई गति भए गेल छल। जकरा सम्हारएमे सालो लागि गेल। गामक गाम उजरि गेल। हम ताबे सासुरमे पुरान भए गेल रही। तीनटा धिआ-पुतासभकैं सम्हारक छल। वयोवृद्ध सासु, ससुरक देखभालक हुनको देखबाक छल। मुदा घर उसरि गेल छल। सरकारी सहायता मुँहगर लोक धरि सीमित छल। प्रगतिशील विचार मंच ओ जनाधार पार्टीक लोकसभ गामे गाम घुमि- घुमि लोकक मदतिक प्रयास करैत छल ,मुदा कारगर मदति तँ गरम सिंह आओर ओकर गुटक आओर आओर लोकसभ केलक जकर नामो केओ नहि जनैत छल।

कहबी छैक जे कलियुगमे नीक करू तैओ अधलाह होइत अछि। सएह परि भेलैक गरम सिंह आओर ओकर गुटक लोकसभकैं। लोकसभक उपकार तँ ओसभ दिन केलक ,मुदा गाहे-बगाहे ओकर भेद खुजि गेलैक। समाचार जिलाक कलक्टरक कान धरि गेलैक।

खुफिआ तंत्र तँ कतेको सालसँ एकरसभहक गतिबिधिक टोह लैत रहैत छल। अपना भरि पकड़बाक प्रयत्न सेहो करैत रहैत छल। मुदा गरम सिंहक जनतामे बहुत समर्थन रहैक। गरीब गुरबासभक हेतु तँ ओ भगवाने छल। तेँ जखन कखनो आपत्तिकाल होइक, एकरासभकेँ स्थानीय लोकसभ घरे-घर नुका लैत छल। बादमे ओसभ अपन काजमे परिबर्तन आनए चाहलक, ओही उद्देश्यसँ ओसभ प्रगतिशील विचार मंचसँ आबाजाही केलक। मुदा अरुणकेँ अएलाक बादसँ दृष्ये बदलि गेलैक।

रामकुमारकेँ अरुणसँ सम्पर्क रहैक। आखिर ओकर नेनेक दोस्त छलैक। मुदा गरम सिंहक सही पहचान देबएमे ओहो डरैत छल। ओकरा डर रहैक जे अरुण बड़ सख्त आदमी अछि। अंग्रेजक अधीन काज करैत अछि। तेँ ओकरा यदि गरमसिंहक पता चलि गेलैक तँ ओ ओकरा छोड़त नहि।

एक दिन तँ गरम सिंह पकड़ाइत-पकड़ाइत बाँचल। ओ आब अपन जीवनक दिशा बदलए चाहैत छल ,मुदा हालति ओकरा संग नहि दए रहल छलैक। कहबी छैक जे मनुक्खक पछिला कर्म ओकरा पछोड़ करैत छैक। सएह ओकरोपर लागू छल। एकराति ओकरसभक बासापर एकाएक पुलिस छापा मारलक। दुनू कातसँ फायरिंगक आवाज आबैत रहल। एक बेर तँ हल्ला भए गेलैक जे गरम सिंह मारल गेल। पुलिस उत्सव मनाबए लागल । बादमे ई सूचना गलत साबित भेल।❑

२१.

पहिने अगिलग्गी, फेर भूकम्प दुनू मिलि कए गामक

लोकसभक रीढ़ तोड़ि देलक। लोकक घर नष्ट भए गेल। घरमे राखल चीज-वस्तुसभ स्वाहा भए गेल। बखारीसभ ढनमनाए खसि पड़ल। लोकक संग रहि गेल मात्र अपन परिवार। मुदा ओकर भरण-पोषण एकटा जबरदस्त समस्या छल।

एहन विषम परिस्थितिमे हमर माए टैर गाड़ी भरि-भरि सामानसभ पठओलक। एहिसँ परिवारकेँ कतेक उपकार भेल तकर वर्णन नहि।

ओही समयमे हमर नैहरसँ खबासनी सेहो आएल छलि। ओकरा अएलासँ एकटा अपूर्व आनन्द हमरा होइत छल। बुझाइत छल जेना हम एक बेर फेर अपन नैहर पहुँचि गेलहुँ। माएक समाचारसँ प्रारम्भ भए गप्पक अनबरैत श्रृँखला पता नहि कतए कतए पहुँचि जाइत।

ओहिमे मास्टर साहेब, पुष्पा, अरुण, रामकुमार आओर गरम सिंहक तँ कतेको बेर चर्च होइत। ई गप्प-सप्प होइते छल कि खबासिनी गुम्म भए गेलि। लाख प्रयास करिऐक, ओकरा घिघरी लगलैक से लगले रहि गेलैक। थोड़ेकालक बाद बहुत मोसकिलसँ ओकरा अबाज लौटलैक। कतेको बेर पुछलाक बाद ओ बाजि सकल जे गरम सिंह गुटक अधिकांश डकैत मारल गेल जे बाँचल से पकड़ि लेल गेल। मुदा गरम सिंह स्वयं चम्पत अछि।

“जीवितो अछि कि नहि?”

तकर ओ किछु जवाब नहि दए सकल छलि।

“ईसभ कोना भेलैक?” –हम पुछलिऐक।

“नवका कलक्टर हाथ धो कए एकरासभक पाछू पड़ि

गेलैक।" –खबासिनी कहलक।

ओओर कतेक तरहक गप्प भेल रहैक। मुदा गरम सिंहक पराभवक समाचार सुनि बच्चाक बातसभ मोन पड़ए लागल। ओकर घरक हालति बहुत खराब रहैक। ओ तथापि इसकूल अबैत छल। खेल-धूपमे औअलि छल। मुदा पढ़ाइमे मोन नहि लगैक। मास्टर साहेब लाख बुझबितथि ओकरापर कोनो असरि नहि होइक।

बहुत दिन धरि गरम सिंहकेँ रहस्यमय ढंगसँ गायब भए जेबाक चर्च इलाका भरिमे होइत रहल। जकरा जे फुराइक से कहितथि। किछु गोटेक हिसाबे ओहो पुलिस संगे मुठभेरमे हताहत भए गेल। मुदा फिरंगीसभ आश्वस्त रहैक जे ओ जीबिते अछि। ताहि बातकेँ स्थानीय समाचार पत्र प्रमुखतासँ छपने छल। मुदा ओ गेल कतए?

हमर नैहरक लोकसभ क्रमश: फेरसँ अपन-अपन खेती-बाड़ीमे जुटि गेल रहथि। सम्पन्न गाम छल। यद्यपि अगिलग्गी आओर तकर बाद भेल भूकम्पसँ बहुत क्षति भेल रहैक, तथापि लोकसभ अपन मेहनतिक बदौलत फेरसँ ठाढ़ भए गेल।

धिआ-पुतासभ छेटगर भए गेल छल। ओकरसभक उपनयनक कार्यक्रम बनल। सभ कुटुम्बकेँ आमंत्रित कएल गेल। हमर माए नाना प्रकारक उपहार पठओलक। मास दिन धरि तरह-तरहक विधि-विधान होइत रहल। उपनयनक दिन नाच गानक सेहो प्रबन्ध छल। दरबाजापर सामिआना लागल छल। गाम भरिक लोक गीत-नादक आनन्द लैत रहलाह। भोज- भात तँ भेबे कएल।

सभसँ मनोरंजक दृष्य तखन भेल जखन एकटा पाहुन टेबुल घड़ीकेँ चोरा कए अपन धोती तरमे रखने छलाह। ओ कनी दिमागसँ हिलल सेहो रहथि। घड़ीमे एलार्म भरल रहैक। ओ जोर-जोरसँ घनघनाए लागल। चारूकातक लोक एकट्ठा भए गेल। लोकसभमे ठहाका पड़ि गेल। हराएल घड़ी भेटि गेल। मुदा ओ पाहुन जे भगलाह से घुरि नहि अएलाह।

उपयनक पाहुनसभ क्रमश: अपन-अपन गाम वापस चलि गेलाह। सभक यथासम्भव बिदाइ कएल गेल। भोजक ततेक सामग्री बाँचल छल जे गाम भरि बएन परसल गेल। लोकसभ खाइत-खाइत तंग भए गेल।

भोरे-भोर बरुआसभ संध्यावंदन करैत छलाह। पण्डितजी नित्य भोरे आबि कए ओकर व्यवस्था करथि। गीत-नाद तँ कतेको दिन धरि चलैत रहल। रातिक समयमे पोखरिक भीड़पर जाए बरुआ सहित कतेको लोक की-की बिधिसभ केलाह। सत्य नारायण भगवानक पूजा भेल। तकर बाद उपनयनक प्रक्रिया सम्पन्न भेल।

हमर नैहरसँ आएल खबासिनी सेहो वापस जाए चाहैत छल। ओकरा एकाध दिन रोकि लेलिऐक जाहिसँ गप्प-सप्प कए सकी।

काजसभसँ चैन भए खबासिनीकेँ बैसाए नैहरक समाचार सुनए लगलहुँ। ओही क्रममे गामक कैकटा नव-नव समाचार भेटल। कैकटा विधवासभ गाम-घर छोड़ि वृन्दावन चलि गेलीह। परिवारमे समावेश नहि भेलनि।

ओहि समयमे विधवाक दुर्गति कोनो नव बात नहि छल। ककरो पति मरि गेल ताहिमे ओकर की दोष? मुदा से बात समाज

ओ कानूनकेँ बुझाइक तरवन ने? एक तँ ओकर पति चल जाइक, ताहि संगे सर्वस्व स्वाहा! पहिने तँ देहोमे आगि फूकि दैक आओर हल्ला कए दैक जे सती भए गेलैक। तकर बाद ओकरा देवीक दर्जा प्राप्त होइक। ओकर छाउरपर सती मन्दिर बना दैक आओर चैन भए जाए।

क्रमशः सती प्रथापर रोक लागल। विधवा अपन जान तँ बचओलक ,मुदा कोन कीमतपर? ईसभ प्रश्न हमरा मोनकेँ उद्वेलित कए दैत छल। ईसभ सोचैत-सोचैत ध्यान माएपर चलि गेल। कनैत देखि खबासिन सेहो कानए लागलि। थोड़बे कालमे सभ सामान्य भए गेल। ओ वापस हमर नैहर दिस बिदा भेलि आओर हम अपन काजमे व्यस्त भए गेलहुँ। ❑

२२.

गरम सिंह दलक एतेक जल्दी पराभव भए जेतैक से सरकारो नहि सोचने छल। मुदा गरम सिंह स्वयं नहि पकड़ाएल रहैक। ताहि लए कए सरकारी व्यवस्थाक चिन्ता तँ रहबे करैक। ओसभ रने-बने गरम सिंहकेँ तकैत रहल आओर क्रमशः ढील पड़ि गेल। डकैतक गुट कमजोर भए गेल छलैक। सरकारी अधिकारीसभकेँ निश्चिन्त हेबाक सेहो कारण छल।

असलमे बचल डकैतसभ प्रगतिशील विचार मंच धए लेने छल आओर ओकर आर्थिक पक्षकेँ मजगूत करएमे प्रयुक्त होइत छल। ताहिसँ प्रगतिशील मंचकेँ जनाधार पार्टीकेँ टक्कर देबामे आसानी भए गेलैक। गाम-गाममे प्रगतिशील विचार मंचक समर्थक लोक भए गेल छल। सक्रिय सदस्यक संख्या सेहो बढ़िते जा रहल

छल।

गरम सिंह पुलिसक चाङुरसँ निकलि कए सोझे वृन्दावन पहुँचि गेल। ओहिठाम एकटा मन्दिरक स्थापना कए ओकर मठाधीश भए गेल। ओकरा संगे चारिटा डकैतसभ सेहो भागएमे सफल भेल छल। ओहोसभ अपन-अपन चोला बदललक आओर सन्यासी भए गेल। गेरुआ वस्त्र पहिरने कृष्णक भक्त स्वांग धेने दिन राति ओसभ अपन नव कलेवरमे निश्चिन्त भए वृन्दावनवासी भए गेल। केओ ओकरासभक पछिलका जीवनक जिज्ञासा नहि केलक।

गरम सिंह अपना संगे पर्याप्त धन अनने छल जाहिसँ वृन्दावनमे शीघ्र स्थापित भए गेल। स्थानमे भव्य मन्दिर, अतिथि गृह सहित सभ प्रकारक सुविधा भरि गेल। क्रमश: ओकर चेलासभक संख्या बढ़िते गेल। ओहिमे तँ कतेको यत्र-तत्रसँ आएल विधवासभ छलीह जिनकासभकेँ कहुना कए रहबाक एकटा ठौर तँ चाही, से ओतए भेटि गेलनि। एहि प्रकारें गरम सिंह भजनानन्ददासक नामसँ प्रसिद्ध भए गेलाह।

भजनानन्ददास जखन प्रवचन दैत छलाह तँ चारूकात ओकर चेलासभ मण्डपमे पसरि जाइत छल। किछु गोटे काते-कात ठाढ़ भए जाइत छल। प्रवचन, भजनक बीच-बीचमे ओसभ ततेक मगन भए कीर्तन करैत, नृत्यक नाना प्रकारक भंगिमा करैत, जे लगैत जेना भजनानन्ददास साक्षात कृष्ण होथि।

पिअर वस्त्र, पिअर चानन, सौंसे कृष्णे-कृष्ण। एहि वगएसँ ओ सन्त समाजमे अपन स्थान तँ बनाइए लेलक संगहि भूतकालक कुकाण्ड सभसँ निवृति सेहो भए गेल। ओकरा शास्त्रक कोनो ज्ञान

तँ छलैक नहि, मुदा आगन्तुक भक्तसभ अपनेमे ततेक परेसान रहैत छल जे बिना किछु सोचने विचारने भजनानन्ददासक पैरपर खसैत छल आओर कल्याणक हेतु, नाना प्रकारक कष्टसभसँ मुक्तिक हेतु हुनकर प्रार्थना करैत रहैत छल। ओहि क्रममे कतेको भक्त तँ अपन धन-सम्पत्ति धरि दान कए हुनकर पक्का चेला बनि गेल छल। ❑

२३.

अगिला बेर खबासिनी जल्दीए चंगेरा लए आबि गेलि। ओकरा माए ततेक ने कहलकैक जे ओहो तैयार भए गेलि। उठेलक चंगेरा आओर हमर सासुर दिस बिदा भेलि। ओकरा अखन आबक इच्छा नहि रहैक, कारण ओकर बेटी नैहर आएल रहैक आओर कए दिनसँ नातिक पेट झड़ैत रहैक। पाँच वर्षक नातिक संगे ओ दिन-राति प्रसन्न रहैत छलि। ओकर अस्वस्थतासँ खबासिनीकेँ परेसानी भए गेल छलैक। मुदा हमर माए नहि मानलकैक आओर नातिकेँ गामक डाक्टरसँ इलाजोमे मदति कए देलकैक।

खबासिनीकेँ अबिते हमरा बहुत प्रसन्नता होइत छल। नैहरक सभ समाचार तँ ओ दैते छल, संगहि एहूठामक गतिविधिसभमे ओ बहुत रूचि लैत छल। एहि बेर ओकरा जल्दी अएबाक कारण छल जे माए एकटा खराप सपना देखलक। ओ रातिएमे जोर-जोरसँ चिकरए-भोकरए लागलि। सौंसे ऑगन लोक भरि गेल। सभ एतबे पुछैक जे एतेक रातिमे हुनका की भए गेलनि? भेल-तेल तँ किछु नहि रहैक ,मुदा सपनाकेँ ओ सच बुझि लेने छलि। सपना की देखलक से ककरो कहबे नहि करैक।

खबासिनी हमर नैहरक खिस्सा सुनबैत-सुनबैत अरुणक

चर्चा करए लागलि। ओ कलक्टर भेलाक बाद गाम कमे काल जाइत छल। बेसी काल दरभगेसँ घुरि जाइत छल। तथापि पैघ लोकमे सभक अनायसे रूचि भए जाइत छैक। खबासिनीक मुहेँ अरुणक नाम खसिते हमर उत्सुकता बढ़ि गेल। की बात भेलैक जे एहि बेर ई अबिते अरुणक चर्च कए रहल अछि?

हमरा उत्सुक देखि खबसिनी परिछेलक जे अरुणक घरवाली ओकरा छोड़ि देलक। कारण पुछलापर ओ किछु बजिते नहि छल। बहुत प्रयास केलापर ओकर मुँह खुजल।

कहाँ दनि अरुण जखन इंगलैंडमे पढ़ाइ करैत रहए तँ ओहिठाम एकटा मेम साहेबसँ प्रेम भए गेलैक। से ततेक ततेक प्रगाढ़ भए गेलैक जे अरुण चर्चमे जा कए पूजा-पाठ कए लेलक। ओकरा पता नहि चलए देलकैक जे अरुणक बिआह पहिनहिसँ भेल छैक। ओहो अन्हरा गेल रहैक। आँखि मुनि देलकैक। अरुण कलक्टरीक परीक्षा पास कए अपन देश लौटए लागल तँ ओहो पछोड़ धए लेलकैक। कतबो प्रयास केलक जे ओ ओतहि रहि जाए, से ओ टस सँ मस नहि भेलैक।

अरुणक तँ सिटीपीटी गुम्म भए गेलैक। अपना ओहिठाम मेम साहेबकेँ लए कोना जाइत? की ओकर पहिल पत्नी ई सहन करत? कृतघ्नता तँ ओ कइए चुकल छल। ओकरा इंगलैंड जेबाक खर्चा ससुर अपन खेत बेचि कए केने रहथि। दू साल धरि मासक मास ओ इंगलैंड टाका पठबैत रहलाह। संगहि अपन बेटी ओ नाति, नातिनक भरण-पोषण करैत रहलाह, एहि उम्मीदमे जे जमाए बड़का हाकिम भए जेथिन तँ बेटीक सुख-सुविधा, मान-सम्मानक

पराकाष्ठा भए जाएत। अपन संतानक सुख के नहि चाहैत अछि? ताहि लेल यदि कनेक कष्टो होइक तँ लोक सहि जाइत अछि।

मुदा अरुण तँ सभटा पर पानि फेरि देलाह। सिगरेट, सिगार ओ विदेशी दारूक संग अंग्रेजी भाषी कनिआक चस्का पड़ि गेलिन। आब तँ ओएहसभ हुनकर जिनगी भए गेल अछि। भोरेसँ तरह-तरहक नशाक सेवन करैत अंग्रेजनी संगे रंग-रभस करैत रहैत छथि। कहि नहि कलक्टरीक काज कोना करैत छथि?

मुदा काजमे ओ पक्का रहथि। अंग्रेजक स्वामीभक्त रहथि। ताहिसँ अंग्रेज पत्नीओ लए अनने रहथि। एहि बातसँ तँ अंग्रेजसभ अत्यन्त प्रसन्न भेल रहए। गाहे-बगाहे हुनक अंग्रेज पत्नी (एंगल) सँ सम्पर्को ओसभ करैत रहैत छल। अंग्रेजकेँ आओर चाहिऐ की? ओसभ पिट्ठू, अन्धभक्त अधिकारी तकैत छल जे सुख, सुविधा ओ सोनाक टुकड़ीक लालचमे अपनहि देश ओ धर्मसँ दगाबाजी कए सकैत छल आओर करितो छल, अरुण ओकर सभहक फर्मामे एकदम फिट कए गेल छल। ऊपरसँ अंग्रेजिनीक आनि कए सोनामे सुगन्ध कए लेने छल।

ई बात नहि रहैक जे अंग्रेज सरकार ओकरापर पूर्ण विश्वास कए लेने छलैक। ओकरो चारूकात जासूस लागल रहैत छलैक। एहि बातक ओकरा पक्का सबूत तखन भेटल जखन प्रगतिशील विचार मंचक नायक रामकुमारक ओकरा घर अएलाक तुरन्त बाद कमीश्नर साहेबक फोन आबि गेलैक। ततबे नहि ओकरासँ विस्तृत आख्या सेहो मांगल गेल। अरुणकेँ जवाब दैत-दैत पराभव भए गेल छल।

खबासिनीक मुहेँ एतेक रास गप्प सुनि हम पहिल बेर छगुन्तामे पड़ि गेल रही। खबासिनी कतेक दिन रहितए? ओकरा अपन काजसभ मोन पड़ए लगैक आओर तखनसँ वापस हेबाक ब्योंतमे लागि जाइत। ओ जखन गाम जाए लागलि तँ अरुणक परिवारक की कोना भेलैक, तकर सभटा जानकारी अगिला बेर आनए हेतु कहि ओकरा बिदा कएल।

खबासिनीक आबाजाही बनल रहलासँ हमरा तँ मोन लागिए जाइत छल, हमर माएकेँ बड़का उसास होइक। नान्हिटा बच्चासँ हम जबान भए गेलहुँ, मुदा माएक हेतु तँ जेना दुधपीबे रही। सही कहल गेल अछि माए, माए होइत अछि..! मुदा हमर माएक तँ हम एकमात्र आश रहिऐक आओर सेहो कनीकेटामे ओकरासँ फराक एकदम नव लोकक संग सासुर बसए लागल रहिऐक।

क्रमश: सासुर घरे लागए लगलैक। जुड़ल अटल घर रहैक। जमीन-जालसँ नीक उपजा भए जाइक। दिन कोना बीति जाइक से पतो नहि चलैक। परिवारमे नव-नव बच्चासभ अबैत गेल। बेटा, बेटीसभसँ घर भरि गेल। हमर ससुर एहि बातसँ बहुत खुस रहथि।



२४.

ओहि समयमे स्वतंत्रता आन्दोलन जोड़ पकड़ने छल। गामे-गाम लोक फिरंगीसभक खिलाफ नारा लगबैत छल। कोनो इलाकामे जनाधार पार्टीक बर्चस्व तँ कतहु प्रगतिशी विचार मंचक। गरम सिंह गुटक डकैतसभ जे जीबित रहि गेल से अधिकांश

प्रगतिशील विचार मंचमे सक्रिय भए गेल तँ किछु गोटे वृन्दावन बासी भए भजनानन्ददासजी महराजक सेवक भए बेस मोट-सोंट भए गेल। नाना प्रकारक चानन-तिलक, गरामे तरह-तरहक रूद्राक्ष ओ हाथ-सँ-पैर धरि सुसज्जति पीताम्बरी पहिरने ओकरसभक शोभा तँ देखैत बनैत छल।

दिन भरि ओकरसभक आश्रममे एक दिस कीर्तन तँ दोसर दिस भन्डारा चलैत रहैत छलैक। शिष्यक संख्यामे निरन्तर वृद्धि भए रहल छलैक। आश्रममे टाका तँ जेना झहरैत छल। गनबाक पलखति नहि रहैक। तेँ चारिटा मुस्टंड ओहि टाकासभक देखभालमे मुस्तैद छल।

आश्रमक धनबल, जनबलक लगातार होइत वृद्धिसँ भजनानन्ददासजी निरन्तर आनन्दमे रहैत छलाह। साक्षात कृष्णक स्वरूपमे जखन ओ भक्तक समक्ष उपस्थित होइतथि तँ आश्रमवासी विधवा भक्तगणसभकेँ तँ भक्तिक ज्वारभाटा उठि जाइत छलनि। कतेको भाव विह्वल भए नृत्य करए लागथि। कतेको भजन करए लागथि। ककरो-ककरो तँ जेना भजनानन्द स्वामीमे साक्षात् कृष्णक दर्शन होमए लागए आओर ओसभ हुनकर पैरपर दंडवत खसि पड़ैत।

झालि-मृदंग, ढोलक संग कृष्णक रासलीलाक अनुपम दृष्य देखए हेतु कतए-कतएसँ भक्तसभ ओहिठाम आबि जाइत छलाह। एहि प्रकारक भक्तिरसमे सराबोर लोककेँ माथाक कोन काज? ओसभ अन्धभक्त भए गेल छल। भजनानन्ददासक हेतु सर्वस्व तन, मन, धन अर्पित कए देने छल। आखिर, सभकेँ मुक्ति तँ चाहबे करी। भवजालसँ दूर हटि कए स्वर्गकद्वारि खुजि रहल छलैक। ताहि

पथकेँ चलिते-चलिते भक्तसभ अपन धन ओ समस्त सम्पदा स्वत: अर्पण करबाक हेतु आतुर छल।

आब तँ बस एकटा आज्ञा होइक आओर ओसभ अपन नगद, गहना, जमीन- जायदादसभ भजनानन्द स्वामीकेँ समर्पित करए लागल। मुदा भजनानन्दजी तँ किछुमे हाथो नहि लगबैत छलाह। सभकाज हुनकर मुस्टंडसभक माध्यमसँ भए जाइत छल। बहरिआसभ बुझि नहि रहल छल जे आखिर भए की रहल छल?

प्रगतिशील विचार मंचक किछु कार्यकर्तासँ जनाधार पार्टीक लोकसभसँ कोनो-कोनो बातपर बाद-विवाद होइते रहैत छल। पहिने तँ ई बात गाहे-बगाहे होइत छल ,मुदा किछु दिनसँ एकर गति बढ़ि गेल छल। जनाधार पार्टीक नेतृत्वक चिन्ता बढ़ल जा रहल छल, मुदा ओसभ किछु कए नहि पाबि रहल छलाह।

हारि कए ओसभ प्रगतिशील विचार मंचक संग बैसार केलाह। उद्देश्य ई जे गप्प-सप्पसँ समस्यासभक समाधान कएल जाए। जनाधार पार्टीक नेतासभ अपना भरि सभ प्रयास केलाह ,मुदा प्रगतिशील मंचक लोक एहि बातपर अड़ि गेल जे स्वतंत्रतासँ बेसी जरूरी सामाजिक परिवर्तन थिक। शोषण मुक्त समाजक बिना स्वतंत्रताक फएदा किछु गोटे धरि रहि जाएत। अधिकांश ओहिना रहि जाएत। गप-सप्प होइते छल कि आसपासमे जोरदार धमाका भेलैक।

अफरा-तफरीक माहौलमे के कतए गेल, ककर की हराएल, ककर जान गेल, के मरि गेल किछु नहि बुझाएल। के षड़यंत्र केलक तकर किछु अनुमान नहि लागि रहल छल। जनाधार पार्टी वलासभ प्रगतिशील मंचपर आरोप लगा रहल छल जखन कि ओसभ

अपनाकेँ निर्दोष कहैत छल। केओ-केओ कहैक जे एहिमे फिरंगी जासूसक हाथ भए सकैत अछि। ❑

२५.

अचानक भेल बिस्फोट ततेक सशक्त छल जे लग-पासक मकानसभ हिलि गेल। कैकटाक खिड़की, केबाड़क शीशा चूर-चूर भए गेलैक। जनाधार पार्टीक प्रान्तीय प्रमुख सहित कैकटा स्थानीय नेता खूनसँ लतपथ पड़ल छलाह। प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्तासभ सेहो घायल रहथि ,मुदा अपेक्षाकृत कम। संयोगवश राजकुमारकेँ दहिना पैरमे मामूली चोट आएल छल। ओकरा प्राथमिक इलाजक बाद अस्पतालसँ छुट्टी भए गेलैक। गम्भीर रूपसँ घायलसभकेँ अस्पतालमे भर्त्ती कएल गेल। ओहिमे जनाधार पार्टीक प्रान्तीय प्रमुखक हालति बहुत गम्भीर छल।

देश-विदेशमे ई समाचार पसरि गेल। फिरंगीसभकेँ मौका भेटलैक। आनन-फाननमे प्रगतिशील विचार मंचपर प्रतिबंध लगा देल गेल। ओकर कार्यकर्त्तासभकेँ हिरासतिमे लए लेल गेल। मुश्किलसँ राजकुमार बँचि कए भागल। असलमे फिरंगीसभ बहुत दिनसँ प्रगतिशील विचारमंचसँ तमसाएल छल। करवन ओसभ सरकारी असहयोगक बाबजूद तेजीसँ देश भरिमे पसरि रहल छल। फिरंगीसभकेँ ओ चुनौती दए रहल छल।

राँची मनोचिकित्सालयमे भर्तीक बादसँ केओ मास्टर साहेब वा पुष्पाक हाल-चाल लेबए नहि गेल। ओसभ जीबए, मरए तकर ककरो चिन्ता नहि। ओहिठाम सैकड़ों एहन मनोरोगी छलाह जे

आब स्वस्थ भए गेल रहथि ,मुदा हुनकर परिवार अपना ओहिठाम नहि लए जाथि। ओकर सम्पत्तिकेँ हरण कए निश्चिनत भए गेल रहथि। मनोरोगी अस्पताल काँकेक स्थिति भयाबह छल। केओ रोगी बड़बड़ा रहल अछि तँ केओ गुम्म पड़ल अछि। केओ-केओ बहुत आक्रमक छल। मनुक्ख देखितहिं चिकड़ए लगैत छल। सभ जानवर जकाँ जीबि रहल छल।

बिस्फोटक बाद राजकुमार अस्पतालसँ घसकल। देखलकैक जे पुलिस ओकर गुटक लोकसभकेँ ताकि रहल अछि। कैकगोटा पकड़ल गेल छल। ओ जान-बेजान ओहिठामसँ भागल आओर घुरि नहि तकलक। राते-राती बस पकड़ि राँची पहुँचि गेल। ओतएसँ काँके मनोचिकित्सालय पहुँचल। ओतए पहुँचितहि अपन माएकेँ ताकए लागल। पुष्पाक हालति ठीक नहि रहैक।

मास्टर साहेब पूर्ण स्वस्थ भए गेल रहथि। राजकुमारकेँ देखितहि चिन्हि गेलखिन। भाव विह्वल भए कानए लगलाह। जल्दी सँ जल्दी घर वापस जाए चाहैत छलाह। अस्पताल प्रशासनसँ गप्प कए रामकुमार हुनका ओहिठामसँ छुट्टी करओलक। मास्टर साहेबक गाम बिदा कए राजकुमार माएक जिज्ञासामे फेर अस्पताल पहुँचले छल कि पुलिसकेँ कतहुँसँ ओकर हबा लागि गेलैक। पुलिस ओकरा तकैत-तकैत राँची पहुँचि गेल छल। पुलिसकेँ पछोड़ करैत देखि ओ भागबाक प्रयास केलक ,मुदा पुलिस चारूकातसँ घेरि लेलकैक। ओ भागि नहि सकल। पकड़ा गेल।

राजकुमार पुलिसकेँ बहुत हाथ-पैर जोड़लक जे ओकर माए अस्पतालमे भर्ती अछि। ओकर हालति ठीक नहि अछि, मुदा ओसभ किछु नहि सुनलकैक। थोड़कालमे राजकुमारकेँ लए पुलिस

अज्ञात स्थान दिस चलि गेल।

मास्टर साहेब बहुत दिनक बाद अपन गाम पहुँचलाह। किछु गोटे तँ हुनका चिन्हिओ नहि सकल। आकार, प्रकार सभ बदलि गेल छल। कृष्णकाय, दप-दप करैत मुखारविंद ओ तेजस्वी संभाषणसँ ओ अखनहुँ लोककेँ प्रभावित कए केलथि । थोड़बे कालमे सौंसे गामक लोक जमा भए गेल।

मास्टर साहेबसभसँ ततेक नीकसँ गप्प-सप्प केलथि जे लगबे नहि करैक जे ओ काँकेसँ इलाज कए लौटलाह अछि। मुदा किछु लोककेँ अखनो चिन्ता होइक जे कहीं ओ दोबारा ओही हालमे ने पहुँचि जाथि। ताहि हेतु ओसभ शुरूएसँ सावधान भए गेल। ओसभ मास्टर साहेबक शुभचिन्तक आओर निकट सम्बन्धी छलाह। तेँ एहि बातक हेतु सचेष्ट रहथि जे हुनका कोनो प्रकारसँ मानसिक दबाब नहि पड़नि।

मास्टर साहेब जखन अपन घर वापस अएलाह तँ कनी काल तँ गुम्म पड़ि गेलाह। फेर आगू बढ़लाह। घरसँ एकटा युवक बहराएल। ओकरा देखिते मास्टर साहेब चिकरि उठलाह-

“किशोर! तूँ कतए छलह एतेक दिन?”

मास्टर साहेबक हिसाबे तँ ओ डकैतक गिरोह द्वारा मारल गेल। माएक संगे डकैतसभ ओकरो मारि देलक। मुदा केओ एहि बातपर ध्यान नहि दए सकल जे घटना स्थलसँ मात्र मास्टर साहेबक पत्नीक लास भेटल छल। किशोर तँ कतहुँ निपत्ता भए गेल छल।

भेलैक ई जे डकैतसभ धोखासँ परिस्थितिवश मास्टर साहेबक घरमे फसाद कए देलक। जाबे ओकरासभकेँ हालति काबूमे अएलैक, मास्टर साहेबक पत्नी तँ दुनिआसँ जा चुकल

छलि। मुदा किशोर बचल छल। ओकर चोट बहरिआ छलैक। डकैतसभ ओकरा सरकारी अस्पताल लग छोड़ि देलक। संयोग रहैक जे ओहिठामसँ अस्पतालक डाक्टर जाइत रहए। ओ ओकरा उठा-पुठा कए अस्पतालमे भर्ती कए देलक। ओ मामूली इलाजक बाद बचि गेल। जीबि तँ गेल ,मुदा ओकरा किछु मोन नहि पड़ैक। स्मृति क्षय भए गेल रहैक। एहि स्थितिमे ओ अस्पताल छोड़ि कतहु चलि गेल।❑

२६.

हमर माए रातिमे अकर-बकर सपना देखलक। भोरे ओकरा हमर चिन्ता ततेक जोर धेलकैक जे तुरंत खबासिनीकेँ चंगेरा भरि कए बिदा केलक। खबासिनी साँझ धरि हमर सासुर पहुँचलि। ओकरा देखितहि हमरा लागए जेना स्वर्ग भेटि गेल। नैहर चीजे सएह होइत अछि।

कनीक आश्वस्त भेलाक बाद ओ अपन खिस्सासभ शुरू केलक। माए, काकासभक समाचार सुनि मोन हल्लुक भेल। तकर बाद आओर लोकक समाचार कहबाक क्रममे अरुणक गप्प उठि गेल। खबासिनी तुरंत मुँह फेरि लेलक। छीआ-छीआ करए लागलि। किछु बुझबे नहि करिऐक जे की भेलैक? किएक ई बुढ़िआ एना कए रहल अछि। बात खुजैत-खुजैत कहलक जे ओ तँ अंग्रेज मेम साहेबक संगे रहए लागल अछि। मेम साहेब इंगलैण्डसँ आबि कए कलक्टरीमे बैसि गेलैक। ओकरा देखितहिं अरुणक पहिल घरवालीक देहमे आगि लागि गेलैक। ओ अरुणकेँ दस हजार फज्झति केलक,मोटा-चोंटा बन्हलक आओर गाड़ीपर चढ़ि गेलि।

अरुणक खिस्सा आगू बढ़बैत खबासिनी कहए लागलि जे अरुणक अंग्रेजनीसँ बिआह नहि करए चाहए। ओ तँ मात्र रंग-रभस करैत छलाह। मुदा पैर जहन कादोमे पड़त तँ कतए धरि धसि जाएत तकर कोन ठेकान?

अरुणक संग पढ़ाइ-लिखाइ केनिहार बेसी अंग्रेज छल। ओहि समयमे प्रशासकीय सेवा परीक्षा अंग्रेजे धरि सीमित रहैक। बादमे केओ- केओ अपनो देशक लोक ओहिमे सफल भेलाह। एक- सँ- एक पैघ लोक ओसभ बनि गेलाह। ओएह परीक्षा तँ अरुणो पास केलक। तेँ ओकरा झूस कथीक कहल जेतैक। रहल अंग्रेजनीक गप्प से तँ ओकर गरामे पड़ि गेलैक आओर तेना कए फँसा लेलकैक जे हटने नहि हटलैक।

मुदा इहो सत्ते जे कोनो एक्के दिने तँ ईसभ होइत नहि छैक। ओ जिम्मेदार आदमी छल, परिवार वला लोक छल, सम्हरि जेबाक चाहैक छल। कतहु-ने-कतहु ओकरो घालमेल तँ रहले होएत। ‘के जाने सीयाराम गति’ से कहि खबासिनी जोरसँ साँस छोड़लक।

असलमे अरुणक विदेशमे पढ़ाइक क्रममे एडली नामक युवकसँ दोस्ती भए गेलैक। एडली लन्दनक रहनिहार छल। ओहो प्रशासकीय सेवाक तैयारी करैत छल। ओकर एंगलसँ पहिनहिसँ दोस्ती रहैक। एंगल ओहिठाम अंग्रेजीक शिक्षिका छलि। क्रमशः तीनू एकट्ठे घुमए-फिरए लागल।

लन्दनमे पढ़ाइ ओ तकर बाद प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे अरुणक, एंगल ओ एडलीक संग तेहन जबरदस्त तिकड़ी बनल जे देखैत बनए। जखन कखनहुँ घुमए जाए तँ तीनू संगे। जखन खान-पान होइत तँ तीनू संगे। जखन कोनो विषयपर परिचर्चा होएत तँ

तीनू संगे। देखए वलासभ सकदम रहए। ओना ओहि सभ देशमे ओहू समयमे ईसभ कोनो तेहन गप्प नहि होइत छलैक। अपनासभक समाज जखन घोघ तनने घुमि रहल छल, तखनो अंग्रेजसभ अपन स्त्रीगणकेँ समानताक अधिकार दैत छल। शिक्षा, व्यबसाय ओ नौकरीमे बरोबरिक हक भेटैत छलैक। बिआहक मामिलामे अपन जीवन संगी चुनबाक अधिकार छलैक। मूल, गोत्र, जाति विवाद ककरो जीबनपर भारी नहि पड़ैत छलैक। हमरा लोकनि अपन संस्कार वा संस्कृतिपर जतेक घमंड कए ली ,मुदा जे दुर्गतिसँ अपना ओहिठामक स्त्रीगण गुजरलीह से कदापि प्रशंसनीय नहि कहल जाएत। ❑

२७.

खबासिनी गाम चल गेलि। खबासिनीकेँ चलि गेलाक बाद कैक दिन धरि ओकरेपर ध्यान लागल रहल।

गामसँ बहुत रास लोक तीर्थ हेतु वृन्दावन जाइत रहए। हमर इच्छा सेहो भेल जे घुमि आबी। घरमे एहि बातपर चर्च भेलैक। सभक सहमति बनलैक। हमर सासु, हम आओर ओसभगोटे वृन्दावनक यात्रापर बिदा भए गेलहुँ। गामपर धिआ-पुता रहि गेल आओर ससुर रहि गेलाह।

गामसँ बहुत रास लोक एकट्ठे वृन्दावनक यात्रापर निकलल छल, तेँ एहि यात्राक आनन्द अद्भुत छल। लगै छल जेना छोट-छीन गाम संगे चलि रहल छल। तीर्थ करब तँ बहाना होइत अछि। असलमे तँ घुमनाइ मूल काज रहैत छैक।

ट्रेनक डिब्बामे साधारण दर्जामे सभगोटे सबार छल। काठक पट्ठाक फाँकसभमे अजोध उड़ीससभ भरल छल। सभक देहक खून ओ पीबैत छल। पैरसँ माथ धरि सभकेँ चकत्ता भए गेलैक। ककरो राति भरि निन्न नहि भेलैक। सभगोटे कीर्तन करए लागल जाहिसँ ट्रेनक डिब्बाक वातावरण भक्तिमय बनि गेल। लगैत छल जेना ओ ट्रेनक डिब्बा नहि, अपितु वृन्दावनक कोनो मन्दिर होइक।

लगभग ३६ घन्टाक बाद हमसभ वृन्दावन पहुँचलहुँ। ओहिठामक तँ महौले अलग छल। जकरे देखू, राधे! राधे।!कहैत भेटए। रिक्सा वला सामने आबि जाइत तँ घण्टी बजाबक एबजमे राधे! राधे! कहए लागत। ओएह हाल टमटम वलाक, किंवा कोनो दोकान वलाकेँ, कोनो सामान कीनए जाउ आओर यदि ओकरा खुदरा नहि छैक, तँ राधे! राधे! करए लागत।

यत्र-तत्र अनेकानेक मन्दिर भरल छल। धर्मशालाक पाँति लागल छल। रस्तामे अहिना हमसभ चलैत रही कि भजनानन्ददासजीक आश्रम देखाएल। ओहिठाम अखण्ड भजन चलि रहल छल। मन्दिरक सटले धर्मशाला छल। हमसभ ओहिठाम ठहरलहुँ। प्रात भेने हमसभ भजनानन्ददासजीक प्रवचन सुनए गेलहुँ। बीच-बीचमे किर्तनीऑसभ तेहन नीक स्वरमे भजन गबैक जेसभ सुधि हरा जाइक। हमर ध्यान बेरि-बेरि भजनानन्ददासपर चल जाइत छल। हमरा लागए जेना ओ गरम सिंह अछि। नेनामे ओ हमरा संगे पढ़ैत छल। कैक दिन हमसभ कबड्डी संगे खेलाइत छलहुँ। मुदा ई नहि बुझाइत छल जे ओ एतेकटा पहुँचल संत केना भए गेल?

प्रवचन, भजन समाप्त भेलापर महात्माजीकेँ प्रणाम कए हमसभ डेरा वापस जेबाक हेतु तत्पर रही कि ओ हमरा अबाज देलाह। एसगर देखि हाल-चाल पुछैत आग्रह केलाह जे हुनकर परिचय ककरो नहि कहल जाए। मोन भेल जे पुछिऐक जे ओ एहिठाम एहिरूपमे किएक अछि? मुदा आओर लोकसभ आबि गेलैक, तेँ आगू बढ़ि गेलहुँ। वृन्दावन बिहारी लाल की जय! जतए जाउ लोक राधे! राधे! करैत रहैत छल। वृन्दावनक ई विशेषता थिक। सम्पूर्ण वातावरण कृष्णमय भेल रहैत अछि।

हमसभ पन्द्रह दिन वृन्दावनमे ओहि आश्रममे रहलहुँ। दिन भरि यत्र-तत्र भ्रमण होइक। मन्दिरसभमे श्रीकृष्णक दर्शन होइक। भन्डारा तँ होइते रहैत छलैक। हमरा नैहरक किछु लोक सेहो वृन्दावन आएल छल। संयोगवश एक दिन प्रवचन सुनैत काल भेटि गेल। गाम घरक लोक भेटि जाएब ओहो परदेशमे, आनन्ददायी होइते अछि। गप्प-सप्पक क्रममे गरम सिंहक चर्चा होमए लागल। हम ओकरा कहलिऐक जे ई महात्मा तँ गरम सिंहे छथि। तखन ओकरोसभक भक टुटलैक। सभ एक स्वरसँ बाजि उठल-

“गरम सिंह!”

आ कि भजनानन्ददासजीक लोकसभ चारू कातसँ हमरासभकेँ घेरि लेलक आओर ओहिठामसँ उठबाक संकेत केलक। हम बुझि गेलिऐक जे बड़का गलती भए गेल। गरम सिंहक नाम नहि लेबाक छल।

हमरा लोकनि वृन्दावनसँ ट्रेनसँ लौटि रहल छलहुँ कि रातिमे निन्न पड़ि गेल। भोर भए रहल छल। आसपासक कैकगोटा हल्ला

करए लागल। दरभंगा टीसन आबए वला छल। हमहूँसभ अपन मोटा-चोटा बन्हलहुँ। सभ ट्रेनक दरभंगा पहुँचबाक प्रतीक्षा करए लागल। मुदा ट्रेन लहेरिआसराय गुमतीसँ कनिक पहिने रुकलैक से घन्टा भरि रुकले रहि गेलैक।

सभ वापस अपन-अपन सीटपर बैसि गेल। ओहीक्रममे मास्टर साहेबक एकटा गौंआ हुनका चिन्हलकनि। ओ मुंगेरसँ आबि रहल छल। समस्तीपुरमे ओही डिब्बामे चढ़ल छल। मुदा ततेक लोक ठुसल रहैक जे ओतएसँ ठाढ़े आबि रहल छल। गप्प-सप्पक क्रममे मास्टर साहेबक चर्च उठि गेल। ओकरासभ बात बूझल छलैक। इहो बूझल छलैक जे मास्टर साहेब पूर्ण स्वस्थ भए गाम वापस आबि गेलाह अछि। मुदा पुष्पाक हालतिसँ ओहो चिन्तित छल। बात किछु आओर होइत ओहिसँ पहिने ट्रेन खुजि गेल। फेर अफरातफरीक माहौल भए गेल। कनीके कालमे ट्रेन दरभंगा पहुँचि गेल। ❑

२८.

गाम अबितहिं पता लागल जे गाममे कतेक तरहक नव घटनासभ घटित भेल। मासे दिनमे की-की भए गेल? वृन्दावनसँ आनल प्रसाद लोकसभमे बाँटल गेल। ओहीक्रमे अबैत जाइत लोकसभ कहए लागल जे गाममे मास्टर साहेब बैसार केने छलाह। ओ नव जागरण मंचक नामसँ एकटा नव पार्टी बना लेने छलाह। एहि मंचक कोनो पुरना पार्टीसभसँ कोनो मतलब नहि रहतैक। एकरसभक कहक छलैक जे समाजमे सभ केओ बरोबरि

अछि।सभ जाति एक अछि, पुरुष-स्त्रीक कोनो भेदभाव नहि। सभ मिलि कए रहए, मिलि कए जीविकोपार्जन करए। स्वतंत्रता आन्दोलन ओ सामाजिक परिवर्तन दुनू जरूरी अछि, दुनू भेटबाक चाही, मुदा शान्तिपूर्ण ढंगसँ। नीक लक्ष्यक प्राप्तिक हथिआरो नीक हेबाक चाही। ओसभ वैचारिक दृष्टिसँ बुद्धक समीप छल । मध्य मार्गसँ, शान्तिपूर्ण असहयोग आन्दोलन चलबएमे विश्वास करैत छल। करूणा,, प्रेम ओ त्याग ओकर मूलमंत्र छल।

मास्टर साहेब हमरा लेनेसँ मानैत छलाह। हमरो हुनकासँ सिनेह रहबे करए। हमरा अनुपस्थितिमे ओ हमर सासुरमे बैसार केने रहथि। बैसार भेलाक बाद हमरासँ भेँट करए अएलथि ,मुदा हम तँ वृन्दावनमे रही। हमर ससुरसँ परिचय भेलनि। ओ यथेष्ट चन्दा देलखिन। मान-सम्मान केलखिन।

मास्टर साहेब अपन गाम लौटि गेलाक बाद किछु गोटेकेँ पुष्पाक सुधि लेबाक हेतु प्रेरित केलाह। ओकर एकमात्र पुत्र राजकुमार पुलिस हिरासतिमे छल। तेँ समाजक कर्तव्य बनैत छल जे किछु करए।

मास्टर साहेबक फूकक असरि भेल। ततेक असरि भेल जे ओहि साँझमे दू गोटे पर्याप्त टाकाक संगे काँके बिदा भए गेलाह। ओहिमे तँ एकटा छल मास्टर साहेबक पुत्र किशोर आओर दोसर राजकुमारक पितिऔत हरिनन्दन। रातिभरि बसमे जागल-जागल हरिनन्दन ओ किशेर राँची पहुँचल। ओहिठामसँ रिक्सा कए काँके अस्पताल पहुँचएमे बेस परिश्रम करए पड़लैक।

राँची (काँके) मनोचिकित्सालय पहुँचि ओसभ गुम्म पड़ि गेल। अस्पतालक अधीक्षकसँ भेँट केलाक बाद पता लागल जे एहन

कतेको महिला मरीज छथि जे सालोसँ ठीक भए गेल छथि, मुदा हुनका अपन परिवारक लोक कोनो सुधि नहि लए रहल छथि। ककरो सामाजिक प्रतिष्ठाक डर छैक तँ केओ सम्पत्तिमे संभावित बँटबारासँ बचए हेतु अपन स्वस्थ लोककेँ छोड़ि देने अछि।

अस्पतालमे घुमैत काल जखन पुष्पाक सामने आएल तँ ई देखि आश्चर्यमे पड़ि गेल जे ओ हरिनन्दनकेँ तुरंत चिन्हि गेलैक। अपितु किछु गप्पो केलकैक। गोर लगलापर आशीर्वादो देलकैक। मास्टरक पुत्र किशोर अपन परिचय देलकैक तँ तुरंत मास्टरक हाल-चाल पुछए लगलैक।

हरिनन्दनकेँ अस्पताल अएलासँ आओर आश्वस्त कएलासँ पुष्पाक गाम वापस जएबाक इच्छा प्रवल भए गेलैक । ओकरा डाक्टर पूर्ण स्वस्थ घोषित कए देलक ,संगहि खबरदार केलक जे एकरा कोनो तरहक मानसिक कष्ट नहि होइक से ध्यान राखल जाए। तकर बाद पुष्पा ओकरासभक संगे गाम बिदा भए गेलि। रस्तामे पुष्पा काँकेक मानसिक अस्पतालक अनुभवक चर्चा करैत रहलि। आश्चर्य ई लगैक जे जखन राजकुमार अपने गेलैक तँ ओकर हालति ठीक नहि रहैक। मुदा हरिनन्दनकेँ देखिते ओकर माथा सही दिशामे पलटि गेलैक। ओसभ किछु बूझए लगलैक, सभकेँ चिन्हए लगलैक, सभसँ अपन बात कहए लगलैक। डाक्टर बेसी बात सोचबासँ, बेसी बजबासँ मना केने रहैक तथापि ओ बजिते जाइक आओर सेहो एकदम तार्किक आओर प्रासंगिक।

सम्भवत: हरिनन्दनक स्वागत आओर स्नेहात्मक व्यवहार ओकर अन्तरमनमे धसल पीड़ाकेँ शान्त कए देलकैक। हरिनन्दन उदारवादी ओ शान्त विचारक लोक छल। अपन पितासँ एकदम

अलग। ओकरा पता चलि गेल रहैक जे ओकर पिता ओकरा संगे कतेक अत्याचार केने छल। ओ अहि बातक क्षतिपूर्ति तँ नहि कए सकैत छल ,मुदा आगू जे सही सम्भव रहैक से ओ करक हेतु कृतसंकल्प छल। ओकरामे ई नैतिकता आनएमे मास्टर साहेबक सेहो योगदान छलनि। मास्टर साहेब नियमित ओकरा अपन सात्विक विचारसँ प्रभावित करैत रहलाह। हुनके द्वारा उत्साहित केलापर ओ पुष्पा माने अपन काकीकेँ आनए काँके अस्पताल पहुँचल छल। सहयोगक हेतु मास्टर साहेबक पुत्र किशोर सेहो संगे छल।

मुदा सभकेँ एहि बातक चिन्ता रहैक जे यदि ओकरा राजकुमारक पुलिस द्वारा गिरफ्तारीक समाचार भेटतै तँ फेर ने कहीं ओकर माथा घसकि जाइक। तेँ ओसभ तरह-तरहक बहाना बनबैत रहलैक। रस्ता भरि ओ अपन पुत्रक हाल-चाल पुछैत रहलैक आओर कहुनाक हरिनन्दन टरकाबैत रहलैक । मुदा करवनो ने करवनो ओ सही बात तँ बुझबे करतैक।

बात मास्टर साहेबकेँ कान धरि गेलनि। पुष्पा आबि रहल छथि, स्वस्थ भए गेल छथि, ताहि बातसँ ओ बहुत प्रसन्न रहथि। मुदा राजकुमार लए ओहो चिन्ताग्रस्त रहथि। पुष्पाक हाल-चाल लेबए ओ स्वयं आबि गेलाह। पुष्पा किछुए काल पूर्व गाम आएल छलि। अबिते मास्टर साहेबकेँ देखि बहुत प्रसन्न भेलीह।

मास्टर साहेब किशोर ओ हरिनन्दनसँ सभ हाल-चाल लेलथि। ओ हिम्मती छलाह। भगवानमे विश्वास रहनि। सोचलाह जे सही बात पुष्पाकेँ कहिए देल जाए। से ओ कहि देलखिन। राजकुमारक समाचारसँ ओ कनी चिन्तित भेलि ,मुदा एहि बातसँ

ओकरा बहुत संतोष भेलैक जे ओ जीवित अछि, स्वस्थ अछि आओर देशक, समाजक हितमे काज कए रहल अछि।

एक युगक बाद पुष्पा अपन गाम आएल छलि। सभ बात बदलि गेल रहैक। मुदा हरिनन्दन तँ कमाल कए गेलैक। पुष्पा मास्टर साहेब ओ गामक समस्त लोकक समक्ष ओ अपन पिताक कुकृत्य हेतु क्षमायाचना केलक संगहि घोषणा केलक जे ओ पुष्पा आओर राजकुमारक संपत्ति गोट-गोटक वापस कए देत। ओतबे नहि, अपन संपत्तिक आधा हिस्सा प्रायश्चित स्वरूप समाज कल्याण हेतु मास्टर साहेब द्वारा स्थापित नव जागरण मंचकेँ दान कए देत।

चारूकातसँ थपड़ीक अबाज आबि रहल छल। सभ ओकर अपन विचारक प्रशंसा कए रहल छल। पुष्पा आश्वस्त भए सुनैत रहलि। ❑

२९.

बहुत दिन बाद एहि बेर जखन खबासिनी अएलैक तँ चंगेरामे सनेस भरल रहैक। कनी कालक बाद खबासिनी अपने हमर नैहरक गप्प करए लागलि। लगलैक जेना ओकर पेटमे बातसभ फुलि रहल छलैक। गप्पक क्रममे वृन्दावनमे जड़ि गरओने जा रहल भजनानन्ददासजीक चर्च करैत कहलक जे गाममे ओकर चारूकात प्रशंसा भए रहल छैक। लग-पास गामक जे केओ ओतए जाइत अछि तकरा बेस स्वागत होइत अछि। भोजनसँ लए रहनाइ धरिक सम्पर्ण व्यवस्था ओकरे दिससँ होइत छैक। संगहि किछु जेबीमे सेहो धए दैत छैक। ततबे धरि नहि। इलाकाक जतेक विधवासभ

छलैक सभ ओकरा आश्रममे ढबाहि लागि गेल अछि। सुनबामे आएल जे ओहि आश्रममे दू सएसँ बेसी विधवा रहैत छैक।

भजनानन्ददासजीक आश्रमक चर्च चारूकात होमए लगलैक। आश्रमक यश बढ़िते जा रहल छल। चारूकातक भक्तसभ आबि कए अपन सर्वस्व दान कए आश्रमवासी भए रहल छल। सभ हुनकर दिन-राति जयगान करैत रहैत छल। मुदा आश्रमक निवासीसभ जतेक लोक ततेक तरहक गप्प होइत छलैक। मुदा सामान्यत: लोकक ध्यान भजन कीर्तनमे लागल रहैक। प्रगतिशील विचारमंचक सम्पर्क लगातार एहि आश्रमसँ बनल रहैक। भजनानन्दजी ओकरासभकेँ प्रचूर आर्थिक मदति करैत छलखिन। संगहि संकटक समयमे ओकर कार्यकर्त्तासभ भेष बदलि कए कीर्तन मण्डलीमे सामिल भए जाइत छल। ककरो कनिको संदेह नहि होइत छलैक।

राजकुमारक पुलिस हिरासति बढ़ाबएसँ न्यायाधीश मना कए देलथि। कारण ओकरा खिलाफमे पुलिसक पास किछु सबूत नहि रहैक। असलमे ओकर ओहि बम विस्फोटमे कोनो संलिप्तता नहि रहैक। पुलिस महज संदेहपर ओकरा धए लेने रहैक। आखिर बम बिस्फोट केलक के? तकर किछु समाधान पुलिस नहि कए पाबि रहल छल। न्यायाधीश प्रगतिशील विचारमंचसँ प्रतिबन्ध सेहो समाप्त कए देलथि।

राजकुमार जहलसँ छुटि अपन गाम आएल तँ चारूकात गर्द पड़ि गेल। मधुबनीसँ गाम धरि लोकक करमान लागि गेल। लोक ओकरा फूलमालासँ लादि देलकैक। जीपपर आगू-आगू ओ, पाछू-पाछू प्रगतिशील विचार मंचक कार्यकर्त्तासभ उत्साहमे नारा लगबैत

आबि रहल छल।

गाम पहुँचितहि मास्टर साहेब भेटलखिन। ओ राजकुमारक रिहाइसँ बहुत प्रसन्न रहथि। राजकुमारकेँ ओकर घर धरि अरिआति मास्टर साहेब कतहु बैसारमे चल गेलाह।

खबासिनी अपन गाम घुरि गेलि। धिआ-पुता आओर परिवारमे आब हम ततेक ओझरा गेल रही जे सासुरे हमर सर्वस्व भए गेल। एहिठामक माटि-पानिसँ क्रमश: सिनेह बढ़िते गेल। हमर धिआ-पुतासभ छेटगर भए गेल। बेटीसभहक बिआहक समय आबि गेल छल। ओहि समयमे बेटीक माने ओकर बिआह छल। बिआह भए गेल आओर पिताक गरासँ उतरी टूटि गेल। पढ़ाइ-लिखाइसँ कोनो मतलब नहि। चिट्ठी-पतरी जोगर भए गेल तँ पारंगत भए गेलि।

जाहि मिथिलामे सीताक जन्म भेल। जतए गार्गी, भारती सन विदुषी भेलीह, ततए ई की भए गेल? सामाजिक परंपराकेँ कतए लकबा मारि देलक जे स्त्रीगणसभ घोघे ओढ़ने सासुर अएलि, आओर घोघे तनने ऊपर चलि गेलि। आओर एहि बातकेँ बहुत गौरबपूर्वक बखान कएल जाइक। ईसभ सोचि मोनमे छगुन्ता होइत छल, अपराध बोध होइत छल।

हम नहि पढ़ि सकलहुँ कोनो बात नहि, मुदा अपन बेटीसभक शिक्षाक व्यवस्था कोना होएत से सदिखन मोनकेँ चिन्तित केने रहैत छल। गाममे बेटीकेँ पढ़ेबाक रेबाजे नहि रहैक। तथापि जे सम्भव भेलैक, प्रयास कएलिऐक। पढ़ए लिखएमे तेजगरसभ रहैक। अवसर भेटिते आगू बढ़ए लगलैक।

हमरा तीनटा बेटी छल,एकटा बेटो छल। कुल मिला कए चारिटा संतान छल। ससुरक परिश्रमसँ उपजा-बाड़ी ठीक भए जाइत छल जाहिसँ परिवारक गुजर भए जाइक।❑

३०.

गाममे सालमे एकबेर रामलीला अवश्य अबैत छल। ओएह मनोरंजनक प्रमुख साधन छल। रेडियो, टेलीवीजनक तँ नामो-निसान नहि छल। फोन केओ सुनने धरि नहि छल। पोस्ट ऑफिससँ डाकपिउन चिट्ठी लए अनैत छल तँ चारूकात लोक एकट्ठा भए जाइत छल। चिट्ठी लिखनाहर आओर पढ़नाहरक संख्या बहुत सीमित छल। तेँ ने जखन हरखूक घरवालीक ओतए चिट्ठी अबैक तँ सौंसे गाम चिट्ठी लए घुमैत रहि जाइत छल तँ मोसकिलसँ केओ चिट्ठी पढ़ितैक। ओ चिट्ठी की होइत छल। बस हरखू द्वारा ओकर पत्नी (बरहरबावाली)क बारंवार चेतौनी छल जे ओकर माएकेँ तंग नहि कएल जाइक।

"बरहरबावाली को खबरदार! माताराम को प्रणाम! कि तुम चला आओ। अलीपुरद्वारि से- हरखू राउत।"

बेरि-बेरि अपन माएकेँ अपना लग बजाबै आओर बरहरबावालीकेँ खबरदार करैक जे ओकरा माएकेँ नीकसँ राखल जाए, तंग नहि कएल जाए। जहिआ कहिओ हरखू गाम अबैत माए लेल नुआ, ओढ़ना अवश्य आनैत। बरहरबावालीक हेतु सेहोसभ किछु आनैत। सभ धिआ-पुताक हेतु किछु-ने-किछु आनैत। मुदा हरखू माए ओकरा अबिते कान फुकए लागैक। बस, शुरू होइक

बरहरबावालीक मारि-गारि। ई क्रम चलिते रहैक। करवनो मानैक, करवनो पीटैक। ओ दुनूकेँ प्रसन्न रखबाक प्रयासमे ककरो सन्तुष्ट नहि कए पबैत छल।

जाबे गाम रहए हमरासभक ओहिठाम नियमित अबितए, घरक काज कए दैत। परदेशक तरह-तरहक गप्प-सप्प सुनबैत। आश्चर्यक बात ई जे ओ सदिखन हँसैत रहैत। एकबेर अहिना कमा कए गाम आबि रहल छल कि सस्ता सोना कीनबाक एबजमे सभटा टाका ट्रेनमे ठकि लेलकैक। मुदा हरखू छल उदार व्यक्ति। जाबे गाममे रहैत,हरहरऔने रहैत। चीलम पीबाक आदी छल से साँझ कए सौटा लगा अबैत छल। गाममे चीलम पीबए हेतु कैक गोटे धारक कातमे एकट्ठा होइत छलाह। जाबे गाम रहए इहो ओतए जरूरसँ हाजिरी लगाबैत।

गामसँ अलीपुरद्वारि जाइत काल हमर आँगन अवश्य अबैत छल। सभकेँ पैर छुबि प्रणाम कए प्रस्थान कए जाइत। जाइत-जाइत अपन लोकसँ फटकी हेबाक दरेग फटैक। कानि कए कहैत-

“मलकानि! अहीं पर सभकेँ छोड़ि कए जा रहल छी।”

उपाये की रहैक। गाम-घरमे आब गुजर होइत नहि छल। जाबे से होइत छल, ताबे तँ कतहु नहि गेल। अपन गिरहथक सपरिवार सेवामे लागल रहल। मुदा समय बलवान होइत छैक। सभ किछु बदलि गेलैक। हरखूक आधा मोन अलीपुरद्वारि आओर आधा गाममे रहैत छलैक। बहुत अछता-पछता कए ओ परदेश बिदा भए गेल।

हरखूकेँ परदेश गेला मास दिन भेल हेतैक कि एक दिन बरहरबावाली जोर-जोरसँ दहाड़ि पाड़ि रहल छलि। चारूकातसँ

लोक जमा भए गेलैक। कतबो लोक पुछैक किछु बजबे नहि करैक। छातीमे जोरसँ मुक्का मारैत आओर कहैत-

"गरा कटि गेल। औ बाबूसभ। गरा कटि गेल।"

अहिसँ आगू किछु नहि। लोककेँ किछु बुझेबे नहि करैक। लोकक करमान लागि गेल। बरहरबावाली दहाड़ि पारि रहल छलि। गामक लोकसभ तरह-तरहक अनुमान लगाबए।

"कहीं हरखूकेँ तँ ने किछु भए गेलैक? आकि नैहरमे किछु उनट घटि गेलैक?"

तरह-तरहक कबाइत लोक करैत रहल। मुदा बरहरबावालीक हाकरोस करबाक रहस्य नहि बुझएमे आएल। ई धमाचौकरी चलिए रहल छल कि अँगनासँ बाहर एकटा बाँसक चोंगा भेटलैक। केओ ओकरा बरहरबावाली लग उठौने आएल। चोगा देखिते बरहरबावाली बकए लगलैक-

"एहीमे पाँच सए टाका रखने छलहुँ। सभटा टाकामे घून लागि गेल, औ बाबूसभ!"

खुंडी-खुंडी काटल टाकाक बुकनी बनि गेल छल। आब लोक बुझलक जे ओ एतेक किएक छाती पीटि रहल छलि। मुदा आब भइए की सकैत छल? जे क्षति हेबाक छलैक से भए गेलैक। आब ओ लौटि थोड़े आएत। चारूकातसँ सभ ओकरा बुझाबक प्रयास केलक। मुदा ओ कनैत-कनैत थाकि कए निष्प्राण सन भए ऑगनमे टगि गेल। लोकसभ एक-एक कए ससरि गेल।

एहि तरहक हृदयविदारक दृश्यक कोनो समाधान गाम-घरमे नहि छल। एक तँ गरीब-गुरबा लग टाका रहिते ने छलैक। आओर यदि कतहुसँ किछु आमदनी भेबो कएल तँ ओ कर्जाक सुदि

सधबएमे चल जाइत छलैक। सभकेँ एहि बातक छगुन्ता लगैक जे बरहरबावालीकेँ एतेक टाका कतएसँ आएल?

बहुत दिनक बादमे गाममे रामलीला पार्टी आएल छल। अगहनी बीति गेल रहैक। सभक घर-ऑंगन अन्न-पानिसँ भरल रहैक। घरे-घर हकार दए गेलैक। महादेव मन्दिर लग राम लीला पार्टीक टेंट लागल छल। धिआ-पुतासभ एहि बातसँ अतिशय प्रसन्न छल।

गाममे रामलीलाक आयोजन उत्सव जकाँ मनाओल जाइत छल। ओकर सभहक खेबा-पीबाक व्यवस्था गामक लोकसभ करैत छल। ताहि हेतु रामलीलाक मंचपर लोककेँ भगवानकेँ माला पहिराबक हेतु आवाहन कएल जाइत छल। जे भगवानकेँ माला पहिरबितथि हुनके एक दिनका मण्डलीक भोजनक व्यवस्था करक होइत छलनि। मंचसँ हुनकर नामक एलान होइत छल। लोकसभ हुनकर जयकारा लगबैत छल। आओर तकर बादे रामलीलाक कार्यक्रम प्रारम्भ होइक।

साँझ पड़िते लोक रामलीला देखए बिदा होइत। लग-पासक धिआ-पुतासभ आगू बैसबाक हेतु पहिनहिसँ तैयारी केने रहथि। लोकक संख्या बढ़िते जाइत छल। रामलीलाक बीच-बीचमे तरह-तरहक हास्यक मंचन होइत छल जाहिसँ लोकक मोन लगैक। करखनहुँ काल फिल्मी गीत सेहो लोकक फरमाइसपर गाओल जाइत छल। करीब मास भरि चलए वला एहि आयोजनक अन्त राज्याभिषेकसँ होइत छल। भगवानकेँ घरे-घर घुमाओल जाइत छल। लोकसभ यथा साध्य टाका, अन्न-पानि चढ़ाबैत छलाह। ❑

३१.

ओहि साल कृष्णाष्टमीक अवसरपर आश्रममे उत्सव भेल। से तेहन भेल जे देखए वला रहैक। लगैक जेना समस्त वृन्दावन उमरि पड़ल अछि। गबैआसभ कृष्ण भजनक से सुर-तान धेलक जे सभक हृदय ओ मोन कृष्णमय भए गेल।

भजनानन्ददासजी महराजक जय! कीर्तन मण्डली महराजजीक पाछू-पाछू गबैत-नचैत चलि रहल छल। सभक गाल अबीरसँ झक-झक, लाल टुह-टुह कए रहल छल। मृदंग, ढोल, झाइल ओ नगाराक स्वरक संग भजन गायक पंक्तिबद्ध चलि रहल छलाह। एहन भारी उत्सव तँ बिरलैके देखएमे अबैत छल। आश्रमवासी दूसएसँ अधिक विधवासभ एकस्वरमे भजन करैत, नचैत-गबैत पाछू-पाछू चलि रहल छलि। एहि तरहेँ समस्त वृन्दावनक परिभ्रमण कए जखन साँझमे भजनानन्दजी सदल-बल आश्रम वापस अएलाह तँ प्रसन्नता ओ विजयक दर्पसँ हुनकर मुख मण्डल प्रात:कालीन भगवान भास्कर सन रक्तिम आभासँ ओत्-प्रोत् लागि रहल छल। ताबतेमे आश्रमवासी चेला, चेलीसभ जोरसँ चिकरल-

“भजनानन्ददास महराजक जय!”

ई एकटा महज संयोगे रहैक जे ओहि समय हमसभ सेहो वृन्दावन गेल रही। बहुत दिनसँ भजनानन्ददास माने गरम सिंहक किछु समाचार नहि बुझाइत छल। खबासिनी गाम आएलि तँ ओकरो किछु समाद नहि रहैक। बहुत दिनसँ कतहु बहराएलो नहि रही, से मोन उबि गेल रहए। तँ सभगोटेकेँ विचार भेलैक जे तीर्थ

चली। एहिबेर हमर सासु गामे रहि गेलीह। कारण केओ-ने-केओ तँ ओतए बच्चासभक देख-रेख हेतु चाही। तेँ हम दुनू बेकती, हमर ससुर आओर गामक तीनटा मसोमातसभ संगे बिदा भेलहुँ। खबासिनीकेँ सेहो संग लए लेलिऐक जाहिसँ रस्तामे आओर ओहूठाम मदति करत।

मदति ओ की करत? वृन्दावन पहुँचिते दुखित पड़ि गेलि। आब तँ पहिने ओकर इलाज कराउ। ताहीक्रममे सभक विचार भेलैक जे भजनान्द दासेक मदति लेल जाए । परन्तु ओहिठाम तँ जबरदस्त उत्सवक माहौल छल। के ककरा पुछैए? तथापि हमसभ ओही आश्रममे डेरा लेलहुँ। संयोगसँ बगलेमे एकटा बैद रहथि। ओ किछु जड़ी-बुटी देलथि जाहिसँ खबासिनी शीघ्र नीक भए गेल।

भजनानन्ददासकेँ देखि कए के कहत जे ई ओएह–गरम सिंह थिक। नाकपर ठढ़का चानन, त्रिपुंड, पिअरका वस्त्र, राधे-राधे लिखल दोशाला सदिखन ओढ़ने चलैत तँ राधे, बजैत तँ राधे, हँसैत तँ राधे! राधे!

की कमाल छैक? समय ओ परिस्थिति जे नहि कए दैक। हमरा लोकनिकेँ देखि भजनानन्ददास (उर्फ गरम सिंह) तुरन्त अपन चेलाकेँ पठओलक आओर समाद दिओलक जे साँझमे निचैनसँ गप्प-सप्प करब। ओहिना गाम वापस नहि चल जाथि। इसकूलिआ संगी छल। सन्तक वगए से धए लेने छल। स्पष्टत: ककरो अहित करैत नहि देखाइत छल। तेँ सभहक विचार भेलैक जे साँझमे ओकर भेँट कएल जाए।

साँझ पड़िते दूटा चेला हमरासभकेँ संग कए भजनानन्ददासजी महराज लग लए गेल। हमरासभ कि दण्डवत

होइतहुँ- जे पहिने ओएह हाथ जोड़ि ठाढ़ भए गेल। कुशल-क्षेम पुछलक। मसोमातसभक परिचय पाती भेलैक। ओकरा पता रहैक जे काल्हि भेने हमसभ काशीक हेतु प्रस्थान कए जाएब। हमरा लोकनिक बहुत मान-दान भेल। यथेष्ट बिदाइ भेटल आओर अबैत रहबाक आमंत्रण सेहो।

भजनानन्ददासक विनीत व्यवहार देखि पाथरो पानि भए जाइत। हमसभ तँ मनुक्खे रही। फेर हम तँ ओकर इसकूलिआ संगी रहिऐक। मसोमातसभकेँ सेहो ओकर व्यवहार नीक लागि गेलनि। ओसभ किछु दिन आओर ओहि आश्रममे रहबाक हेतु तैयार भए गेलीह। ताहि बातसँ भजनानन्ददासजी अत्यन्त प्रसन्न भेलाह। चेलासभकेँ हुनकासभक उचित देख-रेख करबाक आज्ञा देलखिन। हमसभ पूर्व निर्धारित कार्यक्रमसँ काशी बिदा भए गेलहुँ।

काशी, प्रयाग होइत हमसभ गाम वापस अएलहुँ आओर खबासिनी ओम्हरेसँ गाम चलि गेलि। गाम जाइत काल दरभंगा टीसनपर ओ हमरा असगर पाबि कानमे कहलक जे भजनानन्ददास ओकरा चिन्हलकैक। गाम-घरक हाल-चाल पुछैत रहैक आओर अबैत काल भरि ऑंजुर चानीक सिक्का पकड़ा देलकैक। कहलकैक जे एकरासँ अपन घर बान्हि लिअह। गौंवा, घरुआ जे जतए देखेलैक सभकेँ ओ अपना भरि स्वागत केलक। ककरो उपेक्षा नहि होमए देलकैक।

भजनानंद दासकेँ चिन्हि तँ हमहुँ गेल रहिऐक ,मुदा हमरा ओकरासँ किछु लेबाक मोन नहि केलक। अपना भरि ओ बहुत आग्रह कएलक। जे छैक, मुदा एतबा तँ तए रहैक जे ओ भगवानक शरणागत भए गेल रहए। जटा- जूट बढ़ा लेने रहए कि बढ़ि गेल

रहैक। मुदा गाम घरक लोककेँ कनिको उपेक्षा नहि करैक। ❑

३२.

गाम अबितहिं ओकरा पुष्पाक समाचार भेटलैक। पुष्पा मास्टर साहेबक नवजागरण मंचक सदस्यता लए लेने छलि। बेटा राजकुमारक उग्रवादी सोचक प्रगतिशील विचारमंचक मूर्धन्य नेता छलैक ,मुदा ओ मास्टर साहेबक इमान्दार छविसँ प्रभावित रहए। फेर दुनू गोटे संगे मनोरोगी अस्पताल काँकेमे साल भरि समय बितओने रहल। बादमे डाक्टर भेद खोललक जे दुनू स्वस्थे छल। ककरो दिमाग खराप नहि रहैक। मानसिक अवसादक कारण व्यवहार गड़बड़ा गेल रहैक।

जे होइक, मुदा घरेमे वैचारिक मतभेद ओहो माएक संग राजकुमारक हेतु एकटा कठिन परिस्थिति जरूर उत्पन्न कए देने छल। तकर समाधान हेतु राजकुमार मास्टर साहेब ओहिठाम पहुँचल। मास्टर साहेब राजकुमारकेँ देखि बहुत प्रसन्न भेलाह। राजकुमार सभटा बात मास्टर साहेबकेँ कहलकनि। आखिर ओ हुनकर विद्यार्थी रहि चुकल छल। मास्टर साहेबक कोनो बात काटए जोगर नहि होइत छलैक। ओ जनाधार पार्टीक रुखिसँ असहमत छलाह। कारण ओकरामे वैचारिक इमान्दारीक अभाव रहैक। मुदा प्रगतिशील विचारमंचक सेहो समर्थन नहि कए सकैत छलाह। कारण उग्रवादसँ फिरंगीक लोहा लेब सम्भव नहि छल। सामाजिक परिवर्त्तन तँ मास्टर साहेबक मूलमंत्र छलनि।

सैद्धान्तिक रूपसँ राजकुमार मास्टर साहेबसँ सहमत छल। मुदा एकर कार्यान्वयन कोनो होएत। कारण ओकरा गुटमे आधा

आदमी तँ भूतपूर्व डकैत छल जे गाहे-बगाहे ओकर संग भए गेल छल। डकैती आब छोड़ि देने छल ,मुदा अतीत ओकरा सभक पछोड़ कए रहल छल। एहिसभक समाधान हेतु मास्टरे साहेब विचार देलखिन जे अरुणसँ भेँट कए एहन लोकसभकेँ आम माफी दिआबक प्रयास कएल जाए जाहिसँ ओसभ खुलि कए राष्ट्रक मुख्यधारासँ जुड़ि सकए।

राजकुमारकेँ ई विचार बहुत नीक बुझेलैक। मास्टर साहेबक संग कए अरुणक डाक बंगला दिस बिदा भए गेल। मोन भेल जे एक बेर अरुणसँ भेँट कएल जाए। बच्चाक दोस्त छल, हमर नैहरक छल, तेँ जिज्ञासा स्वभाविक। हुनका कहलिअनि तँ सहर्ष तैयार भए गेलाह। हमसभ बिना कोनो पूर्व सूचनाकेँ दरभंगा कलक्टरक डेरापर पहुँचि गेलहुँ। ओहि डेराक रूप-रंग देखि कए लगैक जे कोनो पैघ आदमी ओतए आबि गेल छी। कतेको नोकर-चाकरसभ लागल छल। फूल-फलसँ भरल छल। कतेको गोटे कलक्टर साहेबसँ भेँट करए आएल रहथि। मुदा पीए जखने हमर नाम कहलकैक ओ तुरन्त अपने बाहर आबि गेलाह आओर हमरा देखिते बहुत प्रसन्न भेलाह। हमसभ अन्दर अतिथि कक्षमे बैसिले रही कि मास्टर साहेब, राजकुमारक ओहिठाम आगमनक सूचना भेटल। अरुण हुनकर विद्यार्थी रहि चुकल अछि।

राजकुमार तँ इस्कूलिया संगी रहैक। अरुणकेँ जखने खबरि भेटलैक, तुरन्त ओकरोसभकेँ ओहीठाम बजा अनलक। ओकर अंग्रेजी पत्नी एंगल जरूरी काजसँ पटना गेल रहैक। सौंसे डेरा खालिए छल। तीनटा इसकूलिआ संगी, हम, अरुण आओर राजकुमार मास्टर साहेबक संगे एकट्ठा भए गेल रही। सभक बहुत

खातिर भेल। गप्प-सप्पक क्रममे मास्टर साहेब प्रगतिशील विचारमंचक चर्चा केलथि। ओ जखने से बात शुरू केलथि तँ अरुण टोकलकनि जे अहाँ तँ नव जागरण मंच बनौने छी। फेर प्रगतिशील विचारमंचसँ की लेना-देना? ताहिपर मास्टर साहेब कहलखिन जे दुनू संस्था अलग-अलग काज कए रहल अछि। दुनूक उद्देश्यमे कोनो बेसी अन्तर नहि छैक। हमसभ आपसमे मिलि कए फिरंगीसँ संघर्ष करए चाहैत छी। मुदा एहिमे परेसानी आबि रहल अछि।

अरुण हुनका दुनू गोटेकेँ दोसर कोठरीमे लए गेल आओर सभ बात विस्तारसँ सुनि कहलक जे हम फिरंगीसँ प्रगतिशील विचारमंचक कार्यकर्त्ता सभपरसँ पुरना केस सभ हटा लेबाक अनुशंसा कए देबैक ,मुदा हिंसाक रस्ता छोड़ए पड़तैक। सभकेँ लिखित शपथपत्र देबए पड़तैक जे ओसभ आगू एहि तरहक काज नहि करत। मास्टर साहेब आओर राजकुमार तुरन्त एहि बातमे सहमति दए देलथि। एहिसँ नीक प्रस्ताव भइए की सकैत छल?

गप्प-सप्पक बाद ओसभ हमर कोठरीमे आबि गेलाह। ताबे हमसभ चाह-जलखै कए लेने रही। कनीकाल आरामो केने रही। मास्टर साहेब अतिशय प्रसन्न रहथि। राजकुमार सेहो आश्वस्त छल। सभ अपन-अपन जगहपर बैसि आगूक कार्रबाइक योजना बना रहल छलाह कि केओ धरफराएल अन्दर आएल। ओ राजकुमारक हाथमे एकटा पुर्जी देलक। राजकुमार ओकरा पढ़िते चिन्तित भए गेल। सभ पुछए लगलैक- “की भेल?”

मास्टर साहेबकेँ सेहो चिन्ता होमए लगलनि। राजकुमारक माए पुष्पा बहुत दुखित छलैक। जखन राजकुमार गामसँ बिदा भेल रहए तखनो ओकर हालति ठीक नहि रहैक। ओ मास्टर साहेबक संगे चोट्टे गाम बिदा भए गेल। हमसभ ओतहि अटकि गेलहुँ।

कारण नीकसँ गप्प करक इच्छा छल। एक युगक बाद ओकरासँ भेँट भेल छल। इसकूलिआ संगी तँ छलहे, हमर पितिऔतो छल से ओकर व्यवहारमे लक्षित भए रहल छल। हमरासभ अरुणक सत्कारसँ बहुत प्रसन्न रही। सभ तरहक सुविधासँ सम्पन्न ओहि डेरामे अभाव छल तँ ओकर पहिल पत्नीक जे तमसा कए किंवा आक्रोशमे डेरा छोड़ि नैहर चलि गेल रहथिन।

भोर होइते हमरा लोकनिक हेतु गरम-गरम चाह आबि गेल। सर्किट हाउसक डिलक्स कोठरीमे हम दुनू गोटे रही। लगए जेना दोसर देश पहुँचि गेल छी। कतए गामक परिवेश, कहाँ कलक्टरक आवासक सम्पन्न परिसर ओ सुसज्जत सर्किट हाउस। कनीकालमे अरुण अपने आएल। सभगोटे संगे चाह पीलहुँ। चाह पीबैतकाल गप्प-सप्पक क्रममे धिआ-पुताक चर्च स्वाभाविकसँ भेलैक। बच्चासभक, खास कए बेटीसभक पढ़ाइ लए कए हम बहुत चिन्तामे रही। अरुणक उदारताक वर्णन लोकक मुहेँ सुनैत रहिऐक। से सद्य: तखन देखलिऐक जखन ओ तुरन्त बच्चासभक पढ़ाइक जिम्मा उठा लेलक। सरकार दिससँ बहुत रास छात्रवृत्ति अबैत छलैक आओर एमहर-ओमहर भए जाइत छलैक।

अरुणक एहि आश्वासनसँ मोन प्रसन्न भए गेल। फेर आओर-आओर प्रकरणसभपर गप्प होमए लागल। हमसभ भोरे जे बैसलहुँ से ९ बाजि गेल। अरुणकेँ कार्यालय जेबाक रहैक। पहिनेसँ तय कैकटा बैसारमे से जेबाक रहैक। जाइत-जाइत अपन पहिल पत्नी उमाक चर्च कए गेल आओर आग्रह केलक जे ओकरा मनाओल जाए। अरुण ओकरो अपना ओहिठाम राखबाक हेतु तैयार छल। उमाक नैहर हाजीपुर लग नवगाम हमरसभक गामसँ फटकी रहैक

तथापि ओकरा आश्वासन दए हमसभ गाम बिदा भेलहुँ। समस्या जटिल तँ भइए गेल रहैक। उमाक नैहर बेस धनाढ्य छलैक। ओसभ कोनो मामिलामे अरुणसँ उन्नैस नहि रहैक, बीसे रहैक। उमाक भाएसभ बड़का-बड़का हाकिम रहथि। पिता धनीक ओ प्रतिष्ठित जमींदार रहथिन। तरवने मोतीपुर ड्योढ़ीमे अरुण सन बरसँ बेटीक बिआह केलथि। मुदा समय बलवान होइत अछि। लोक सोचैत अछि किछु, भए जाइत छैक किछु।

ओमहर गाम पहुँचितहिं राजकुमारक मोन कोनादन भए गेलैक । जेना किछु असगुन घटित भए गेल हो। पोखरिक लग पहुँचले छल कि रमुआ भेटलैक। ओकरा देखिते भोकासी पाड़ि कए कानए लगलैक रमुआ। कनैत-कनैत बाजल-

“मालकिन नहि रहलीह...।”

कनैत-कनैत ओ राजकुमारसँ लपटि गेल। की-की कहैत रहल। राजकुमार तँ अपने अबाक रहए, एना असमयमे माए चलि जेथिन से नहि सोचि सकल रहए। मुदा भावी...। राजकुमारक कनैत-कनैत आँखि लाल भए गेल। जमीनपर प्राणहीन, निःशब्द, अचल पड़ल ओकर माए तुलसी चौरा लग उत्तर मुहेँ राखल छलीह। चारुकातसँ लोकसभ घेरने छलाह। राजकुमार दण्डवत भए हुनका प्रणाम करबाक हेतु आगू बढ़ल कि ठामहि खसि पड़ल। ❑

३३.

अरुण कार्यालय गेल ,मुदा काल्हिसँ आइ धरि भेल घटनाक्रम बेर-बेर मोनमे घुमैत रहलैक। केओ ई नहि सोचि सकैत

छल जे मास्टर साहेब सन नीक लोकक खिलाफ जासूसी चलैत हो। मुदा सत सएह रहैक। अंग्रेजक राज रहैक। जे केओ देशभक्त छल ओकरासभपर फिरंगीक वक्र दृष्टि रहैक। लोककेँ पता होइक नहि होइक ,मुदा ओकर हिसाब-किताब फिरंगीक ओहिठाम राखल जाइत छल। के कतए गेल,ककरा ककरासँ भेँट केलक- सभ बातक जानकारी ओकरा रहैत छल।

कार्यालयमे प्रगतिशील विचार मंच आओर नव जागरण मंच सहित अन्य एहन संचिकासभ मंगओलक। संचिका देखि ओ दंग रहि गेल। आश्चर्य लगलैक जे एतेक असत्य खबरिसभ कोना आओर ककरा माध्यमसँ अबैत रहल। एताबत ई बुझा गेलैक जे मास्टर साहेबक बातपर अमल करैत तथाकथित विद्रोहीसभकेँ माफी देब आसान नहि छलैक। मुदा ओ प्रयास करैत रहल।

किछु दिनक बाद फेर घुमैत फिरैत हमसभ अरुणक डेरापर पहुँचलहुँ। एहि बेर हमर चारू बच्चा संगे छल। तीनू बेटीक कालेजमे नाम लिखाबक छलैक। एहि बातक चर्च होइतहि अरुण तुरन्त अपन पीएकेँ घण्टी दए बजओलक आओर आज्ञा देलक जे तीनू बच्चाक नाम पटना कालेजमे लिखा देल जाए आओर तीनूक रहबाक ओ अन्य खर्चाक प्रबन्ध हेतु पर्याप्त छात्रवृति स्वीकृत सेहो कए देल जाए। आखिर तँ ओ जिलाक कलक्टर छल। तीनू बेटीक नाम पटना कालेजमे लिखा गेल। छात्रावासमे रहबाक व्यवस्था भए गेल आओर मासिक छात्रवृत्तिक पहिल अग्रिम भूगतान सेहो भए गेल।

हमरा उम्मीदसँ बेसी मदति अरुणसँ भेटल। ओकरा हृदयसँ धन्यवाद दैत हमसभ दोसर दिन गाम वापस बिदा होइत रही।

अरुण उमाक हाल चाल पुछए लागल। हमसभ हाजीपुर लग स्थित नवगाम जाए उमासँ भेँट कए आएल रही, मुदा ओहिठाम भेल बातकेँ कहबाक हिम्मति नहि भए रहल छल। मुदा अरुण तँ तेज आदमी छल। ओ हमरा लोकनिक भाव भंगिमासँ सभ बात अखिआसि लेलक आओर एतबे आग्रह केलक जे एकबेर ओकरा उमासँ भेँट करबा दैक, कारण व्यक्तिगत स्तरसँ ओ एहिमे सफल नहि भए सकल छल।

एमहर हमसभ गाम पहुँचले छलहुँ कि मास्टर साहेब, राजकुमारक शीघ्रे एक हेबाक समाचार भेटल। मास्टर साहेब ओ राजकुमारक वैचारिक मतभेद परिस्थितिजन्य कारणसँ कम भेल जा रहल छलनि। ओसभ तँ जनाधार पार्टीक मुखिआ चेतनसँ सेहो गप्प करए चाहैत छलाह। उद्देश्य ई छल जे समस्त राष्ट्रवादी शक्ति एक भए फिरंगीकेँ देशक बाहर करए। देश स्वतंत्र होएत तँ सभ रस्ता अपने खुजत। पराधीन सपनहुँ सुख नाही। से बात आब सभक मोनमे धसि गेल छलैक। पहिनहुँ ई बातसभ जनैत छल, मानैत छल, मुदा आपसी मतान्तरक नफा फिरंगीसभ उठबैत रहल।

फिरंगीसभकेँ जासूसी खबरि भेटि गेलैक जे राष्ट्रवादीसभ एक भए रहल अछि। ओकरासभहक हेतु ई कोनो शुभ समाचार नहि छल। सभ वरिष्ठ अधिकारीसभक बैसार भेल। विचार रहैक जे जनाधार पार्टीक प्रगतिशीलमंचसँ फराके रखबाक प्रयास होइक। ताहि लेल मास्टर साहेब ओ राजकुमारक एकटाकेँ प्रोत्साहित कएल जाए। ताहिपर अरुण अपन बात रखैत जोर देलक जे ई तखने सम्भव होएत जखन कि ओकरासभक खिलाफ मोकदमासभ वापस लेल जाए। कहक मतलब जे आम माफीक

एलान कए देल जाए। सभ अरुणक प्रस्ताव मानि गेल। किछुए दिनमे मास्टर साहेब ओ राजकुमारकेँ अरुणक कार्यालयसँ बजाओल गेल आओर सरकारी एलानक चिट्ठी देल गेल जाहिमे प्रगतिशील विचार मंच आओर नव जागरण मंचक कार्यकार्त्ताक नाम तमाम मोकदमासभसँ हटा देल गेल। ओकरासभकेँ आम माफी दए देल गेल। डिगडिगिआ पिटि कए एहि बातक एलान गाम-गाम कए देल गेल। निश्चय ई मास्टर साहेब ओ राजकुमारक हेतु बहुत नीक दिन छल। परोपट्टामे ओकरसभहक नारा लागि रहल छल।

ओहि समयमे हमरा लोकनि अपन गामसँ सिमरिआ मास करए गेल रही। गाम-गामक लोकसभ ओहिठाम एक मास गंगाक कछारमे टेंट खसाए भोरे-भोर गंगा स्नान कए पूजा पाठ करैत अछि। नव नव लोकसँ परिचयक अवसर भेटैत छैक। गाम घरक चिन्तासँ किछु दिनक हेतु मुक्ति भए जाइत अछि।

ओहि माघ मेलामे नवगामक लोकसभ सेहो रहैक। हमर नैहरक लोक सेहो रहैक। सभक आपसमे क्रमश: भेँट-घाँट होइत होइत बात खुजलैक जे उमा सेहो मास करए आएल छथि। हम एक दिन असगरे हुनकर बासा दिस गेलहुँ। संयोगसँ ओ बाहर निकलिते रहथि। नवगाम लोकक डेरा दूरेसँ केओ देखा देने रहए। हमरा हुनका एकबेर भेँट भेल रहए, मुदा एक्कहि बेरमे कतेक गप्प कएल जाइत। अपना भरि बुझाबक प्रयास केने रहिऐक। एहिबेर एसगरि पाबि विस्तारसँ गप्प भेल।

उमाक संग अन्याय तँ भेले रहैक। ओ चुपचाप से सहि जाएवाली नहि रहथि। हुनकामे दृढ़ता ओ निष्ठा भरल छल। सत्य

ओ न्यायक हेतु ओ कोनो हद धरि लड़ि सकैत छलीह। हुनकर इएह व्यक्तित्व तँ अरुणक डरक कारण छल। ओ जनैत छल जे उमा प्रतिकार करतीह। एही डरसँ ग्रसित भए ओ किछु बीचक रस्ता निकालबाक प्रयासमे छल। मुदा उमा तँ एकदम एहि पार वा ओहिपारक तैयारीमे छलि। ओकर तर्कक आगू हम किछु नहि कहि सकलिऐक। ❑

३४

आममाफीक एलानमे भजनानन्ददास उर्फ गरम सिंहक नाम सेहो रहैक। ई शुभ समाचार देबए मास्टर साहेब राजकुमारक संग कए स्वयं देबए गेलाह। ई तँ एकटा बहाना रहैक, असलमे हुनकासभक इच्छा रहनि जे भजनानन्ददासजी महराजसँ भेँट कए स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ आग बढ़ाबक जोगार कएल जाए। किछु आर्थिक मदतिक सेहो प्रयोजन रहनि।

भजनानन्ददासक यश चारूकात पसरि गेल छल। देशक कोन-कोनसँ भक्तगण ओहि आश्रममे आबि शान्ति लाभ करैत छलाह। भजनानन्दजीक व्यक्तित्व ओ चरित्र दिन प्रति दिन चमकि रहल छल। लोकसँ स्वेच्छासँ प्राप्त अकूत धनक उपयोग ओ जन कल्याणमे करैत छलाह। हुनकर आश्रममे अध्यात्मक व्यवहारिक स्वरुप देखबामे अबैत छल। आश्रममे रहनिहार विधवासभ पूर्ण सुरक्षित ओ आनन्दमे रहैत छलीह। दू सएसँ बेसीए विधवाक पालन पोषण हुनकर आश्रममे होइत छल। वृन्दावनेमे नहि अपितु चारूकात भजनानन्ददासक आश्रमक यश छल।

भजनानन्ददास भजन करैत-करैत वस्तुत: संत भए गेल छलाह। संगहि विशुद्ध राष्ट्रवादी विचारक छलाह। फिरंगीसभकेँ

हुनकर बढ़ैत प्रतापसँ डर होइत छलैक। तेँ हुनका केसमे फसाबए चाहलक ,मुदा सत्यक विजय भेल। ओ ई बात बुझैत रहथि।

दोसर दिन साँझमे मास्टर साहेब ओ राजकुमार आश्रम पहुँचलह। ओहि समय आश्रममे आरती चलैत रहैक। भजनानन्दजी इसारासँ हिनकासभकेँ ओतहि रुकबाक हेतु कहलखिन। आश्रमक आरती तँ नामी छल। संत, महात्मा, गृहस्थ, विधवासभ मगन भए आरती करथि ओ राधे! राधे!क भजन सेहो। हारमोनियम, ढोल, झाइलक संग सूरदासक भजन सुनि तँ कतेको भक्तगण भाव विह्वल भए नृत्य करए लगैत छलाह। करीब डेढ़ घन्टा भरि ई कार्यक्रम चलल। तकर बाद प्रसाद वितरण भेल। हमरोसभकेँ प्रसाद भेटल। प्रसाद अतिस्वादिष्ट होइत छल। होइत छल जे खाइते रही।

आरतीक बाद भजनानन्दजी हमरासभकेँ अपन कक्षमे बजा लेलथि आओर सभ बात ध्यानसँ सुनलथि। ओ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलथि जे हुनका आओर आश्रममे हुनका संगे रहनिहार हुनकर चेलासभपर सँ पुरनका मोकदमासभ सरकार वापस लए लेलक। मास्टर साहेब बात आगू बढ़बैत कहलखिन जे स्वतंत्रता आन्दोलनमे गति देबाक काज छैक। आपसी संगठन मजगूत कए फिरंगी सरकारपर आक्रमणक प्रयोजन छैक। ताहि हेतु ओसभ प्रगतिशील विचार मंच ओ जनजागरण मंचक विलय करए चाहैत छथि। प्रयास तँ इहो भए रहल अछि जे जनाधार पार्टीक सेहो सामिल कए समस्त जनशक्तिकेँ संगठित कएल जाए ,मुदा जनाधार पार्टी वलासभ आगू-पाछू कए रहल छल। ओकरासभमे असलमे सही नेतृत्वक अभाव छल।

भजनानन्ददास एहि बातसभसँ बहुत प्रसन्न भेलाह जे स्वतंत्रता आन्दोलन आब गति पकड़ि रहल अछि। अपना दिससँ ओसभ प्रकारसँ सहयोगक आश्वासन देलाह। तय इहो भेल जे एकमास बाद दरभंगामे एकटा सम्मेलन कएल जाएत जाहिमे प्रगतिशील विचार मंच ओ जनजागरण मंचक आपसी विलय भए जाएत। ❑

३५.

जाबे अरुण ओ एडली लन्दनमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत रहए ताबे दुनू गोटे दू देह आओर एक आत्मा छल। अरुण सोचैक तँ एडली बजैक। एडली सोचैक तँ अरुण बजैक। दुनूक दोस्ती से परमान चढ़ल जे दोसरसभकेँ इर्ष्या होमए लगलैक। केओ-केओ चौल करैक जे ई दुनू कहीं आपसेमे ने बिआह कए लिअए। जा धरि ओसभ संगे रहल दिन रातिक कोनो पता नहि चलैक। दुनू संगे पढ़ए, संगे टहलए आओर संगे खाए यद्यपि दुनूकेँ छात्रावासमे अलग-अलग कोठरी रहैक ,मुदा बेसी काल दुनू एक्केठाम रहए। प्रेमक पराकाष्ठा कहल जाए तँ हर्ज नहि।

मुदा एकरसभक प्रेमक बीचमे आबि गेलैक एंगल। एंगल एडलीक मित्र छलैक। ओ एडलीक शिक्षको रहैक। मुदा ताहिसँ की? पाश्चात्य संस्कृतिमे ईसभ चलैत छल। अरुणक एडलीक संग घनिष्टताक कारण एंगलक अरुणो लग उठब बैसब होइते छल। देखए सुनएमे अरुण आकर्षक छलहे संगहि ओकर प्रतिभाक चर्च सगरे कालेजमे छल।

एक दिन एडली ओ एंगल पिकनिक मनाबए लन्दनक

लगीचक झील जा रहल छल। एंगल कहलकैक जे अरुणोकेँ संग कए लेल जाए। एडली ई प्रस्ताव अरुण लग रखलक तँ ओ सहर्ष तैयार भए गेल। तीनू झीलक कातमे बैसल छल। जाड़क समयमे हल्लुक रौद ओकरासभपर पड़ि रहल छल। झीलक चारूकात अर्द्धनग्न जोड़ीसभ अपना-आपमे मस्त छल। केओ ककरो देखत से होस नहि रहए।

एहन मनमोहक ओ उत्तेजक वातावरणमे एडली, एंगल ओ अरुण एक दोसरकेँ देखि रहल छल। एंगलकेँ की फुरेलैक जे ओ अरुणकेँ हाथ धए चलि गेलि। एडली देखिते रहि गेल। तहिआसँ अरुणक एंगलसँ आकर्षण बढ़िते गेल। साँझमे एडली, एंगलमे कहा-सुनी भेलैक। मुदा एंगल अपन जिद्दपर अड़ि गेलैक। ओ अरुणक प्रति अपन आकर्षणक आगू किछु नहि सोचि सकलि। एडली ओकर पुरान दोस्त रहैक, मुदा सेहो पाछू रहि गेलैक। एडली बाजी हारि चुकल छल।

एडली बुधियार छल। ओ बातकेँ बतंगर बनबएमे विश्वास नहि करैत छल। तेँ स्थितिसँ समझौता करैत ओ अरुणसँ अपन मित्रता बनओने रहल। एंगलसँ विचार करएमे सेहो कोनो फएदा नहि छलैक। तेँसभ चुपचाप सहि गेल। तकर फएदा ओकरा भेलैक। गाहे-बगाहे एंगल ओकरो ध्यान रखैत रहलि। एहि तरहेँ अरुण, एडली आओर एंगलक तिकड़ी बनि गेल, ताबे ओहिना रहल जाबे अरुण लन्दनमे रहए।

अरुण प्रशासकीय सेवामे उत्तीर्ण भए गेल छल। तकर बाद ओकरा अपन देश वापस अयबाक रहैक। एंगल संगहि जएबाक हेतु जिद्द कए देलकैक। एडली सेहो एहि हेतु अरुणकेँ बुझओलक। अन्तगोगत्वा, अरुण ओ एंगल संगहि दरभंगा पहुँचलथि। ❑

३६.

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार दरभंगामे प्रगतिशील जागरण मंच ओ जनजागरण मंचक राष्ट्रीय कार्यकारिणीक सम्मेलन बजाओल गेल। देश भरिसँ ज्ञात-अज्ञात करीब पाँचसए प्रतिनिधि भाग लए रहल छलाह। दरभंगाक राज मैदान टेंटक सहर बनि गेल छल। कतहु लाल, कतहु हरिअर झंडा फहरा रहल छल। राष्ट्रभक्तिसँ भरल ओजस्वी गीतसभ बजाओल जा रहल छल। एहि वातावरणमे रहि-रहि कए तरह-तरहक सूचना प्रसारित भए रहल छल।

जनाधार पार्टीक सेहो आमंत्रित कएल गेल छल। परन्तु ओसभ एहिमे भाग ली, नहि ली से दुबिधामे रहि गेलाह। स्वतंत्रताक लड़ाइ एकजुट भए लड़ब ई तँ नीक बात रहैक, मुदा नेतुत्वक समस्या ओझड़ाएल रहैक। अन्ततोगत्वा, तय भेल जे ओसभ फिलहाल यथावतक स्थितिमे रहत। माने अपन अलग आस्तित्व बनओने रहत। मुदा जनाधार पार्टीक नव निर्वाचित मुखिआ चेतन व्यक्तिगत स्तरपर आएल छल। ओकरा संगे दू-चारि गोटे आओर आबि गेल रहए।

कार्यक्रम प्रारम्भ होइते बंदे मातरम्-क नारासँ धरतीसँ आकाश एक भए गेल। सभ एक स्वरसँ “सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्” गबैत गबैत भाव विभार भए गेल। तकर बाद राजकुमार विस्तारसँ राष्ट्रीय परिद्दष्यक वर्णन करैत दुनू मंचक अंदरुनी स्थितिक चर्चा केलाह आओर घोषणा केलाह जे आइसँ दुनू मंचक विलय भए गेल अछि। आब एहि मंचक नाम राष्ट्रवादी दल रहत।

एतबे बात ओ कहने छल कि उमा अपन संगे पन्द्रह-२० टा महिलाक संगे नारा लगबैत मंच धरि पहुँचि गेलि। हुनकासभक हाथमे पट्ट छल जाहिपर मोट-मोट आखरमे लिखल छल-

“स्त्रीक सम्मान बिना स्वतंत्रताक गप्प निरर्थक थिक।”

आओर महिलासभक संगे उमाकेँ एहि तरहेँ आक्रामक देखि सभ सकदम भए गेलाह। बैसारक कार्यवाही रुकि गेल। जे जेना छल, तहिना रहि गेल। लगलैक जेना सम्पूर्ण वातावरणकेँ लकबा मारि देने हो। राजकुमार ओ मास्टर साहेबकेँ किछु फुरेबे नहि करनि।

बैसारमे भाग लैत अधिकांश लोक उमाक समर्थनमे बाजए लगलाह। ओहिमेसँ किछु गोटे तँ उमा लग आबि ओकरे संगे नारा लगबए लगलाह। आब की होएत? मास्टर साहेब स्वयं उठि कए उमा लग गेलाह। जन भावनाक आदर करैत उमाकेँ मंचपर लए अनलखिन। तकर बादे बैसारक कार्यवाही प्रारम्भ भेल। चारूकातसँ लोक उमाक समर्थनमे आबि गेल आओर आग्रह करए लागल जे उमाकेँ नवोदित राष्ट्रवादी दलक अध्यक्षा बनाएल जाए। मास्टर साहेब, राजकुमार उमासँ मंत्रणा कए हुनका राष्ट्रवादी दलक अध्यक्ष चूनि लेलक। ‘उमा देवीक जय’ सँ वातावरण गुंजायमान भए गेल।

राष्ट्रवादी दलक गठनसँ जनाधार पार्टीमे आपसी सिरफुटौअल बढ़ि गेल। पार्टी कतेको गुटमे बँटि गेल छल। पार्टीमे किछु गोटे राष्ट्रवादी दलक संगे विलएक पक्षधर रहथि। एहिसँ स्वतंत्रता आन्दोलन प्रखर होइत। मुदा पार्टीक बूढ़ नेतासभ चाहथि जे यथावत बनाओल रहए देल जाए कारण ओसभ अपन अपन

कुर्सीकेँ संकटमे नहि देबए चाहथि।

उमाकेँ राष्ट्रवादी पार्टीक अध्यक्षा बनबाक समाचार अरुणकेँ जासूसक माध्यमसँ भेटलैक। ओ अत्यन्त विचलित भए गेल। उमाक एहि तरहक प्रतिक्रियाक ओकरा आशा नहि रहैक।

माहौलकेँ गड़बड़ाइत देखि अरुण एंगलक संगे किछु दिनक हेतु लन्दन सरकारी यात्रापर चलि गेलाह। हमर माए दुखित पड़ि गेल छल। ओकरा असगरि बहुत परेसानी भए रहल छलैक। तेँ किछु दिनक हेतु हम अपन नैहर गेलहुँ जाहिसँ माएकेँ सेवाक अवसर भेटए। एक युगक बाद हम नैहर गेल रही। हमरा देखिते हमर माए बहुत प्रसन्न भेलि। लगलैक जेना तुरन्त ठीक भए गेलि, टन-टन बाजए लागलि।

असलमे ओ एकाकीपनसँ उबि गेल छलि। फेर दिआदसभ सेहो तंग करनि। सम्पत्तिमे हिस्सा नहि दैक जाहिसँ ओ बहुत दुखी छलि। हमर अपन काका सेहो गुजरि गेलाह। हुनका तीनटा बेटी रहनि। तेँ हमरसभक समस्त सम्पत्तिकेँ हमर पितिऔत काका हरपि लेबए चाहैत छल।

माएक स्वास्थ्य ठीक भेल। ओमहर हमरा सासुरसँ बिदागिरीक हेतु समाद आबि गेल छल। मासो दिन नैहरमे नहि भेल छल। मुदा कैक बेर बिदागरीक हेतु आदमी आबि चुकल। अन्तमे ओ स्वयं आबि गेलाह आओर हम सासुर बिदा भए गेलहुँ। ❑

३७.

"वृन्दावन बिहारी लाल की जय।" निरंतर भजन, कीर्तन ओ

प्रवचनमे तल्लीन भजनानन्ददासजी महराज अध्यात्मिक पराकाष्ठापर पहुँचि गेल रहथि। एकहि जीवनमे व्यक्तित्वक एहन रूपातंरण साइते होइत अछि । किन्तु जन्म-जन्मक संस्कार जोर मारैत अछि। जीवनक कतेको रहस्य अछि जकर गणितीय व्याख्या असम्भव। परन्तु सद्य: सत्य इएह छल जे एकटा डकैत गरम सिंह महान कृष्णभक्त भए गेलाह।

ततबे नहि लोक कल्याण हेतु सर्वस्व, समस्त सामर्थ्यकेँ अर्पित कए देने छलाह। जहिना ओहि आश्रममे धनक वर्षा होइत छल तहिना ओहि पैसाक जन कल्याण हेतु खर्च कए देल जाइत छल। कहबी छैक :

"पानी बाढ़े नावमे, घरमे बाढ़े दाम

दोनो हाथ उलिचिये, एही सयानो काम।"

एहि कथानकक भजनानन्दजी महराज एकटा जीवन्त उदाहरण छलाह। अपना लेल किछु नहि। "तेरा तुझको अर्पण" केँ चरितार्थ करैत छलाह, अपन आश्रम मानव जातिक कल्याण हेतु उपलब्ध कए देने छलाह।

आश्रममे तँ भजन कीर्तन चलिते रहैत छल। भण्डारा चलिते रहैत छल। भक्तगणसभ मृदंग, ढोलक, परवावज ओ झालि बजाए कृष्ण नाम संकीर्तन करिते रहैत छलाह। समस्त वातावरण ततेक धार्मिक ओ भावनापूर्ण रहैत छल जे ओहिठाम अएनिहार कोनो, केहनो व्यक्ति शान्तिक अनुभव करैत छल।

मुदा भजनानन्दजी एतबेपर नहि ठहरल छलाह। ओ अपन राष्ट्रक प्रति कर्तव्यसँ सेहो सचेत छलाह। हुनकर कहब छलनि जे जा धरि भारतमाता परतंत्रताक बेड़ीसँ जकड़ल छथि, ता धरि स्वर्गो

व्यर्थ थिक। मुक्तिक कामना अन्याय थिक।

"के बोले मा तुमि अबले... ।" नहि, नहि, भारत माता अवला कदापि नहि भए सकैत छथि। कोटि, कोटि हुनक संतान हुनक प्रतिष्ठा ओ स्वतंत्रताक रक्षा हेतु सर्वस्व त्याग करए हेतु कृतसंकल्प अछि। देश स्वतंत्र भए कए रहत। "भारत माताक जय! वन्दे मातरम्"- इएह कहि हुनकर प्रवचनक अन्त होइत छल।

राष्ट्रवादी दलक आर्थिक समस्याक समाधान तँ भजनानन्ददासजी महराजक आश्रमक माध्यमसँ भए जाइत छल। महराजजीक एकटा भक्तक दरभंगामे तीन महलक भवन छलैक। ओ तीनू महल भजनानन्दजी प्रेरणासँ राष्ट्रवादी दलकेँ दान कए देलक। स्वयं दुनू बेकती दिन-राति राष्ट्र सेवामे लागि गेल। फिरंगीसभ एक हिसाबे हिलि गेल छल। ओकरासभकेँ राष्ट्रवादी दलक बढ़ैत शक्तिसँ ततेक व्याकुलता भेलैक, ततेक डर भए भेलैक जे इज्जतिसँ देश छोड़बाक रस्ता ताकय लागल। ❑

३८.

अरुण एंगल केर संग लन्दन हबाइ अड्डापर पहुँचले छल कि एडली हबाइ अड्डापर पहुँचि गेल। लगैत छल जेना ओ बहुत दिनसँ एहि अवसरक प्रतिक्षामे छल। ओकर फाटल-फाटल हरिअर ऑखि बहुत किछु कहि रहल छल। हबाइ अड्डासँ अरुण ओ एंगल वहिर्गमनद्वारिपर एडलीक स्वागतसँ अभिभूत छलाह।

अरुण सरकारी काजसँ जोगार लगाए लन्दन गेल छल। ओहिठाम आवास सहित आओर आवश्यक सुख-सुविधाक प्रबन्ध छल। ओसभ ओतहि जेबाक हेतु उद्यत छल परन्तु एडली अड़ि

गेल। ओकर बात काटब ओकरासभक वशमे नहि छल।

तेँ ओसभ एडलीक बात मानि ओकर घर दिस बिदा भेल। अरुण लेल ओकर घर नव नहि छल। लन्दन प्रवासक दौरान ओसभ कतेको दिन ओतए रहल छल। अबैत जाइत छल। एक हिसाबे ओसभ ओकर पारिवारिक मित्र भए गेल छल। लन्दन पहुँचि अरुणकेँ उसास तँ भेलैक। कम सँ कम उमाक घात-प्रतिघातसँ तात्कालिक राहत भेटलैक। संगे पुरान दोस्तसभसँ भेँट-घाँट होइत रहलैक। ओकरासभक संगे बिताओल मधुर, स्नेहिल समयकेँ पुन: सद्य: जीबाक अवसर भेटलैक। सरकारी कामकाज तँ बहाना छल।

एक दिन एडलीक ओहिठाम रहि अरुण सरकारी अतिथि गृहमे चलि आएल। एंगल ओ एडली ओतहि रहल। ई दुनू तँ पुरान दोस्त छल। बहुत दिनक बाद एकठाम भेल छल। लगलैक जेना बिड़रो उठि गेल। दुनूकेँ गप्पक अन्ते नहि होइक। गप्पेटाक बात रहितए तँ कोनो बात नहि। लगबे नहि करैक जे अरुण ओकरे संगे आबि कए कतहुँ आनठाम रुकि एंगलक प्रतीक्षा कए रहल अछि।

आखिर लन्दन, लन्दन छैक। ओहिठामक अन्मुक्त वातावरणमे बढ़ल, पढ़ल एंगल ककरो हेतु बान्हल छेकल कतेक रहि सकितैक? एहनमे तँ अरुण स्वयं सोचि सकैत छलाह। मुदा भावी प्रवल। जे हेबाक छल से भेल। दुखक बात तँ ई छल जे एहूकात गाड़ी घिसिर-फिसिर करैत छल। ओहिकात तँ सद्य: उमा गरजि रहल छलैक। अरुण वास्तवमे बेचारा भए गेल छल। कहबी ठीके छैक- ‘ने दौड़ि चली, ने ठेंसि खसी।’

एक सप्ताह बहुत नहि होइत छैक। देखिते देखिते शनि, रबि आबि जाइत छैक। पाँच दिनका खटैनी दू दिनका सप्ताहान्त

अवकाशमे गलि जाइत छैक। अरुण सेहो पाँच दिन लन्दनक सरकारी काजमे व्यस्त रहल ,मुदा शुक्रक साँझ अएलापर माथ ठनकलै। आब की कएल जाए? एंगलक अएबाक गप्प कोन, फोनो नहि केलकैक। ओ तँ एडली संगे तेना कए रमि गेलैक जे आगू-पाछू किछुक सुधि नहि रहलैक।

अरुण जखन एडलीक ओतए पहुँचल तँ पता लगलैक जे ओसभ लन्दनसँ बाहर चलि गेल अछि। कतए गेल से घरक लोक ने अपना मोने किछु कहलकैक आ ने अरुण पुछलक। ओहिठामक समाजमे बेसी खोध-बेधक परम्परा नहि छैक। बहुत रास बात व्यक्तिगत रहि जाइत अछि।

अरुण गुम्म छल। ओकरा एहि बातकेँ आब आभास भए रहल छलैक जे अपनसभक माटि-पानिमे जन्मल, पोसाएल पुरुषक बिआहक एहन कल्पना रहैत छैक जाहिमे ओकर स्त्री आजन्म ओकरा प्रति निष्ठावान रहैक, ओ जे चाहए सएह करैक, मुदा ई तँ लन्दन छैक। से बात बहुत बिलंबसँ बुझए आबि रहल छलैक।

एडली ओ एंगल स्कूटरपर लन्दनसँ करीब चालीस किलोमीटर दूर एकटा विश्रामालयमे ठहरए हेतु जा रहल छल कि एकटा तेज गतिसँ चलैत कार ओकरा टक्कर मारि देलकैक। टक्कर ततेक जबरदस्त छल जे स्कूटर पचरा भए गेल। हेडली ओहीठाम कैक पलटी खेलक ,मुदा कोनो बेसी चोट नहि लगलैक। परन्तु एंगल हबामे कैक फीट ऊँचाइ धरि फेका गेल आओर धरामसँ नीचाँ बीच सड़कपर खसल। ई तँ संयोग छलैक जे पाछूसँ अबैत दोसर कारक वाहन चालक एकाएक ब्रेक लए लेलक नहि तँ ओतहि ओ खंड-खंड भए जाइत। एहि दुर्घटनामे एंगलक दहिना जाँघक

हड्डी टूटि गेल छलैक। कनी-मनी चोट तँ सौंसे देहमे छलैक। एडलीक हालति सेहो ठीक नहि छलैक। क्रमश: दुनू पैर फुलि गेलैक जाहिसँ चलबामे असोकर्य होइत छलैक। कहुना कए स्थानीय पुलिस एकरासभकेँ लन्दनक प्रतिष्ठित अस्पतालमे भर्ती करओलक। अरुणकेँ सेहो पुलिस द्वारा सूचना भेटल। ओ तुरन्त अस्पताल पहुँचल। ओ एंगलक हालति देखि दुखी भए गेल। जाबे एंगल अस्पतालमे रहल ताबे ओहो ओतहि रहल। मुदा तकर बादक चिन्तासँ ओ व्यग्र रहए लागल।

शुरूमे अरुणक कार्यक्रम छलैक जे ओ तीन-चारि मासमे अपन देश वापस आबि जाएत। मुदा गाम-घरसँ जे समाचारसभ भेटैक आओर जाहि प्रकारेँ उमा उग्रसँ उग्रतर भए रहल छलि, ओकर मोन बेचैन भए जाइक, कोनो समाधान नहि फुराइक। संयोग एहन भेलैक जे अंग्रेजसभकेँ खुफिआ रिपोर्ट भेटलै जे अरुणकेँ हितमे नहि छल। ओकरासभकेँ अरुणक गति-विधिपर सन्देह भए गेल छलैक। तेँ ओकरा कम-सँ-कम साल भरिक हेतु लन्दनमे रहबाक आज्ञा देलक। सरकारी आदेश छलैक, तेँ अरुणकेँ कोनो विकल्पो नहि रहैक। ओकर मोन निरन्तर अपन गाम-घरपर टांगल रहैत छलैक। तथापि ओ अपना आपकेँ लन्दनमे व्यस्त कए लेलक। दिन भरि कार्यलयमे समय बीति जाइत छल। साँझ कए समय बिताबक हेतु एतए बहुत जोगारसभ छलैक।

एंगल अस्पतालसँ छुटि कए अरुणक डेरापर अएलैक। मुदा ओकरा नीकसँ चलल नहि होइक। डाक्टरक परामर्शक अनुसार ओकरा फिजिओथिरैपीक प्रयोजन रहैक। सभ सुविधा आसे-पासमे उपलब्ध छल। मुदा घरमे बैसल-बैसल ओ तंग भए रहल

छलि। कोनो उपायो नहि रहैक। अरुण कार्यालय चलि जाइक। दिन भरि ओ एसगरि कहुनाक समय बिताबथि।

एहिना एक दिन ओ उदास घरमे किछु पढ़ि रहल छलि कि एडलीक फोन आएल। एंगल ओकरा तुरन्त आबए हेतु आग्रह केलक। एडली बिना विलम्ब केने ओतए आबि गेल। दिनभरि दुनू गोटाकेँ गप्प-सप्पमे समय कोना बीति गेल से पता नहि चलल। साँझमे ओ अपन घर वापस जेबाक इच्छा व्यक्त केलक। ताबत अरुण सेहो आबि गेल रहए। अरुण ओ एंगल दुनू गोटे ततेक आग्रह केलकैक जे ओ ओहीठाम रहि गेल। एंगल, एडली संगे तेहन तल्लीन भए जाइक जे अरुणकेँ करए हेतु किछु रहिए नहि जाइक। करवनहुँक ओहो गप्पमे लारि देबाक प्रयास करैक ,मुदा ओकरासभक हेतु धनिसन। ❑

३९.

अरुण लन्दन चलि गेल से समाचार हमरासभकेँ खबासिनीक माध्यमसँ भेटल। एहि बेर ओ बहुत दिनपर आएल छलि। गप्प-सप्पक क्रममे कहए लागलि जे हमर माए सम्पत्तिमे बँटबारा हेतु बहुत हल्ला केलकैक। मुदा हमर पितिऔत काका टस सँ मस नहि होइत छैक। ओकर कहब जे बेटीक बिआह भइए गेल। तखन अहाँकेँ खोरिसक अतिरिक्त किछुके अधिकार नहि अछि। कतेको बेर बैसार भेलैक। पंचसभ सेहो ओकरे संग भए गेलैक। बहुत रास सम्पत्ति तँ ओ अपना नामे करा चुकल छल।

ई बातसभ जखन हुनकर कानमे गेलनि तँ दरभंगामे मोकदमा कए देलाह। दरभंगाक नामी ओकिल मोना बाबू

हमरसभक केस लड़ि रहल छलाह। कोर्टसँ नोटिस जारी भेल। हमर पितिऔत काकाकेँ दिआदसभ बहुत कहलकैक। अनततोगत्वा, ओ पसीजलाह आओर पाँच बीघा जमीन हमरा माएकेँ देबाक हेतु तैयार भए गेलाह। ओ एहि प्रस्तावकेँ मानि लेलाह। जतए हम सत्तरि बीघाक उत्तराधिकारी रहितहुँ कतए मात्र पाँच बीघापर समझौता करए पड़ल। कोनो विकल्पो नहि छलैक। कानूने तेहने छलैक।

समय बीतैत देरी नहि होइत अछि। देखिते-देखिते हमर बच्चासभ जबान भए गेल। तीनू बेटीक पढ़ाइ पूरा भए गेल। ओसभ अपन-अपन रूचिक विषयमे एमए पास कए चुकल छलि। एकमात्र पुत्र सेहो इंजीनियरिंगमे पढ़ैत छल। एकरासभक पढ़ाइ-लिखाइमे अरुणक गम्भीर योगदान छलैक। आर्थिक चिन्ता तँ कहिओ होमए नहि देलक।

पढ़ि-लिखि तँ गेल ,मुदा आब की कएल जाए। ई समस्या विकट छल। कारण ओहि समयमे बेटीक पढ़ाइ-लिखाइ बिरलेके केओ करैत छल। से हमसभ केलहुँ आओर जेना-तेना पार लागि गेल। मुदा भविष्यक संघर्ष आओर प्रवल लगैत छल।

इएहसभ सोचैत रही कि हमर तीनू बेटी गाम अबैत गेलीह। ओकरासभकेँ देखि मोन गदगद भए गेल। सभक व्यक्तित्वमे अद्भुत चमक छलैक। आत्मविश्वाससँ भरल छलि। विद्यासँ ओकरासभकेँ बहुत आत्मशक्ति प्राप्त भए गेलैक आओर ओसभ जीवनमे किछु स्थान बनबए हेतु कृतसंकल्प लगैत छलि।

जहियासँ राष्ट्रवादी दल बनल, जनाधार पार्टीक जनाधार तेजीसँ खसकि रहल छल। राष्ट्रवादी दलक कमान उमाक हाथमे

पड़िते चारूकातक स्त्रीगण खास कए मध्यवर्गीय परिवारक, ओहि दलमे सामिल होमए लागलि। लगैक जेना देशमे क्रान्ति आबि गेल अछि। शिक्षा नहि, पारिवारिक सम्पत्तिमे हिस्सा नहि, घरसँ बाहरो निकलबाक परिस्थिति नहि, आखिर एहि बातक प्रतिकार तँ भेनहि रहैक। तेँ अवसर भेटिते एक दिस तँ “बन्देमातम्” केर नारा लगैत तँ दोसर दिस स्त्री सम्मानक रक्षाक चर्चा सेहो जोर पकड़ने जाइत छल। फिरंगीसभ एहि बातसँ चिन्तित छल। ओकरासभकेँ किछु फुरेबे नहि करैक जे एहि परिस्थितिसँ कोनो निपटी। तखन ओसभ सोचलक जे जनाधार पार्टीक मदति लए आपसेमे उठापटक कराओल गेल। जहिआसँ चेतन जनाधार पार्टीक अध्यक्ष भेल छल, ओकर फिरंगीसभसँ पहिल भेँट-धाँट रहैक। मुदा फिरंगीसभ ओकरा प्रभावमे नहि आनि सकल।

राष्ट्रवादी दलक प्रभावसँ हमर तीनू बेटी- हीरा, वाणी ओ गंगा प्रभावित छलीह। देश ओ समाजक हेतु किछु करबाक इच्छा हुनकासभकेँ उद्वेलित कएने छल। उच्च शिक्षा प्राप्त कए ओ समाजक दुर्दशाकेँ बेसी नीकसँ बुझैत छलीह। तेँ ओसभ सभ काजकेँ पाछू कए उमाक संग भए गेलीह। राष्ट्रवादी दलक सक्रिय सदस्यता ग्रहण कए गाम-गाममे घुमए लगलीह।

आब उमा एसगरि नहि छलीह। छोट, पैघ, जबान, बूढ़सभ ओकरा संग दए रहल छलैक। असलमे गाम-गाममे पसरल एहि अन्यायसँ मुक्ति पाबक एकटा अवसर आबि गेल छल। जतहि देखू “बन्दे मातरम्” केर नारा लागि रहल अछि। भारत- माताक जयगान भए रहल अछि। एकहि स्वरमे समाजमे युग-युगसँ पसरल वैमनस्यता, भोदभाव, शोषणक विरुद्ध आक्रोश सेहो तीव्रतर भए

रहल अछि। केओ-केओ कहैत छल जे समाजकेँ बिखण्डित करबाक ई फिरंगीसभक नव हथकंडा अछि।

राष्ट्रवादी दलमे महिलाक पैठसँसभसँ बेसी प्रसन्नता भजनानन्ददासजीकेँ भेलनि। हजारो सालसँ यातनापूर्ण जीवन जीबए हेतु विवश स्त्रीगणकेँ अभिव्यक्ति एकटा साधन भए गेल छल राष्ट्रवादी दल। जखन करवनो नव प्रयोग होइत अछि, चाहे ओ सही हो, गलत हो, जे हो, ओकर विरोध, प्रतिरोध होइते अछि। मुदा ओहो विकासक एकटा पदचापे बुझबाक चाही। अन्ततोगत्वा, मनुक्खक प्रयास सफल होइते अछि। से नहि होइत तँ मनुक्खक विकास नहि भए सकैत अछि। आदिकालसँ लोक परिस्थितिसँ संघर्ष केलक आओर आगू बढ़ल अछि।

भजनानन्ददासजी भक्ति, अध्यात्म ओ राष्ट्रवादक प्रखर घ्वजवाहक भए गेल छलाह। गाम घरमे भए रहल सामाजिक, राजनीतिक घटनाक्रमसँ आश्रममे अएनिहार लोकक माध्यमसँ ओ पूर्ण अवगत छलाह। हुनकर एहि उदारताक फएदा राष्ट्रवादी आन्दोलनकेँ भेटि रहल छल। एही बातसभकेँ ध्यानमे रखैत राष्ट्रवादी दलक अगिला बैसार वृन्दावनमे करबाक निर्णय भेल। ❑

४०.

बहुत दिनक बाद हमसभ एहिना असोरापर बैसल रही कि डाकपिउन अएलाह। डाक पीउन साहेब गाममे बड़ लोकप्रिय छलाह। हुनकर स्वभाव आ सहयोगात्मक रुखिसँ गौंआ हुनकर चिर प्रशंसक छल। ओ छलखिन ओही गामक। एक-एक व्यक्तिकेँ नामसँ जनैत छलखिन। हुनका देखिते बच्चासभ दौड़ि जाइत।

चिकरए लागैत : “काका, काका चिट्ठी अएलैक अछि की?” एहि बातसँ ओ तमसा जइतथि। फेर कहितथि :

“एतेक बुझबै छिअह, तइओ नहि बुझइत छहक। जखन चिट्ठी अओतह, तँ हम ताकि कए पहुँचा देबह।”

धिआ-पुतासभ लंक लेने भागि जाइत। असलमे ओ अपन काजमे माहिर छलाह। तेँ टोक- टाक नीक नहि लगैत छलनि। फेर, एक दू गोटा टोकतनि तँ कोनो बात नहि। जेम्हरे जाथि तेम्हरे प्रतीक्षारत लोकसभक जिज्ञासा, टोका-टोकीक रूपमे हुनका लग समस्या भए जाइत छलिन। आखिर जखन चिट्ठी अएबे नहि कएल तँ ओ चिट्ठी कतएसँ आनताह? समस्या तँ से छल। मुदा ओहि दिन वास्तवमे चिट्ठी आएल छल।

डाकपिउन साइकलसँ उतरलाह। चिट्ठीक बण्डलसँ एकटा बेस मोटगर लिफाफ निकाललाह आओर हुनकर हाथमे पकड़ा देलखिन। ओ चिट्ठी लन्दनसँ आएल छल। लिफाफक ऊपर अरुणक नाम छल। विक्टोरिआ रानीक फोटोक संग डाक टिकट सटल छल। चिट्ठी दए डाकपिउन चलि गेलाह।

उत्सुकतावश हुनका दिस तकैत रहलहुँ। हमर जिज्ञासाकेँ ओ तारि गेलाह। कहलाह-

“उरुणक पत्र छैक। अहीँकेँ लिखलक अछि।”

ततेकटा पत्र छल जे पढ़ए हेतु निश्चिन्त मोन आओर समय चाही। कनीक मनीक चिट्ठी पढ़ने छलाह कि केओ गौंवा बजबए आबि गेल। हुनका जाए पड़ल। मुदा एकाध पाँति जे ओ पढ़लाह ताहिसँ बुझाएल जेना ओहि पत्रमे बहुत रहस्यात्मक समाचार अछि। कहि ने ओ कोना अछि? खबासिनीक आगूएमे अरुणक

चिट्ठी ओ पढ़ए लगलाह। अरुणक नाम सुनितहि ओकरो स्वाभाविक रूपसँ जिज्ञासा भेलैक, कारण उमा बहुत उग्र रूप धेने जाइत छलैक। अरुणक परिवार सभदिन सुखी-सम्पन्न आ इलाकामे प्रतिष्ठित रहल अछि। मुदा एहि बेर लगैत छल जे परिवारक प्रतिष्ठा संगे अरुणक भविष्य सेहो दावपर लागल अछि। उमाक कहब सेहो ठीके रहैक। आखिर, अरुण विवाहित छल, ओकर विदेश यात्राक सम्पूर्ण खर्चा ससुर उठौने रहथि। ताहि खर्चाक जोगार करएमे हुनका की-की ने करए पड़ल छल। मुदा भेलैक की? अरुण बड़का हाकिमक पदवी संगहि एकटा विदेशी कनिआँ लए अनलक, ई जनितो जे उमा एहि स्थितिकेँ कदापि स्वीकार नहि करत। मुदा बहुत किछु नहि चाहितो भए गेल रहैक। नियतिक हाथे सभ असहाय छल।

चिट्ठी पढ़ि, पढ़ि कए बेर ओ रुकि जाइत छलाह। हुनकर माथपर चिन्ताक रेघा स्पष्ट देखल जाए सकैत छल। सारांश ई छल जे ओ उमाक संग वापस होमए चाहैत छल, ताहि हेतु उचित त्याग करए हेतु सेहो तत्पर छल। मुदा पत्रमे ई कतहु नहि छल जे एंगलक संग ओकर सम्बन्धक की होएत? मुदा पत्र लिखि ओ अपन मंतव्य प्रकट केलक, हमरा मोनक गप्प कहलक सेहो कम महत्वपूर्ण नहि छल।

पत्र पढ़ि ओ चिन्तित भए गेलाह। समाचार बूझि खबासिनी सेहो कानए लागलि। ओकर परिवारक बच्चेसँ पालन-पोषण अरुणक परिवार करैत रहल अछि। एहन परिवारकेँ उजरैत ओ केना देखैत? मुदा ओकर हाथमे छले की? ओ तँ मात्र सभ किछु सुनैत छलि, देखैत छलि आओर चुप्पे रहि जाइत छलि। मोन बेसी दुखी

भेल तँ कानिओ लैत छलि।

अरुण हमरा चिट्ठी किएक लिखलक? ओकरा बुझल छलैक जे नैहरसँ हमर सम्पर्क बहुत सीमित अछि। तथापि हमरा पत्र लिखि ओ मोनक दुख बाँटलक आकि किछु सहयोगक अपेक्षा कए रहल छल? प्राय: दुनू बात छल। ओकरा उमाक संग सामंजस्य रखबाक इच्छा भए रहल छल, सएह कोन थोड़? ❑

४१.

हरखूक गेला सालक धक लगलैक। पहिने ओ सालमे दू-तीन बेर आबि जाइत छल। बहुत दिनसँ कोनो समाचारो नहि आएल रहैक। बरहरबावाली एहि बातसँ बहुत चिन्तित रहैत छलि। ओकरा रहि-रहि कए बेहोशी भए जाइक। किछु-किछु ओ बड़बड़ाइतो रहैत छलि। लोकसभ कहए लगलैक जे ओकरा देहपर जिन अबैत छैक। ओ अपनो एहि बातसँ आश्वस्त भए गेल। जेना-जेना लोकसभ कहैक, सभ किछु करए जाहिसँ ओकर जिन उतरि जाइक, ओकरा छोड़ि कतहु आनठाम चलि जाइक।

हमर नैहरक रमुआ बड़का भगत छल। केहनो देवी, देवता, व्रह्म् पिशाचकेँ ओ बान्हि दैत छलैक। जखन कोनो आओर प्रयाससँ बरहरबावाली परसँ देवी नहि उतरल तँ रमुआकेँ हमरा गामसँ बजाओल गेल। ओकरा संगे खबासिनी सेहो अएलैक। असलमे खबासिनीकेँ तँ अएबाके रहैक, जखन रमुआ दए सुनलकै तँ संग आबि गेल। रमुआ आओर खबासिनी संगे हमरा ओहिठाम आएल।

खबासिनीसँ हमसभ गप्प करिते रही कि रमुआकेँ हरखू ओतएसँ बजाहटि अएलैक आओर ओ ओतए चल गेल।

बरहरबावालीक ओतए लोकक करमान लागि गेल। बच्चा, बूढ़, पुरुष, स्त्रीगणसभ गर्द पड़ैत रहए। रमुआ प्रसिद्ध भंगत छल। ओकर भगता देखए हेतु कतए-कतएसँ लोक जुटि जाइत छल। सएह एतहु भेल रहैक। बरहरबावाली मुरी नुआसँ झपने चुक्कीमाली बैसल रहए। ओकर लगीचमे ककरो रहबाक अनुमति नहि रहैक। धूप, आरती भेलैक। रमुआ नहु, नहु मंत्र पढ़नाइ शुरू केलक। एकबेर बरहरबावाली दिस ताकए तँ एकबेर आकाश दिस। तरह-तरहसँ ओ आवाहन करए लागल। चिकड़ि कए नाना प्रकारक ब्रह्म पिशाचसभक नाम लए मंत्र पढ़ए लागल। रहि-रहि कए सड़िसव, मिरचाइ आओर किदनि सभ बड़का धूपदानीमे राखल आगिपर फेकैक। आगिक झोंकासँ बरहरबावालीक मोन आकुल भेलैक। ओ उठि कए ठाढ़ भए गेल आओर घिरनी जकाँ नाचए लागलि। आब तँ सौंसे गामक लोक छगुन्तामे छल। सभ कल जोड़ि कए ठाढ़ भए गेलैक। आराधना करए लगलैक। भगता हो तँ एहन। दिने देखारे ब्रह्म पिशाच कैँ नचा रहल छलैक। बरहरबावालीक ऊपर ब्रह्म पिशाचक पहरा छलैक। घरिनी जकाँ नचैत-नचैत ओ रमुआ भगतक पएर पर खसि पड़लि। रमुआ भगत वारंबार झोंका मारैत रहल।

रमुआ भगतक भगतै दिन भरि चलैत रहल। कहैक जे बड़ कड़गर ब्रह्म पिशाच थिक। काल्हि भोरे धरि झाड़ फूक करए पड़तैक। लोकसभ क्रमश: ससरि गेल। रातिक समय रहैक। दस बाजि रहल छलैक। रमुआ भगता आगूक भगतैक जोगारमे लागल

छल। सभकेँ खबरदार कए देने रहैक, जे केओ भगतैमे विघ्न नहि करैक। निशा पूजा बहुत उग्र होइत छैक। यदि केओ एमहर, ओमहर केलक तँ ब्रह्म पिशाच ओकरे पर सबार भए जएतैक। लोको बुझलक जे एहि झंझटिमे पड़ब ठीक नहि।

रातिक आगमनसँ गामक गतिविधि ठप्प भए गेल रहैक। लोकसभ भोजन कए सूति गेल रहए। मुदा बरहरबावाली सहमल रमुआ भगतसँ फूकबैक उपक्रममे रहए। ब्रह्म पिशाच सँ पिण्ड छोड़ेबाक रहैक। सभ तैयारी भए गेल छल। एतबहिमे आंगनक फाटकपर ढक्कक आबाज भेल। “केओ आबि गेल”- रमुआ बाजल। ताबतेमे केओ छओ हाथक मनुक्ख अन्दर पएर रखलक। हालति देखि बुझबामे कनिको देरी नहि भेलैक। असोरापर राखल लाठी उठओलक आओर रमुआ भगतपर तड़-तड़ बरसाबए लागल। रमुआ ओतहि भूलंठित भए गेल।

हरखू बरहरबावालीकेँ संग कए रातिएमे चम्पत भए गेल। भोर होइतहि गाममे गर्द पड़ि गेल। हरखूक आंगनमे रमुआ भगताक रक्त रंजित लास पड़ल छलैक। खूनक छरक्का सौंसे आंगन पसरि रहल छल। लोकक करमान लागि गेल छल। ककरो मुँहमे किछु तँ ककरो किछु बात। आखिर भेलैक की? की भेलैक? के केलक रमुआ भगतक की ई हाल?

स्त्रीगणसभकेँ रमुआक भगतैमे अटूट विश्वास छलैक। ओसभ दिन भरि रमुआक भगतै देखनो रहैक। कतेक तेजीसँ देवीसभकेँ ओ पकड़ैत छलैक। मुदा करबे की करतैक? बरहरबावालीक देहपर केओ सोड़हि ब्रह्म पिशाच छोड़ि देने छल। कैकटा ब्रह्म पिशाँचकेँ तँ रमुआ भगत बान्हि देने रहैक। लोकक

धारणा रहैक जे कोनो मजगूत ब्रह्म पिशाच क ई किरदानी छैक। ने रमुआ भगतै करितए ने ओकर प्राण्हन्त होइतैक। मुदा आब की होएत? बरहरबावाली कतए चम्पत भए गेल? एहि बातपर तरह-तरहक अनुमान लोक लगबैत रहल। ❑

४२.

गाम-घरसँ जखन कखनो मोन उबि जाइत छलैक तँ लोक तीर्थ निकलि जाइत छल। सिमरिया वा प्रयाग मास कए लैत छल। से नहि कतहु फटकी जा सकल तँ कपिलेश्वर, डोकहर, जनकपुर, उच्चैठ चलि जाइत छल।

हमरा तँ घरेक ततेक झंझटि रहैत छल जे कतहु बहराएब समस्या छल। घर, गृहस्थीक काज होइतहु तेहने अछि। तथापि सालमे एकाध बेर तँ हम कतहु-ने-कतहु घुमए जाइते रही। आओर नहि कतहु तँ बाबा बैधनाथ धाम चल जाइत रही। मुदा जहिआसँ भजनानन्ददासजी वृन्दावनवासी भए गेलाह, ओहो लोकक एकटा नीक आश्रय भए गेलैक।

एहि बेर फेर गामसँ वृन्दावन जेबाक उजाहि उठि गेल छल। असलमे वृन्दावनमे कृष्ण जन्माष्टमीसँ एक मासक विशेष आयोजन हेबाक रहैक। मासो दिन कृष्ण लीलाक संग अखण्ड भागवत सेहो हेबाक रहैक। रहबाक, भोजनसहित सम्पूर्ण प्रबन्ध भजनानन्ददासजीक दिससँ रहैक तेँ गाम-गामसँ लोक वृन्दावन जाए लागल। आश्रममे अतिथिसभक समुचित व्यवस्था कएल गेल छल। हमरा लोकनि अतिथि कक्षक विशिष्ट सुविधा युक्त छल। हमरा नैहरसँ सेहो बहुत रास लोक आएल छल। हुनका सभकेँ सन्त

समागम हाल नम्बर एकमे राखल गेल छल। आखिर ओसभ भजनानन्दजीक ग्रामीण छलखिन। तेँ हुनकासभक विशेष ध्यान राखल जाइत छल।

हमसभ जनमाष्टमीसँ एक दिन पहिने साँझमे वृन्दावन पहुँचलहुँ। हमरसभकेँ मुख्यद्वारिसँ सटले दहिना दिस बनल डुपलेक्स बंगलामे राखल गेल। हाल नम्बर एक हमरसभक डेरासँ सटले छल। हमसभ अपन-अपन कक्षमे पहुँचि आगूक व्यवस्थामे लागि गेलहुँ।

हमर नैहरसँ आएल लोकक तँ करमान लागल छल। आखिर भजनानन्दजीक ग्रामीणसभ छलखिन । अपना लोकक मोह तँ होइते अछि। सभकेँ एतेक ध्यान रखितो ओ अपन भजन कीर्तनमे मस्त रहैत छलाह। वृन्दावनक एहि उत्सवक जानकारी मास्टर साहेब सहित राष्ट्रवादी दलक अधिकांश नेतासभकेँ लगलैक। ओकरासभकेँ ई स्वर्णिम अवसर बुझेलैक। एकहिठाम बहुत रास लोकसभक समागम राष्ट्रीय आन्दोलनकेँ आगू बढ़एबाक स्वर्णिम अवसर छल। लोक तँ अवसर बनबैत अछि, एहिठाम तँ बनल बनाओल सभ किछु सुलभ छलैक। जन समुदाय, आवश्यक सम्पदाक संग वृन्दावन बिहारी लालक अनन्य भक्त भजनानन्ददासजीक अमूल्य सान्निध्य सेहो छलैक।

तेँ मास्टर साहेब, उमा, राजकुमार ओ हरिनन्दन सहित सामान्य कार्यकर्त्ता भारी संख्यामे वृन्दावन पहुँचि गेलाह। सभक वस्त्र सामान्य भक्त सन, केसरिआ रंगक अंगवस्त्रसँ लए नीचाँ धरि सम्पूर्ण वृन्दावन सहरक माहौलकेँ भक्तिमय कए देने छल।

नित्यप्रति श्रीराधे कृष्णक प्रार्थनासँ कार्यक्रम प्रारम्भ होइत

आओर अन्त राष्ट्र वन्दनासँ। भजनानन्ददासजी राष्ट्रवादी दलक हेतु एकटा अलग भवन उपलब्ध करा देने रहथि जाहिसँ निश्चिन्त भए ओसभ अपन गतिविधि चला सकथि। हमर तीनू बेटी हीरा, वाणी ओ गंगा सेहो स्वतंत्रता आन्दोलनमे कुदि पड़ल छल। राष्ट्रवादी दलक बैसारमे नित्य, नियमित उपस्थित रहैत छल।

वृन्दावनक गोष्ठी बहुत लाभदायी रहल। ई हाल छल जे आश्रममे रहनिहार विधवासभ राष्ट्र निर्माण कार्य हेतु, अपनाकेँ प्रतिवद्ध कए देलथि। सभ राष्ट्रवादी दलक सक्रिय सदस्य भए गेलि, सभक एक मात्र मनोरथ रहैक जे देशमे स्वतंत्रता आबक चाही। फिरंगीकेँ जेबाक चाही। राजकुमारक पितिऔत हरिनन्दन अपन सर्वस्व एहि आन्दोलनमे दान कए देलक। संगहि एलान कए देलक जे जा धरि देश स्वतंत्र नहि होएत ओ दाढ़ी नहि कटाओत, माथक केस नहि कटाओत आओर घर वापस नहि जाएत। कहक माने जे एक हिसाबे सन्यासीक जीवन जीबैत राष्ट्र कार्यमे लागल रहत। “के बोले मा तुमि अबले” से तँ आब सत्ते लागि रहल छल। फिरंगीसभक बेचैनी बढ़ब स्वाभाविक छल। वृन्दावन सम्मेलनक सफलता परमान चढ़ि रहल छल। एहि पार कि ओहि पारक भावना प्रवल भए रहल छल। “हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम”। गीताक एहि उक्तिक सद्य: अनुकरण करए हेतु एक-एक व्यक्ति आतुर छल।

मास्टर साहेब दिन राति एक कए देने छलाह। हुनकर ई प्रवल इच्छा रहनि जे राष्ट्रीय आन्दोलनक हितमे जनाधार पार्टीकेँ संग लेब जरूरी अछि जाहिसँ फिरंगीक घर फोड़बाक षडयंत्र विफल होइक।

चेतनकेँ मास्टर साहेबक समाद भेटलैक आओर ओ दल-

बलक संगे वृन्दावन पहुँचि गेल। ओकरासभक संगे सातटा आओर नेतासभ छलैक। सभकेँ रहबाक, खेबा-पीबाक सभटा व्यवस्था भजनानन्ददासजीक चेलासभ कए रहल छल।

बैसारमे तरह-तरहक विषयसभ उठलैक। निर्णय भेलैक जे दुनू दल मिलि कए एकटा संयुक्त मोंर्चा बनाओत जाहिसँ स्वतंत्रता आन्दोलनमे तेजी आओत। मुदा दुनू दलक एहि विषयपर सहमति नहि भए सकल। मास्टर साहेबक परिश्रम ओ त्यागसँ स्वतंत्रता आन्दोलन एतेक आगू बढ़ल। आब दिल्ली दूर नहि लगैत छल। ओहि राति साल भरिक कार्यक्रमकेँ अन्तिम रूप देल जा रहल छल। दुनू दलक आपसी तालमेल हेतु एकटा पाँच आदमीक समिति बनल जकर अध्यक्ष उमाकेँ बनाओल गेल। अन्तमे मास्टर साहेब अपन बिदाइ भाषण कए रहल छलाह कि हुनकर छातीमे बहुत तेज दर्द उठलनि। जाबे केओ किछु बुझितए ताबे ओ साफ छलाह। मास्टर साहेबक पुत्र-किशोर, राजकुमार, हरिनन्दन, चेतनसभ मास्टर साहेबकेँ उठाबक प्रयास करए लगलाह। मुदा मास्टर साहेब तँ नि:प्राण भए गेल रहथि। हुनका बहुत तेज हृदयाघात भेल रहनि। आघात ततेक तेज रहैक जे एकहि बेरमे ओहिपार कए देलक।

मास्टर साहेबक मृत्युक समाचार इलाकामे बिजुली जकाँ पसरि गेल। चारूकात हाहाकार मचि गेल। गामक लोक तँ सर्द छल। ककरो बकार नहि निकलैक। गाम-गामसँ शोकाकुल लोकसभ श्रद्धांजलि देबए हेतु मास्टर साहेबक ओहिठाम अबैत रहलाह। मास्टर साहेब सन लोक कम होइत अछि। अपन समस्त जीवन समाज ओ राष्ट्रक हेतु समर्पित कए देने रहथि। राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु ई एकटा अपूर्णीय क्षति छल। वृन्दावनमे सभ किछु

ठीक चलि रहल छल। कृष्ण जन्मोत्सव संगे भागवत कथा आनन्दपूर्ण वातावरणमे मनाओल गेल। स्वतंत्रता आन्दोलनक सशक्तीकरण एहि हद धरि भेल जे फिरंगीसभ दिन-राति चिन्तामे पड़ि गेल। मुदा मास्टर साहेबक हृदयाघातसँ आकस्मिक निधन अपूर्णीय क्षति छल। लोककेँ ठकविदोर लागि गेल। आश्रमक समस्त गतिविधि ठप्प भए गेल।

प्रात:काल वृन्दावनमे यमुनाक कछारमे मास्टर साहेबकेँ हुनकर पुत्र किशोर द्वारा मुखाग्नि देल गेल। राजकुमार, हरिनन्दन, चेतन, उमा, हीरा, वाणी, गंगा सन सभ केओ ओतए अश्रुपूरित नेत्रसँ मास्टर साहेबकेँ अन्तिम बिदाइ दए रहल छलाह। भजनानन्ददासजी महाराज स्वयं उपस्थित छलाह। हुनका पाछू आश्रमक विधवा शिष्यासभ सेहो छलि। राधे! राधे! सँ सम्पूर्ण वातावरण गुंजायमान भए रहल छल। एहि अवसरपर भजनानन्दजी घोषणा केलाह जे मास्टर साहेबक स्मृतिमे हुनकर गाममे पहिलासँ लए कए एमए धरिक पढ़ाइ हेतु शिक्षण संस्थानक निर्माण साल भरिक भीतरे कएल जाएत। एहि हेतु आवश्यक धन हुनकर आश्रम द्वारा उपलब्ध कराओल जाएत। संगहि स्वतंत्रता आन्दोलनक गतिकेँ आगू कएल जाएत जाहिसँ मास्टर साहेबक आत्माकेँ शान्ति भेटतनि। हुनकर अभिलाषाकेँ साकार करबे सही मानेमे हुनका प्रति हमरा लोकनिक श्रद्धांजलि होएत।

वृन्दावनमे भेल तमाम गतिविधिक खुपिआ रिपोर्ट फिरंगीसभकेँ भेटल रहैक। ओसभ जवाबी कार्रवाइ करबाक हेतु उपयुक्त समयक प्रतीक्षा कए रहल छल। मुदा मास्टर साहेबक मृत्युसँ जनभावना फिरंगीक खिलाफ भए गेल छल। गामक माहौल

क्रमश: शांत भेल। लोकसभ दिन-प्रतिदिनक काजमे व्यस्त भए गेलाह। मुदा उमाकेँ चैन नहि छलैक।❑

४३.

भजनानन्ददासजी वचनक पक्का रहथि। जे बाजि देथि से कइए कए रहथि। जहिना ओ मास्टर साहेबक अंत्येष्टिक समय घोषणा केने रहथि, ठीक तकर अनुरूप मास्टर साहेबक गाम-परतिआमे विशाल शिक्षण संस्थान बनेबाक काज प्रारम्भ भए गेल। दिन-राति काज होइत छल। पचास एकड़ भूमिमे विशाल भवनसभक निर्माण भए रहल छल।

एकहिठाम पहिलासँ एमए धरि पढ़ाइक सुविधा संगे छात्रावास बनि रहल छल। सभसँ नीक बात ई छल जे बालिकासभक हेतु अलग छात्रावासक संगे सभ तरहक सुविधाक व्यवस्था भए रहल छल। मास्टर साहेबक नामपर एहि संस्थाक नाम- 'शशिकान्त शिक्षण संस्थान' राखल गेल। साल भरि दिन-राति काज चलैत रहल। निरन्तर परिश्रमसँ साल भरिक समयावधिमे भवनसभ बनि कए तैयार भए गेल। इसकूल ओ कालेज हेतु डेस्क, बैच, टेबुल, कुर्सीसभ आबि गेल। इलाकाक मानल विद्वानसभ ओतए शिक्षक नियुक्त भेलाह।

भजनानन्दजीक दृढ़ संकल्प आओर पर्याप्त आर्थिक सहयोगसँ साल भरिसँ पहिने प्रस्तावित शिक्षण संस्थान बनि कए तैयार भए गेल छल। आब ओकर उद्घाटनक हेतु, पण्डितजीसँ परामर्श कए देवोत्थान एकादशीक दिन ताकल गेल। जिला-

जवारक समस्त प्रमुख लोकसभ आमंत्रत रहथि। राष्ट्रवादी दल ओ जनाधार पार्टीक नेता आओर कार्यकर्त्ता सेहो उपस्थित रहथि। नवोदित शिक्षण संस्थानक सेमिनार हाल खचाखच भरल छल। भजनानन्ददासजीकेँ अबिते सम्पूर्ण सेमिनार हालमे उपस्थित लोकसभ ठाढ़ भए गेलाह। बन्दे मातरम् गाओल गेल। ततेक मधुर आबाज राष्ट्र गान गाओल जाइत छल जे लोकसभकेँ रोमांच भए गेल। भजनानन्दजी अपन उद्बोधनमे व्यक्तिक उत्थानमे शिक्षाक महत्वपर जोर देलाह संगहि समाजमे नारी उचित सम्मान देबापर सेहो बहुत जोर रहनि। मुदा सभसँ प्रखर बात तँ कहलक हरि नन्दन। ओकरा हिसाबे स्वतंत्रता बिना सभ व्यर्थ थिक। आओरसभकेँ आब एहि काजमे लागि जेबाक चाही। दाढ़ी, मोछ, माथपरक केससभ बढ़ल, हरि नन्दनक बगए कोनो सन्यासीसँ कम नहि लगैत छल। माइकपर जखने ओ ‘भारत माताक जय। बन्दे मातरम्!’ कहलक, करताल ध्वनिसँ सम्पूर्ण हाल गुंजित भए रहल छल । ओ आगू कहलक-

“भाइ आओर बहिन लोकनि! स्वतंत्रताक आन्दोलनक आब आर-पारक परिस्थिति आबि गेल अछि। भारत माता कतेक दिन परतंत्र रहतीह। आब आओर विलम्ब नहि हेबाक चाही। फिरंगीसभ अत्याचारक पराकाष्ठापर पहुँचि गेल अछि। देशक प्रतिष्ठापर बेरि-बेरि आघात भए रहल अछि। समाजमे गरीबी, असममानता, अशिक्षा चारूकात पसरि गेल अछि। फिरंगीकेँ एहिसँ कोनो मतलब नहि अछि। समाजमे नारी शक्तिक सम्मान हेबाक चाही। हुनकासभकेँ शिक्षाक पर्याप्त अवसर भेटबाक चाही। पैत्रिक सम्पत्तिमे हिस्सा भेटबाक चाही। सामाजिक परिवर्तन सेहो जरूरी अछि, अन्यथा समाज साबूत नहि रहत। खण्ड-खण्ड भए

जाएत।”

ओकर भाषण चलिए रहल छल। हजारो लोक ओहिठाम पहुँचि गेल रहए। सेमिनार हालमे तँ चुट्टीक ससरबाक जगह नहि रहैक। माहौल उत्तेजनासँ भरल छल। राष्ट्रप्रेम लोकक रोम-रोमसँ प्रकट भए रहल छल। एतबहिमे सैंकड़ो फिरंगीक पुलिससभ ओहि प्रांगणकेँ घेरि लेलक आओर हबाइ फायरींग करए लागल। शुरुमे तँ भेलैक जे केओ अति उत्साहित भए फटक्का फोड़ि रहल अछि। मुदा बात तँ किछु आओर रहैक।

फिरंगीसभकेँ खुफिआ सूचना रहैक जे राष्ट्रवादी दल आन-आन लोकसभसँ मिलि आइए एहीठाम स्वतंत्रताक एलान कए देत। ताहि बातसँ ओसभ अतिशय चिन्तित भए गेल छल। ओसभ सोचलक जे हबाइ फायरींग हेतैक आओर लोकसभ डरा कए भागि जाएत। मुदा भेलैक उलटा। एक-एक व्यक्ति बन्दे मातरम्‌क नारा बुलन्द करैत आगू बढ़ल। सभसँ आगू वृन्दावनसँ आएलि करीब दू साए विधवा रहथि जे सही मानेमे स्वतंत्रता सेनानी भए गेल रहथि। फिरंगीसभ चारूकातसँ बढ़ैत हजारो लोकसँ घेरा गेल।

एतेक जबरदस्त विरोधक कल्पना फिरंगीसभ नहि कएने छल। एहिठाम तँ वृन्दावनक विधवासभ लाठी लेने फिरंगीसभकेँ खिहारि रहल छलीह। पाछू-पाछू हजारो लोकक हुजुम रहैक। फिरंगीसभकेँ प्राण बचाएब कठिन भए गेलैक। ओसभ भागल। मुदा भागति केमहर। चारूकातसँ घेरा गेल रहए। लोकसभ आर-पारक विचारमे लगैत रहए।

आब की होएत? फिरंगीक सरदार मंच दिस गोली चला देलक। संयोगवश गोली भजनानन्ददासक दहिना ठेहुनमे लगलनि। ओ

ठामहि खसलाह। क्षणभरिमे ई समाचार चारुकात पसरि गेल। लोकक आक्रोश क्रमशः बढ़िते गेल। कैकटा फिरंगी घायल भए चुकल छल। ओसभ एहि अवसरक फएदा उठबैत भागएमे सफल रहल। मुदा जाइत-जाइत कैक राउण्ड फायरींग केलक जाहिमे किछु विधवासभ सेहो घायल भए गेलथि। कम-सँ-कम चारि गोटेकेँ गोली लागि गेल रहैक। ❑

४४.

एहि गोली काण्डक प्रतिध्वनि सालो सुनएमे अबैत रहलैक। फिरंगीसभक अत्याचार बढ़िते गेल। ई तँ एकटा महज संयोग छल जे ओहि गोलीकाण्डमे केओ मरल नहि। अपना आपमे ई एकटा सुखद आश्चर्य रहैक। मुदा एहि घटनासँ विधवासभक हाथमे लाठी आबि गेल छल। ओसभ मरए कटए हेतु कृत संकल्प भए गेल छलि। जाहि व्यक्तिकेँ प्राणक डर समाप्त भए गेल होइक तकरासँ बेसी खतरनाक केओ नहि भए सकैछ। समयानुक्रमसँ से सही साबित भए रहल छल।

ई बीर महिलासभ फिरंगीकेँ नाकोदम कए देने छल। घरे-घर पसरि गेल एहि महिलासभकेँ तकनाइ ओ प्रताड़ित करब फिरंगीसभक हेतु असम्भव भए गेल छल। आखिर पुलिस, फौजसभमे अधिकांश तँ अपनहि माटि पानिक लोक रहैक। भारत भाग्य विधाता आब केओ विदेशी नहि रहि सकत से तँ तय लागि रहल छल।

अरुणकेँ लन्दनमे साल भरिक धक लागि रहल छलैक। एंगल अपन पुरना काज पकड़ि लेने छलि। एंगल ओ एडलीक दोस्ती

परमान लागल जाइत छलैक। अरुण प्राय: एसगरे रहैत छल। कहिओ काल मोन उबिआइ तँ क्लव हाउस चल जाइत छल।

एक दिन एहिना मोन नहि लागि रहल छलैक। फोनक घन्टी बजलैक। ओकर दोस्त नहिआक फोन छल। नहिआ अपन पिताक एकमात्र संतान छलि। ओकर पिता इंगलैंडक मानल व्यवसायी छलाह। ओकरा ओहिठाम टाकाक वर्षा होइत रहैत छल। ब्योंत ताकि कए खर्चा कएल जाइत छलैक। नहिआ फोन कए हाल-चाल लेलकै आओर रातिमे होमय वला पारिवारिक पार्टीक हेतु नोत सेहो देलकैक। ओकरा ई जानि बड़ प्रसन्नता भेलैक जे एंगल आब ओकरासँ फटकी भए गेल अछि, फराके रहैत अछि। ओकरो मोन नहिए लागि रहल छल। तँ साँझ होइते नहिआक पार्टीमे बिदा भए गेल।

नहिआक संग अरुणक पुरान सम्बन्ध रहनि। दुनू संगे प्रशासकीय सेवा परीक्षाक तैयारी करैत छलाह। बादमे नहिआक विचार बदलि गेलैक आओर ओ इंगलैंड छोड़ि कतहु नहि जाए चाहैत छलि। ओहिसँ पूर्व ओ इजीनियरिंगक डिग्री प्राप्त केने छलि। अपन पिताक कम्पनीमे व्यस्त छलि। गाहे-बगाहे ओकर अरुणसँ गप्प-सप्प होइते रहलैक।

एंगलक संग अरुणक बढ़ैत प्रगाढ़तासँ ओ उदास भए गेल छलि। मुदा ओहिठामक समाज हेतु ई उठापटक सभ मामूली गप्प छल। के करवन ककरा पकड़त, के करवन ककरा छोड़त तकर किछु ठेकान नहि। धिआ-पुता भेलाक बादो ई क्रम चलिते रहैत छल। माए तँ बदलि नहि सकैत अछि, मुदा बच्चासभक पिता बदलि जाइत छलैक। यदि नव घर गेल तँ ओ अपन संतानकेँ संगे लेने

जाइत छलि। ई प्रथा सर्वस्वीकार छल, जाहिसँ नेनासभक पालन-पाषण भए जाइत छल। जे भेलैक, नहिआक आगमनसँ अरुणक जिनगी फेर हरिआ गेल छल। एक हिसाबे ओकरा एंगलसँ हिसाब सधाबक अवसर भेटि गेल छल।

अरुण ओ नहिआक प्रसंग परमान चढ़ैत गेलैक। करवनहुँक अरुण स्वयं नहि सोचि पाबि रहल छल कि आखिर ओकरसभक एहि अन्तरंगताक की परिणति होएत? की एहि बेर एंगलक जगह नहिआ ओकरा संगे भारत वापस जेतीह ? समस्या एंगल वा नहिआक नहि छलैक कारण ओसभ तँ ओही परिवेशक अभ्यस्त छल। मुदा अरुणक अपेक्षापर ओसभ उपयुक्त नहि होइत छलैक। करवन के केमहर चलि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि। बिआह सम्बन्धसँ तेँ लोक बचैत छल। आओर बिआहक बाद यदि विच्छेद भेल तँ सभ कमाएल चीज वस्तु हरजानामे हहरि जाइत छलैक। अरुणो सोचलक जे बेसी माथा-पच्चीमे किछु फएदा नहि। जे गेल से गेल। आब ओकरा नहिआक अंतरंगतामे आनन्द आबि रहल छलैक। ओकरा संगे सप्ताहांत बिताबए अगल-बगलक पिकनिक स्पाटपर चलि जइत छल। संक्षेपमे कहल जाए तँ अरुण एक बेर फेर मौज-मस्तीमे लागि गेल छल।

सरकारक योजनामे एहन किछु भेलैक जे साल भरि अरुणकेँ आओर लन्दनमे रहए पड़लैक। ओही समयमे अपना ओहिठाम स्वतंत्रता आन्दोलन तीव्रतर भए रहल छल। उमाक नेतृत्वसँ फिरंगीसभ घबड़ा रहल छल। ओकरासभकेँ कोनो रस्ता नहि देखाइक। ओसभ सोचने छल जे आपसी मतभेदक फएदा उठबैत काज चलबैत रहब। मुदा आब तँ सभ आन्दोलनकारी एक भए गेल

छल। राष्ट्रवादी दल ओ जनाधारपार्टीक संयुक्त मोर्चा बनि गेल छल। आन्दोलनक धार नित्य तीक्षण भए रहल छल। ताहि परिस्थितिमे अरुणकेँ कखनहुँ कए अपनो कर्तव्य-बोध होइक। आखिर देश तँ ओकरो छलैक।

शशिकान्त शिक्षण संस्थानमे भेल गोलीकाण्डक समाचार लन्दनक अखबार सभमे छपल। महारानी विक्टोरिआक कानमे सेहो ई बात गेलैक। ओ एहि बातसँ दुखी छलीह जे ब्रिटिश सरकार निस्सहाय विधवासभपर गोली चला देलक। संगे भारतमे फिरंगीक घटैत तेजस्वितासँ सेहो चिन्तित छलीह। ओ अपन चिन्तासँ प्रधानमंत्रीकेँ अवगत करओलखिन। इहो कहलखिन जे महिलासभक संगे अत्याचार नहि कएल जाए, परिणाम जे हो।

अरुण ओहि समय नहिआक संगे इंगलैंडक भ्रमणपर निकलल छल। लन्दनमे रहैत-रहैत ओकरो मोन ओहीठामक चालि-ढालिमे रमि गेल रहैक। एक दिन प्रात: काल ९ बजे ओ नहिआक एकटा तालक लग बैसल रंग रभस कए रहल छल कि ओकरा तकैत एकटा पोस्टमैन आएल। लन्दनसँ भारत मामिलाक मंत्रीक बजाहटि रहैक। तारमे अविलम्ब लन्दन अएबाक आदेश रहैक। नहिआ संग किछु आओर समय ओतहि रहबाक प्रवल इच्छा रहैक, मुदा मजबूर छल।

नहिआक हाथमे ओ तार दए शीघ्र वापस लन्दन जएबाक गप्प उठओलक। नहिआकेँ कोना दनि लगलैक। आनन्द यात्राक शिखर धरि पहुँचबाक इच्छासँ ओहि यात्राकेँ ओ अन्त नहि होमए देबए चाहैत छलि। मुदा कोनो विकल्प नहि रहैक। सरकारी आदेशक पालन करैत ओसभ ट्रेनसँ अपास लन्दन बिदा भेल। ट्रेनक प्रथम श्रेणीक टिकट छलैक। ओहि डिब्बामे ओएह दुनू गोटे

रहए। एहि बातसँ नहिआ बहुत प्रसन्न छलि। राति भरि की-की भेल, केना समय बीति गेल से पता नहि चललैक। भोरमे कनीक आँखि लागि गेलैक। ताबतेमे ट्रेन लन्दनक प्लेटफार्म संख्या एकपर अड़कि गेल।

कार्यालय पहुँचिते अरुणकेँ टेबुलपर एकटा मोट संचिका राखल भेटलैक। ओ ओकरा पढ़एमे तल्लीन भए गेल। आश्चर्यक बात रहैक जे ओहिमे स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल एक-एक आदमीक विवरण रहैक। शशिकान्त शिक्षण संस्थानमे भेल गोली काण्डक चर्चा सेहो विस्तारसँ छल।

विक्टोरिआ रानी अपन आख्यामे समस्याक तह धरि विचार करबाक बात कहने रहैक। जरूरिओ रहैक। कारण आब पानि माथसँ ऊपर बहि रहल छलैक। हालति यदि एहिना बिगड़ैत रहल, तँ फिरंगी भारतपर शासन नहि कए सकत। एहि समस्यापर विचार करबाक हेतु गोलमेज सम्मेलन लन्दनमे बजाओल गेल। ओहिमे भारतसँ उच्च अधिकारीसभ आएल छलाह। स्थानीय अधिकारी तँ छलाहे।

सभ विषयपर गम्भीरतासँ विचार-विमर्श भेल। ई बात उभरि कए आएल जे भारत भरिमे नारीक शोषण भए रहल अछि। शोषणक अभ्यस्त समाज एकरा धार्मिक परम्परासँ जोड़ि कए देखबाक हेतु अभ्यस्त भए गेल अछि। शिक्षा, स्वास्थ्य, आओर धार्मिक विधि विधान धरि स्त्रीगणसँ जन्महिसँ भेदभाव भए रहल अछि। अंग्रेजक सभ्यता ओ रीति रेबाज ओहिसभक पक्षधर नहि अछि, तथापि भारतक शासक वर्ग एहि विषयपर गुम्म अछि जे ओकर एहि अत्याचारक मौन समर्थन मानि लेल गेल अछि। सभकेँ

ई बात बुझएमे अएलैक। निर्णय ई भेल जे वर्तमान स्वतंत्रता आन्दोलनसँ महिला वर्गकेँ फराक करए हेतु जरूरी अछि जे कानूनमे आवश्यक सुधार कए महिलाकेँ सम्पतिमे अधिकार देल जाए। संगहि बिआह सहित आन-आन सामाजिक परम्पराक निर्वाहमे सेहो ढील देल जाए। आओर कए तरहक निर्णय भेल जाहिमे प्रमुख भारतवर्षक अधिकारीसभपर कम सँ कम भरोसा करब छल। एहि निर्णयक समय अरुणकेँ बैसारसँ कात कए देल गेल छल, मुदा जानकारी तँ ओकरा भेनहि रहैक, से भेलैक।

साँझमे घर आबि अरुण चुपचाप विचारमग्न पड़ल छल। ओतबेमे नहिआ बजारसँ वापस अएलैक। ओकर सानिध्य पाबि अरुण हरिया गेलाह। नहिआ संगे गप्प-सप्प करैत-करैत दुपहर राति भए गेल। दुनू गोटे करवन सुतलाह करवन उठलाह से किछु मोन नहि रहनि। प्रात:काल नहिआ मंद- मंद हँसि रहल छलि।❑

४५.

एहि बेर बहुत दिन बाद खबासिनी आएल छलि। ओकरेसँ तँ नैहरक समाचार भेटैत छल। ओ मोबाइल फोनक जमाना नहि रहैक। चिट्ठी-पत्री करए सेहोसभकेँ नहि अबैत छल। अबिते ओ कहलक जे हमर माए बहुत दुखित पड़ि गेल छलि। दस दिन धरि बंगलिआ डाक्टर सूइआ देलकनि, तखन बोखार उतरलनि। लटि कए काँट-काँट भए गेल छलि। मुदा आब हालति बेहतर छैक। कतेक बेर करवनकेँ हमरा बिदागिरी कराबक हेतु कहलकैक ,मुदा ओ तैआर नहि भेलाह। तखन माए ठीक भए खबासिनीकेँ

पठओलक।

माएक अस्वस्थताक समाचार ओ सुनलथि तँ तुरंत हमर नैहर जाए हेतु तैयार होमए लगलाह। फेर हमहीं कहलिअनि जे खबसिनी जेबे करतै, एकरे संगे चलि जाएब। ताबे बस चलए लागल रहैक। तेँ ई निर्णय भेल जे काल्हि दुनू गोटे बससँ बिदा होएत। बससँ दरभंगा आओर तकर बाद ट्रेनसँ हमर नैहर कनिके दूर छैक।

रातिभरि खबासिनीसँ गप्प करैत-करैत कखन आँखि लागल से नहि बुझि सकलिऐक। हमर नैहर मोतीपुर ड्योढ़ीक समाचारमे हमर आत्मा बसैत अछि। ओहिठामक गाछ-वृक्ष, लोक-वेद, सभमे एकटा अपनत्व लगैत अछि। ओहिठामक माटि-पानिमे हमर जन्म भेल, पालन भेल आओर बच्चेमे बिआह सेहो भए गेल। कतेक दुखद भेल से बात। नान्हिटा बच्चाकेँ अपन समस्त सम्पदासँ फटकी कए देल गेल। मोन कचोटि कए रहि जाइत छल।

मास्टर साहेबक देहावसानक समाचार सुनि बहुत दुख भेल। कतेक सिनेह छलनि हुनकामे। कतेक प्रयास केने रहथि जे हम पढ़ाइ करी, आगू बढ़ी। से मास्टर साहेब आब नहि छलाह। मुदा एकटा नीक समाचार भेटल जे हुनका नामपर शशिकान्त शिक्षण संस्थान बनि गेल छल। आब ओकर फएदा इलाका भरिक विद्यार्थीकेँ भए रहल छल। अरुणक समाचार सुनि तँ चिन्ता भए गेल। केहन नीक आदमी केहन धनचक्करमे पड़ि गेल। उमाक दृढ़ ओ उग्र प्रतिक्रियाक आगू किछु समाधान नहि लागि रहल छल।

भोरे उठबक मोन नहि भए रहल छल। तथापि उठलहुँ। ओ खबासिनी संगे हमर नैहर बिदा भए गेलाह। मोतीपुर ड्योढ़ीक ठाठ-बाठ इलाकामे प्रसिद्ध छल। दरबाजापर बखारीसभक पाँति लागल

छल। हाथी, घोड़ा, बड़का-बड़का पुआरक टालसभ ओहि परिवारक आर्थिक समृद्धिक परिचायक छल। ओहिठाम हमर माएक हाल पहिनेसँ बेहतर भए गेल रहैक। तथापि ओ माएकेँ डाक्टरसँ देखबा देलखिन। मुदा असल समस्या तँ एकांत छलैक। यद्यपि आंगनमे कहए लेल बहुत लोक रहैक, मुदा सहीमे केओ नहि, तकर मूल कारण सम्पत्तिक विवाद रहैक। हमर माए गाहे-बगाहे झंझटि पसारि दैत छलि आओर हारि कए छाती पीटए लगैत छलि। ❑

४६.

अरुणक लन्दन प्रवास समाप्त भए रहल छल। ने अंग्रेज सरकार ओकरा आगू लन्दनमे राखए चाहैक आओर ने ओ स्वयं ओतए रहए चाहए। देशमे बहुत रास लोक ओकरा जानैत छलैक, तँ अंग्रेजसभ सोचलक जे अपन देशमे रहि ओ बेसी कारगर होएत। तँ ओकर भारत लौटबाक फरमान जारी भए गेल।

अरुण एहि बातसँ नहुआकेँ अवगत करओलक। मुदा ओकरापर प्रतिक्रिया नहि भेलैक। सम्भवत: ओ अरुणसँ निकास पाबक ई उत्तम अवसर बुझलक। एंगल तँ कतए चम्पत भए गेल रहैक जे ओकर किछु अता-पता नहि लगलैक। अरुण आब एमहर-ओमहरसँ थाकि गेल छल। तँ जखन नहुआ आओर एंगल ओकरासँ कात भए गेल तँ ओ कोनो विशेष चिन्तित नहि भेल रहए। एक हिसाबे ओकरा मुक्तिबोधे भेल रहैक।

अरुणक भारत लौटबाक नियत समय आबि गेल। ओ एकबेर फेर प्रयास कएलक जे एंगल, नहुआसँ जाइत-जाइत भेँट-

घाँट कए ली। मुदा से सम्भव नहि भेलैक। नियत समयपर ओ एसगरे हबाइ अड्डा पहुँचि गेल। लन्दनसँ वापस आबि कए अरुण चोटे गाम पहुँचल। आब ओकरा उमामे एकमात्र आशा देखाइत छल। संयोगवश उमा ओहि दिन गामेमे रहथि। गाम पहुँचैत-पहुँचैत साँझ पड़ि गेल रहैक।

गाम पहुँचिते अरुणसँ भेँट करए वला लोकक करमान लागि गेल। सभकेँ एकट्ठा कए अपन यात्रा प्रसंगे गप्प-सप्प केलक आओरसभसँ आग्रह केलक जे ओसभ सम्पर्कमे रहथि तँ आओर गप्प-सप्प होइत रहत।

रातिमे अरुणकेँ उमासँ भेँट नहि भए सकल। ओ थाकि गेल छल। तँ भोजन कए सुति रहल। भोर होइते उमा अपन नैहर चलि गेलि। उमाक संग अरुणक विवादक जड़ि एंगल छलैक। एक हिसाबे उमाक कहब ठीक रहैक। जखन अहाँ बिआह केने छी, तखन ओकर निर्वाह करक छल। मुदा ओ वहकि गेलाह। एहि हद धरि बहकि गेलाह जे संगे एकटा फिरंगी महिलाकेँ लेने अएलाह, भए सकैए हुनकर हालति एहन करबाक हेतु मजबूर कए देने होनि, मुदा परिस्थितिक निर्माण तँ मनुक्ख स्वयं करैत अछि। ओ एकटा जाल फेकलाह आओर स्वयं ओहिमे ओझराएल रहि गेलाह। आब ओहिसँ निकलए चाहैत रहथि, मुदा कहबी छैक जे डारिसँ खसल चिड़ै ओ समयसँ चुकल मनुक्ख कतहुक नहि रहैत अछि। सएह हाल अरुणकेँ भए गेल रहैक। फिरंगीसभक जीवन व्यवस्था ओ संस्कार फराक रहैक। ओसभ भोगवादी जीवन पद्धतिक अनुसरण करैत छल जे अपना ओहिठामक माटि-पानिमे रचल, बसल लोककेँ अपच भए जाइत छैक।

अरुण ई सोचि कए आएल रहए जे कोनो सर्तपर उमासंगे समझौता कए लेत। गलती ओकर रहबे करैक आओर ओ मानए हेतु मोन बनओने छल। मुदा समय बहुत आगू बढ़ि गेल रहैक। तकरा वापस नहि आनल जा सकैत छल। भावनाकेँ लाभ-हानिक बटखारासँ नहि अटकारल जाए सकैत छल। आब जखन ओ अपन गलती मानि रहल छल, उमाक मोन कठोर भए गेल रहैक। एहन सम्बन्धकेँ फेरसँ अपनाबए हेतु ओकर मोन स्वीकार नहि कए रहल छल जे समयक कसौटीपर टिकि नहि सकल।

अरुण दोसर दिन अपन सासुर नवगाम पहुँचि गेल। ओतए ओकरा उमासँ भेँट भेलैक। उमा सर्वस्व भारत माताकेँ समर्पित कए चुकल छलि। ओकर समर्पणक हद थाहब ककरो हेतु आसान नहि छलैक। ओकरा भेलैक जे अरुण राष्ट्रीय आन्दोलनमे मदति केने छल, आगूओ कए सकैत छल, तँ ओ ओकरा लग आएलि। मुदा अरुण सेहो कम नहि छल। ओ बुझि गेल जे उमासंग आगू बढ़ए हेतु स्वतंत्रता आनदोलनकेँ अपनाबए पड़त।

तँ उमाकेँ गप्प-सप्प करिते ओ स्वयं स्पष्ट कए देलक जे ओ अपन भावी जीवन राष्ट्र सेवामे लगाओत, देशक स्वतंत्रता हेतु काज करत आओर ताहि हेतु आवश्यक होएत तँ नौकरीसँ त्यागपत्र दए देत। अरुणक दृढ़तासँ उमा अबाक रहि गेलि।

उमाक हेतु अरुण एतेक आगू बढ़ि कए त्याग कए सकत से ओ नहि सोचि सकल छलि। मुदा जखन अरुण ई बात बाजल तँ उमाक हृदयमे सहानुभूति जगलैक। ओहूसँ बेसी राष्ट्र प्रेमक ओकर अवधारणासँ उमा बहुत प्रभावित भेल आओर कहलक जे यदि ओ वास्तवमे पश्चाताप कए रहल छथि तँ सरकारी नौकरीसँ हटि

पूर्णकालिक राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनमे सामिल भए जाथि। अरुण तुरन्त अपन सहमति दए देलक।

अरुणक त्याग पत्र सरकारकेँ भेटलैक। सभ आश्चर्यचकित छल। एहन नीक नौकरीकेँ लात मारि देब आसान नहि छलैक। अरुणक अधिकारीसभ अपना भरि प्रयत्न केलक जे ओ त्यागपत्र वापस कए लिअए ,मुदा अरुण टस-सँ-मस नहि भेल। हारि कए ओसभ ओकर त्यागपत्र लन्दन पठओलक।

अरुण त्यागपत्र दए उमाक संग राष्ट्रवादी दलक सदस्य भए गेल आओर दिन-राति पार्टीक काजमे व्यस्त रहए लागल। ओकरा एही बातसँ संतोष रहैक जे ओ उमाक लगीच अछि। ❑

४७.

ओहि दिन गाममे अपन असोरापर बैसल रही कि एकटा अघोरी तांत्रिककेँ जटा-जूट बढ़ौने, हाथमे नमगर चिमटा लेने, लाल-लाल ऑखि केने अबैत देखलिऐक। संयोग एहन छल जे ओहो तखन गामेपर रहथि।

अघोरी तांत्रिकसँ गाम घरमे लोक डराइत छल। कारण कहल जाइक जे ओ ककरो भेड़ा बना सकैत छलैक। ककरो पर अगिनवान फेकि सकैत छलैक। ततबे नहि, प्राणो घींचि कए जिनक हाथमे पकड़ा सकैत छल। एहन शक्तिशाली छल अघोरी तांत्रिक। ओकरा आगूसँ जाइत देखि निश्चय चिन्ता भए गेल। कतए जा रहल अछि, किछु अता-पता नहि लागि रहल छल। बरहरबावाली अकस्मात विलुप्त भए गेल रहैक। भगताक क्षत-

विक्षत, प्राणहीन शरीर भेटलैक। मुदा ओ कोना मरल, की भेल, तकर आइ धरि किछु अता-पता नहि चलल। बरहरबावालीक भातिज मंगनू एहि तांत्रिककेँ जनैत छलैक। ओएह ओकरा बजा अनलकैक। आबि तँ ओ गेल, मुदा ओकर पन्हान बड़ विकट छल। आओर लगीचमे जखन आएल तँ अघोरी तांत्रिकक मुँह- कान देखल सुनल लागल। जिज्ञासा बढ़ल तँ ओकरा दिस बढ़लहुँ। मुदा हुनका ई पसिंद नहि अएलनि। चिकड़ि कए हमरा वापस करा देलनि।

अघोरी तांत्रिक कहैक जे ओ बरहरबावालीकेँ ताकि आनत। इहो उचारलकैक जे ओ उत्तर-पश्चिम दिस कतहुँ रहैत अछि। मुदा बेसी काज हेतु ओकरा विशेष पूजा करए पड़तैक। पाँच प्रकारक किदनि-किदनि सभ चाही। मदिरा चाही, आओर की-की चाही। ईसभ सुनि मंगनूकेँ ठकविदोर लागि गेलैक। रहि-रहि कए अघोरी तेना आँखि उनटा दैत, चिमटा तेना कए फरका दैत जे देखनिहार लुत्ती-फुत्ती भागि जाइत। सोचल जा सकैए जे मंगनूक की हाल भेल रहल होएत? ओ अनजानेमे भूत नोति आएल छल, मुदा आब पिण्ड छोड़ाएब कठिन भए रहल छलैक। मंगनू तांत्रिकक आगूमे कल जोड़ने ठाढ़ रहए। अघोरी तांत्रिक शिवकान्त गाछ हँकै छल। ककरो पेटक बात चट दए बुझि जाइत छल। मंगनू एहि कारणसँ तांत्रिकसँ डराइत छल। तांत्रिक पूजा पाठक हेतु आवश्यक सामानक सूची बना कए मंगनूकेँ देलक आओर दोसरठाम चलि गेल।

संयोग एहन भेलैक जे प्रात भेने हरखू बरहरबावालीक संगे

गाम पहुँचल। गाममे चारूकात ई बात पसरि गेल। ई बात पुलिस के सेहो पता लागल। पुलिस हरखूकेँ थानामे बंद कए देलक आओर ततेक मारि मारलकै जे ओ रमुआ भगताक हत्याक गप्प कबूलि लेलक। पुलिस ओकरा खिलाफ हत्याक मोकदमा कायम केलक। तहिआसँ साल भरि बीति गेल। ओ जहलमे सड़ि रहल अछि। ❑

४८.

अरुणक त्यागपत्रपर लन्दनमे विचार भेलैक। अंग्रेजसभ तँ ओहिना ओकरासँ जान छोड़बए चाहैत छल। कारण ओ अपना देशक लोकक पक्ष लए लैत छल। ओकर त्यागपत्र मंजूर हेबाक सूचना ओकरा ऑफिसक एकटा कर्मचारी देलकैक। ओकरा एहि बातसँ बहुत उसास भेल छल।

उमाक अरुणक संग भेँट तँ भेलैक ,मुदा मात्र एकटा परिचितक रूपमे। ओकर संघर्ष यात्रा ततेक आगू बढ़ि गेल रहैक जे परिवार बसाबक ने बएस रहैक आओर ने इच्छा। मुदा अरुण एतबोपर सन्तुष्ट रहए। ओ अपना आपकेँ सामाजिक काजमे लगा देलक। जे योग्यता, अनुभव ओकरा रहैक से समाजकेँ समर्पित कए देलक। ओकरा लेल ई परम सौभाग्यक गप्प रहैक।

मास्टर साहेबक मृत्युक बाद हुनकर नामसँ भजनानन्ददासजीक बनाओल ‘शशिकान्त शिक्षण संस्थान’क सरकारी मान्यता दिआबक काज ओ अपना हाथमे लेलक।

अरुण त्यागपत्र दए देने रहए, मुदा ओकर प्रभाव तँ रहबे करैक। अधिकांश कर्मचारीसभ ओकरा जनैत छलैक।

अधिकारीगणमे सेहो ओकर प्रतिष्ठा रहैक। तेँ ओकर प्रयाससँ मास दिनमे ओहि संस्थानक मान्यता भेटि गेल, मुदा एहि सर्तक संग जे संस्थानमे कोनो राजनीतिक गतिविधि नहि होएत। मात्र शिक्षा सम्बन्धी काज ओतए चलत।

गाम घरमे एतेक नीक शिक्षण संस्थान बनि जाएब सभहक हेतु गौरवक गप्प छल। गाम-गामसँ विद्यार्थीसभ ओहिमे नाम लिखाबए लागल। बेटीसभकेँ पढ़ाबए हेतु तँ जेना जन आन्दोलन भए गेल छल। असलमे ओहिठाम बेटीसभक अलग अनुभाग रहैक। रहबाक छात्रावास रहैक, संगहि शत-प्रतिशत विद्यार्थीकेँ छात्रवृत्ति भेटैत छल।

भजनानन्दजी प्रचुर धन एहि संस्थाकेँ दए गेल रहथि जाहिसँ ईसभ सम्भव होइत छल। अरुणक योग्यता ओ कार्यकुशलताकेँ ध्यानमे रखैत ओकरा संस्थानक प्राचार्य बना देल गेल। एहिमे भजनानन्ददासजीक बहुत योगदान छल। वृन्दावन आश्रमसँ एहि स्ंस्थानकेँ प्रचूर आर्थिक सहायता भेटैत रहल। एतबा कए देल गेल जे ई संस्थान आर्थिक रूपसँ आत्म निर्भर भए गेल। गरीब-गुरबा, दीन-हीन, जे केओ बिना कोनो भेद-भावकेँ अपन संतानक नि:शुल्क व्यवस्था ओहिठाम कए सकैत छल। ओकरा कोनो भार नहि पड़ैत छल। परिणामत: चारूकात शिक्षाक प्रचार/प्रसार भेल। लोकमे ज्ञान प्राप्त करबाक जिज्ञासा बढ़ल। आब केओ एहि चिन्तामे नहि छल जे बच्चाकेँ कोना, कतए पढ़ाएब। शिक्षा परिवर्तनक जननी थिक। ई बात साबित भए रहल छल। भजनानन्ददासजीक त्याग ओ दूरदृष्टिसँ पूरा इलाकाक भविष्य बदलि गेल छल। ओ गाम शिक्षाक क्षेत्रमे कोनो सहरकेँ टक्कर दए सकैत छल। ❑

४९.

भजनानन्ददासजी एकटा उदाहरण भए समाजक सम्मुख उपस्थित रहथि। सामान्यत: लोकमे धारणा छल जे सन्त- महात्मा तँ पूजा-पाठमे लागल रहत। भगवानक ध्यान करत। समाजसँ विरत रहत। भजनानन्ददासजी अध्यात्मक सही व्याख्या केलाह। जे किछु कहैत छलाह ओकरा सद्य: अनुकरण केलाह। धार्मिक संस्थाक अकूत सम्पत्ति यदि एहिना मानव कल्याणमे खर्च होइत तँ आइ समाजक स्थिति किछु आओर रहैत। लोक अन्न-अन्न कए मरि जाइत अछि। जीवनक मौलिक सुविधासँ बंचित रहि जाइत अछि। मुदा धर्म-कर्मक नामपर सम्पन्न वर्ग करोड़ो लुटा दैत अछि।

भजनानन्ददासजी वृन्दावनक अनाथ, विधवा गरीबसभक संरक्षक तँ छलाहे, संगहि राष्ट्रीय आन्दोलनमे अमूल्य योगदान केलथि। शशिकान्त शिक्षण संस्थानक माध्यमसँ ग्रामीण क्षेत्रमे शिक्षाक अलख जगओलथि जे अपना आपमे एकटा क्रान्ति छल। स्वतंत्रता आन्दोलनकेँ गति देबामे सेहो भजनानन्दजीक योगदान अतुलनीय छल। ओ एक हिसाबे निष्काम कर्मयोगी छलाह।

एमहर किछु दिनसँ ओ अस्वस्थ रहए लगलाह। हुनकर कैक बेर डाक्टरी जाँच भेल ,मुदा कोनो तेहन बात उभरि कए नहि अबैत छल। अन्तमे ओ दिल्लीक नामी अस्पतालमे जाँच करओलथि। ओहिमे मामिला पकड़ा गेल। असलमे गोलीकाण्डमे एकटा छर्रा अन्दर सन्हिआइत- सन्हआइत हृदयकेँ छतिग्रस्त कए देने छल। एकटा छर्रा पैरमे लागल रहैक तकरा तँ निकालि देल गेलैक। मुदा दोसर बहुत मार्मिक जगहपर छल। डाक्टरसभक कहब रहैक जे

बादमे एकरा देखल जएतैक। ओ घातक जगहपर पहुँचि गेल। डाक्टरक कहब जे हुनकर शल्य चिकित्सा जरूरी थिक।

शल्य चिकित्साक बाद लगभग पन्द्रह दिन धरि अस्पतालमेमे रहलाक बाद भजनानन्ददासजीकेँ अस्पतालसँ छुट्टी भेलनि। ओ दिल्लीसँ वृन्दावन विशेष गाड़ीमे जा रहल छलाह कि एकाएक हुनकर छातीमे दर्द करए लगलनि। केओ किछु बुझितए ताहिसँ पहिनहि ओ गाड़ीक सीटपरसँ धराम दए खसि पड़लाह आओरसभ खतम।

वृन्दावनमे सभ उदास छल। कृष्णक प्रेमनगरी अपन प्रियपात्रक आकस्मिक निधनसँ सन्न छल। जेम्हरे देखू तेम्हरे ओएह गप्प। भजनानन्ददास एकटा इतिहास भए चुकल रहथि। मुदा वृन्दावनवासीक रोम-रोममे ओ व्याप्त छलाह। ओहिठामक विधवासभ एक बेर फेर अनाथ भए गेल छलीह। सभक ठोरपर एकहि बात-

“गरीब, अनाथ, दलित, विधवासभक एहन मददतिगार बिरलेके होइत अछि। धन्य छलाह भजनानन्ददासजी महराज।”

भजनानन्ददासजीक आकस्मिक मृत्युक समाचार चारूकात पसरि गेल। राजकुमार, हरिनन्दन, उमा, चेतन, अरुणसभ वृन्दावन दिस भागल। एक साँसमे राधे! राधे! तँ दोसर साँसमे “जय भजनानन्द”क नारासँ वृन्दावनक गली-गली गुंजायमान भए रहल छल। हमरो ई समाचार सुनि नहि रहल गेल। हुनका संग रते-राति बिदा भए गेलहुँ। जाबे हमसभ वृन्दावन पहुँचि ताबे भजनानन्द महराजजीक अन्तिम यात्रा निकलि चुकल छल। विशालकाय सुसज्जित रथपर भजनानन्दजीक मृत शरीर चलि रहल छल। लगैत

छल जेना समस्त वृन्दावन उनटि परल छल। सम्पूर्ण विधि-विधानसँ भजनानन्द महाराजजीकेँ समाधि देल गेल।

ओहि समय उपस्थित स्वतंत्रता संग्रामसँ जुड़ल समस्त देशवासी एक स्वरसँ प्रतिज्ञा केलक जे जाबे देश स्वतंत्र नहि होएत, हमसभ चैनसँ नहि रहब। अपन सर्वस्व त्याग कए एहि लक्ष्यकेँ प्राप्त करब।

कहुनाक ओ राति बीतल। प्रात:काल प्रमुख प्रमुख लोकक समक्ष महराजजीक इच्छा पत्र पढ़ल गेल। ओहिठाम महराजजीक परिचित ओकील ओकरा पढ़ैत छलाह। भजनानन्द महराजजी स्थानक सम्पत्तिकेँ तीन भागमे बाँटि देने छलाह। एक भाग स्वतंत्रता आन्दोलन हेतु देल गेल छल जकर प्रमुख हरिनन्दनकेँ बनओने रहथि। दोसर भाग शिक्षण संस्थानकेँ देलथि जेकर प्रमुख राजकुमारकेँ बनओलथि आओर तेसर भाग वृन्दावनवासी समस्त विधवा लोकनिक कल्याण हेतु एकटा ट्रस्टकेँ देलथि जेकर प्रमुख उमाकेँ बनओलथि। संगहि इहो कहि गेलथि जे हुनकर मन्दिरक भगवानकेँ विसर्जित कए देल जाए, कारण ईश्वरक साक्षात रूप-विधवा, गरीब, बंचित, अशिक्षितक रूपमे ओ सृष्टिकर्त्ताक सृजनक आराधना बेसी श्रेयस्कर होएत।

सभगोटे महराजजीक इच्छा पत्रकेँ सुनि जोरसँ कहि उठलाह-

“राधे! राधे!”

सभ विसर्जित भए गेल। कतहु कोनो विवाद नहि भेल। ककरो मोनमे कनिको कोनो दुबिधा नहि छोड़ने छलाह भजनानन्द महराजजी।

भजनानन्द महराजजीक समाधि स्थलक समक्ष शपथ लेनिहार समस्त भरतवंसी आब राष्ट्र हितमे मरए-कटए हेतु कटिबद्ध छल। प्रमुख कार्यकर्त्तासभ अपन-अपन घरक रस्ता साफे बिसरि गेल।

"आजादी हमरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

तिलकक ई पक्ति एक-एक व्यक्तिक जिह्वापर विराजित छल। जतहि देखू एक्केटा बातक चर्च छल आ ओ बात छल- स्वतंत्रता। ❑

५०.

वृन्दावनसँ लौटि हमसभ घर परिवारमे लागि गेलहुँ। हमर तीनू बेटी पूर्ववत स्वतंत्रता आन्दोलनकारीसभक संगे सक्रिय रहथि। कतबो बुझबक प्रयास करिऐक जे बिआह करए केओ तैयार नहि होइत छलि। "एहिसभपर सोचबाक अखन उपयुक्त समय नहि अछि।"- इएह उत्तर दए चुप कए देथि।

किछु दिनक बाद डीहगामामे राष्ट्रवादी दल ओ जनाधार पार्टीक संयुक्त बैसार भेल जाहिमे लाखो गोटे भाग लेलक।

चारूकात अपार जनसमूह देखाइत छल। सभक हाथमे तिरंगा झण्डा छल। सभ "बन्दे मातरम्" क नारा लगा रहल छल। डीहगामासँ बिदा भए प्रर्दशनकारीसभ मधुबनी/दरभंगा होइत दिल्ली लाल किला हेतु प्रस्थान केलक।

रस्तामे यत्र-तत्र लोक जुड़ैत गेल। लोकसभक प्रचण्ड उत्साह देखि फिरंगीसभ गुम्म रहए। ओकरासभकेँ लगैक जे आब भारतपर

ओकर राज बेसी दिन नहि चलत। आन्दोलनकारीसभक नेतृत्व हरिनन्दन कए रहल छलाह। संगे राजकुमार, चेतन, किशोर, हीरा, वाणी, गंगा आओर के- के ने छलाह।

आन्दोलन आब प्रखर भए रहल छल। हीरा, वाणी ओ गंगा तीनू बहिन महिलासभक नेतृत्व कए रहल छलीह। उमा वृन्दावनमे बेसीकाल रहए लागल छलीह। विधवा कल्याण ट्रस्टक काजकेँ व्यवस्थित कए राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनक काजमे ओतहिसँ योगदान करतीह, से योजना छल।

गाम-गाम, सहर-सहरक लोक जुड़िते जा रहल छल। फिरंगी सरकार बेचैन छल। किछु अकबक नहि फुरा रहल छलैक। अंग्रेज अधिकारीसभक उच्चस्तरीय बैसक दिल्लीमे भेल। ओसभ निर्णय केलक जे आन्दोलनकारीसभकेँ दिल्ली पहुँचएसँ रोकल जाए, चाहे जेना सम्भव हो। एहि लेल इलाहाबादक संगमक ऊपर बनल पूलकेँ चुनल गेल। लाखो लोक पूलक ऊपरसँ चढ़ि रहल छल। किछु गोटे पूलपर चढ़ि गेल रहथि, किछु गोटे चढ़बाक प्रतीक्षामे रहथि। एतबेमे पुलक ओहिपारसँ हजारनो अंग्रेज फौज धम-धम करैत पुलकेँ घेरि लेलक। ध्वनिविस्तारकसँ बेरि-बेरि घोषणा भए रहल छल जे प्रदर्शनकारी पाछू हटथि वा गोली, बारुदक सामना करथि।

परिस्थिति विस्फोटकारी छल। प्रर्दशनकारीक अगिला पाँतिमे हीरा, वाणी आओर गंगा छलीह। गाम-गामसँ आएल महिला लोकनि हुनकर संग दए रहल छलीह। जखन इलाहाबादक घटनाक समाचार वृन्दावन पहुँचल तँ ओतएसँ उमा आश्रममे रहनिहारसभ विधवाक संगे इलाहाबाद प्रस्थान कए गेलीह। जकरा जे सबारी भेटलैक से पकड़ि आगू बढ़लि। सभ अपन-अपन हाथमे

राष्ट्रीय झंडा लेने छलि। "वन्दे मातरम्"क नारा लगा रहल छलि। केओ पाछू घुरि ताकए हेतु तैयार नहि छलि। असलमे स्वतंत्रता आन्दोलनक संगे स्त्री सम्मानक पुनर्स्थापना एहि आन्दोलनक प्रमुख रुखि भए गेल छल। गाम-गामसँ स्त्रीगणसभ ओहिसँ जुड़ल जा रहल छलि।

दिल्लीमे विराजमान बड़का-बड़का नेतासभ एहि आन्दोलनकारीसभक उत्साह ओ प्रतिवद्धतासँ क्षुब्ध छलाह। ततबे नहि, चिन्तोमे पड़ि गेलाह। "कहीं स्वतंत्रता भेटबाक श्रेय ओकरेसभकेँ नहि भेटि जाइक।"

ओमहर इलाहाबादमे संगम पुलपर हालति अत्यन्त नाजुक भए गेल छल। अंग्रेज फौज ओ पुलिसक संख्या बढ़िते जा रहल छल। लगैत छल जे किछु अनिष्ट भए जाएत। राति-बिराति कोनो कष्टकेँ बिना परबाह केने वृन्दावनवासीसभ इलाहावाद संगम स्थल धरि पहुँचि गेल। संगममे कुम्भ लागल छल। लाखो तीर्थवासी एहि घटनाकेँ देखि रहल छल। अंग्रेजसभ लाचार भए गेल छल। गोली-वारुदसँ ओहिठामक हालतिपर काबू करब असम्भव भए गेल छल।

अन्दोलनकारीसभ तीर्थवासीक सहयोगसँ माघमेलामे तेना मिझरा गेलाह जे अंग्रेजसभ सम्पूर्ण फौज लगाइओक ककरो किछु नहि बिगाड़ि सकल। मास भरि ओसभ माघमेलामे ठाम-ठाम घुमैत- फिरैत समय बिता लेलक। मुदा लक्ष्य तँ दिल्लीक लाल किला रहैक। ताहिपर विचार विमर्श चलिए रहल छल कि ओहि रातिमे बारह बजेमे रेडिओपर सरकारी घोषणा भेल जे अंग्रेज भारत छोड़ि कए चल गेल। देश स्वतंत्र भए गेल।

आखिर ई कोना भेल? ई प्रश्नसभ सभसँ पुछि रहल छल।

मुदा उत्तर देलक हरिनन्दन। ओकरा पता रहैक जे फिरंगीसभ राष्ट्रवादी दलसँ तंग भए दिल्लीकेँ लगीचमे रहनिहार नेतासभकेँ हाथमे भारतक शासन धए घसकि गेल।

"धूर तोरी के! ई तँ हद्दे भए गेल"। सभ इएह बजैत रहैत छल। अंग्रेज सरकार आखिर छल तँ दोगले। से जाइत जाइतो अपन असलियत देखा देलकैक।

मिथिलाक ओजस्वी स्वतंत्रता आन्दोलनकारी वृन्दावनक अनाथ विधवासभक आभार व्यक्त करए वृन्दावन पहुँचि गेलाह। ओहिठाम उमाक अध्यक्षतामे नवाह कीर्तनक आयोजन कएल गेल। राधे! राधे! सँ सम्पूर्ण वातावरण गुंजायमान भए रहल छल।

"स्वतंत्रता तँ देशकेँ भेटि गेल ,मुदा ई तखने सफल होएत जखन गरीब सँ गरीब नागरिककेँ सभ सुख-सुविधा उपलब्ध होएत, सामाजिक भेदभाव हटत, नारीक सम्मानक रक्षा होएत। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय केर लक्ष्यक प्राप्ति हेबाकाल धरि हमसभ प्रयत्नशील रहब, लड़ैत रहब" -ई कहि उमा जोरसँ बजलीह- राधे! राधे!

आओर लोकसभ दोहरओलक- राधे! राधे!

लाखो लोक एक स्वरसँ कहलक- "राधे! राधे!"

राधा कृष्णक प्रेमकथासँ दहो-बहो भेल वृन्दावनक माटि-पानिमे मिथिलाक ई तेजस्वी संतान अलख जगओने छलि।

जे भेलैक, जेना भेलैक, मुदा देश स्वतंत्र भए गेल रहैक। शशिकान्त शिक्षण संस्थानमे एकर उत्सव मनाओल जा रहल छल। ओहि अवसरपर मास्टर साहेब आओर भजनानन्ददासजीक मुर्त्तिक अनावरण सेहो कएल गेल। स्वतंत्रता आन्दोलनसँ जुड़ल सभ केओ

ओतए उपस्थित रहए। उमाक संगे वृन्दावनवासी सए-क-सए विधवासभ सेहो आयल छलीह।

चतुर्दिक आनन्दक वातावरण छल। सभसँ पहिने “जय, जय भैरवि असुर भयाउनि, पशुपति भामिनी माया...” केर सस्वर गायन भेल। एहन लगैत छल जेना जगदम्बा ई गीत सुनैत-सुनैत खिल-खिल हँसैत छलीह। कहैत छलीह जे बाहरी असुरक नाश तँ भए गेल ,मुदा बहुत रास आन्तरिक शत्रुसँ अखन निपटक अछि। लोकसभ एक स्वरसँ भारतमाताक आराधना कए रहल छलः

या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

उमाक एहि प्रस्तावकेँ सर्वसम्मतिसँ सभ केओ स्वीकार केलक जे स्वतंत्रताक प्राप्तिक बाद राष्ट्रवादी दल, किंवा जनाधार पार्टीक प्रयोजन समाप्त अछि। एहि दुनू दलकेँ समाप्त कएल जाए। संगहि समाजमे विद्यमान हजारो सालसँ गुलामक उपहार स्वरूप पोषाइत समाजिक विकृति सभकेँ समूल नष्ट करबाक हेतु प्रयत्न कएल जाएत तखनहि स्वतंत्रता कारगर होएत। ❑

५१.

उमासँ अरुणकेँ बैसारक तुरन्त बाद कनीक काल गप्प भेलैक। अरुण आग्रह केलकैक जे आब ओ संगे रहए ,मुदा उमा बिना किछु बजने सभ किछु कहि गेलैक आओर वृन्दावन अपन समस्त सखी, बहिनपाक संग वापस चलि गेलि। मुदा अरुणकेँ एतबा कहि देलकैक जे शिक्षण संस्थानक हेतु जे मदति ओकरा पार

लागत से करैत रहत।

अरुणकेँ बुझा गेलैक जे उमा ओकरा क्षमा नहि कए सकलि। करबो की करितैक? समय बहुत आगू बढ़ि गेल रहैक। आब परिवार बसाबक समय नहि रहैक। जहन रहैक तखन तँ अरुण हुसि गेल।

अरुण शशिकान्त शिक्षण संस्थानक प्रांगणमे किछु सोचि रहल छल कि चारूकातसँ विद्यार्थीसभ ओकरा घेरि लेलक। ओ अहीमे रहि गेल। शशिकान्त शिक्षण संस्थानकेँ चलएबाक सभटा भार एसगरे अरुण उठा रहल छल। भजनानन्दजी द्वारा प्रचूर धन एहि संस्थानकेँ प्राप्त भेलैक जाहि कारण आर्थिक रूपे ई संस्थान पूर्णत: आत्मनिर्भर भए गेल। ओ इलाकाक नामी विद्वानसभकेँ ओहि संस्थानमे शिक्षक नियुक्त केलाह। संगहि नित्यप्रतिक अनुशासन ओ कार्यप्रणालीपर वकोदृष्टि लगओने रहथि। संस्थानक सुरक्षा चाक चौबन्द छल। अरुणक प्रयासक सकारात्मक प्रभाव पड़ल। पूरा इलाकामे शिक्षाक प्रति अनुराग बढ़ए लागल। इसकूलमे बेटीसभक संख्या बेसी होइत गेल। ततबे नहि, लगभग प्रत्येक वर्गक प्रथम स्थान बेटीसभकेँ प्राप्त करए लागलि।

भगवानक दृष्टिमे सभ बराबरि अछि। छोट-पैघक हिसाब तँ मनुक्ख करैत रहैत अछि। आओर अपनो ओहीमे ओझराएल रहि जाइत अछि। अवसर भेटिते बेटीसभ बेटासँ कोनो मामिलामे कम नहि अछि, से सद्य: सिद्ध भए रहल छल। शशिकान्त शिक्षण संस्थानक नित्यप्रतिक कार्यक्रम वन्दे मातरम्‌सँ होइत छल। शिक्षाक संगहि एक-एक विद्यार्थीमे भारतीय संस्कार देब एकर मूल उद्देश्य छलैक। सभसँ नीक बात एहिबेर ई भए रहल छल जे अभिभावकसभ स्वयं आगू बढ़ि कए अपन बच्चासभकेँ संस्थानमे

नाम लिखबैत छल। संस्थानमे नामांकनक समय अभिभावकसभ शपथपत्रपर हस्ताक्षर करैत घोषणा करैत छल जे ओ अपना कन्या संतानकेँ पुत्र जकाँ बरोबरिक अधिकार देत। शिक्षा सहित तमाम सुविधा अहिना उपलब्ध कराओत जेना बेटाक हेतु। अरुण एहि हृदय परिवर्तनसँ गदगद छल। दिन- राति परिश्रम कए ओ संस्थानक विकासमे लागल रहैत छल। ❑

५२.

हीरा, वाणी, गंगा तीनू बहिन संस्थानमे शिक्षक भए गेलि। आन्दोलनक कारण ओसभ अपनापर ध्यान नहि दए सकल रहए। आब गृहस्थी बसेबाक उपयुक्त समय छलैक, से भेलैक। तीनू गोटेक बिआह एकहि संगे डीहगामामे धूमधामसँ सम्पन्न भेल। गाम-गामक लोक आबि कए बर-कनिआकेँ आर्शीवाद देलक। बहुत दिनक बाद एकटा सुखद अवसर आएल छल। हमर सासु-ससुर तँ एहि घटनाकेँ देखबाक हेतु नहि रहि सकलाह। हुनका सभकेँ जीबैत ईसभ आन्दोलनमे लागल रहैत छल। मुदा हमर माए आएलि। ओकर आनन्दक कोनो वर्णन नहि। वर-कनिआ हेतु टाएर गाड़ीपर सामान भरि कए अनने छल। कनिआसभ बिआहक चारि दिन बाद अपन-अपन बर संगे सासुर चल गेलि। संस्थानमे गर्मी छुट्टी छलैक। तेँ किछु दिन सासुरेमे रहलि।

बेटीसभ बिआहक बाद अपन-अपन सासुर बसए लगलीह। ओसभ उत्तम शिक्षा प्राप्त कए सकलीह आओर समाजक हितमे काज कए रहल छथि। हमर एकमात्र पुत्र इंजीनियर रहथि। सरकारी सेवामे लागल छथि। बिआह नहि भेलनि अछि। आब

प्रयासमे छी हुनकर बिआह कए निश्चिन्त होइ। गृहस्थीक जंजालक अन्ते नहि होइत अछि। नित्य किछु ने किछु लगले रहैत अछि। मुदा इएह तँ जीवन थिक।

हमर बेटीसभक बिआहमे हमर माए डीहगामा आएल छलीह आओर एतहि रहि गेलीह। मोतीपुर ड्योढ़ी आब हुनका हेतु असह्य भए गेल छल। हुनकर सम्पत्तिकेँ दिआद बादसभ गुंडासभक समर्थनसँ कब्जा कए लेलक। आब ओकर की होएत? मुदा आगू लोक एहिना अन्यायक शिकार नहि भए सकए ताहि हेतु किछु करक रहैक।

बेटीसभ सासुर चल गेलि। हमर एकमात्र पुत्र गोविन्द सेहो बाहरे रहैत छथि। गामपर हम दुनू व्यक्ति आओर हमर वयोवृद्ध माए रहैत छथि।

गोविन्दकेँ नौकरी रहबे करनि। सोचने रही जे नीक, कुल-शील ताकि बिआह करा देबनि, मुदा जखन करवनो बिआहक गप्प होइक ओ किछु आओर समयक मांग कए टरका देथि।

एहि बीच हमर माएक हालति एकाएक खराप भए गेलनि। शुरूमे तँ पेटमे दर्द होइत रहलैक, मुदा दर्द बढ़िते गेलनि। बादमे पता लागल जे हुनकर आँतक कैंसर भए गेल छनि। कोनो इलाजसँ फएदा नहि भेलनि । अन्ततोगत्वा, दशमीक रातिमे ओ आँखि मुनलीह से मुननहि रहि गेलीह।

माएक देहावसानसँ मोन बहुत कष्टमे छल। किछु फुरा नहि रहल छल। एहि तरहेँ एक-एक कए पुरान लोकसभ बिदा होइत रहल । ❑

५३.

आब अपन देशमे अपन सरकार बनि गेल छल। सभकेँ उम्मीद छैक जे शासन व्यवस्था जनकल्याणकारी होएत आओर अखन धरि दबल, कुचलल, गरीब, बंचित शोषित वर्गक उद्धार होएत।

असलमे समाजमे परिवर्तन मात्र कानूनक ठेंगासँ नहि भए सकैत अछि। ओहि हेतु, हृदय परिवर्तन जरूरी अछि। लोककेँ ई बुझाएक जरूरी अछि जे समय बदलि रहल अछि। परिवर्तनक विरोधमे जे केओ ठाढ़ होएत से नष्ट भए जाएत।

सन्त विनोवा गामे-गामे एही भावनासँ प्रेरित भए घुमए लगलाह। गरीबसभकेँ अपन संतान मानि ओकर हिस्साक जमीन स्वेच्छासँ कात करबाक हेतु आग्रह केलखिन। बहुत लोक हुनकर अनुयायी भए गेल। हुनकर प्रेमपूर्ण वार्तालापसँ बहुत लोकक हृदय पसिजल। गाम-गाममे भूदान आन्दोलनक रूप धए लेलक। ईश्वरक संसारमे सभ समान अछि। प्राकृतिक सम्पदापर सभहक समान अधिकार अछि। इएहसभ कहैत कृषकाय विनोवा भावे गामे- गामे घुमए लगलाह। विनोवा भावेक हृदय स्पर्शी सरल सर्वग्राही गप्पसभकेँ धर दए बुझा जाइक। ओ बुझलखिन जे असल समस्या लोकक मोनमे अछि। ओकर शुद्धि अध्यात्मक बिना सम्भव नहि अछि। तेँ ओ ईश्वरक प्रति अगाध प्रेमक भाव जनतामे रखैत आगू बढ़लाह।

विनोवाजीक अथक प्रयाससँ हमरो गाममे गरीब-गुरबाकेँ किछु जमीन भेटलैक। बेसक ओसभ उसर, अबांछित वा

विवादस्पद जमीन छल, मुदा गरीब गुरबा एही बातसँ खुस छल जे ओहो भूस्वामी भए गेल।

परिवर्तनशील संसारमे सभ किछु बदलैत रहैत अछि। भूदान आन्दोलन संग सेहो सएह भेल। लोकसभ भावावेशमे विनोवाजीक बात मानि जमीन दान कए तँ देलक ,मुदा अधिकांश मामिलामे ओ कागजपर नहि उतरि सकल। ❑

५४.

देशक आजादीक पाँचम सालगिरहपर कैदीक सभक आममाफीक एलान भेलैक। बहुत रास निर्दोष लोकसभकेँ अंग्रेजसभ कोनो-ने-कोनो धारामे फँसा कए जहलमे ठुसि देने रहैक। संयोगवश हरखू सेहो छुटि गेल। कतेको कैदीसभ जहलसँ छुटि कए प्रसन्न रहए। ओकरा लेबए केओ नहि आएल रहैक। के अबितैक? केओ तेहन होसगर ओकर जानकार तँ रहैक नहि।

खने उदास खने प्रसन्न होइत ओ जहलसँ आगू बढ़ल। एकटा छोटकी लाठीकेँ कान्हपर लटकओने ओहिमे कपड़ा-लत्तासभ बन्हने रेलक लाइनक काते- काते मधुबनीक जहलसँ ओ गाम बिदा भेल। दिनक बारह बजे ओ गाम पहुँचल। ओकरा उम्मीद रहैक जे बरहरबावाली ओकरा देखि कए बहुत प्रसन्न होएतैक। मुदा घर पहुँचल तँ चारूकात नि:शब्द। कोनो आबागमन नहि। बाहरी केबाड़मे ताला ठोकल रहैक।

हरखू घरक आगूमे चुप-चाप बैसि गेल। ओकर देह रोगा कए काँट भए गेल रहैक। हरखू बरहरबावालीक हालचाल पुछए लागल

ताबतेमे केओ बाजि उठलैक जे बरहरबावाली तँ अघोरी तांत्रिक संगे पूजा पाठ करए मास दिनसँ कतहु अज्ञात स्थानपर चलि गेलि। हरखू माथ पकड़ि कए बैसि गेल से उठले ने होइक। आब कतए जाएब? किछु भोजन कराए, बोल भरोस दए बड़ मोसकिलसँ ओकरा बिदा कएल।

हरखू मास दिन बरहरबावालीक बाट तकलक। कोनो पता नहि चललैक। गाममे एसगर रहएमे आब बड़ कष्ट होमए लगलैक। थाना-पुलिस ओकरा कतएसँ पार लगितैक। कनी-मनी ककरोसभसँ पूछ-पाछ केलकैक। मुदा सभ पैसा टानए चाहैक। पैसा ओ कतएसँ आनैत। जहलसँ छुटि गेल सएह ईश्वरक कृपा कहक चाही।

हारल, थाकल ओ गामसँ बिदा भेल। परिश्रम करबाक आब देहमे सामर्थ्य नहि रहि गेल रहैक। मुदा भोजन तँ शरीरकेँ चाही। तकर रस्ता ओ तकलक। बबाजीक बगए बनओलक। देहमे तरह-तरहक चानन घसलक। विभूति रमओलक। मधुबनी कालीस्थानपर भगवतीक दर्शन केलक। कालीमाताकेँ दण्डबत भए प्रणाम केलक। तकर बाद पैरे आगू टीसन दिस बढ़ि गेल। कनीके कालमे एकटा ट्रेन अएलैक। ओ विना टिकट ओइ ट्रेनमे चढ़ि गेल।

हाथमे कमण्डल, माथमे जटा-जूटक संग त्रिपुंण्डधारी बाबा फेर घुरि नहि आएल। ❑

५५.

हमसभ गाममे असगरि रहैत-रहैत उबि गेल रही। हुनको मोन अस्वस्थ रहैत रहनि। हमरो तँ आब अवस्था भइए गेल छल। एक

दिन अहिना असोरापर आश लगौने बैसल रही कि हमर पुत्र-गोविन्दक पत्र आएल। ओ बंगलोरमे घर कीनि लेने छलाह आओर किछुए दिनमे बिआहो अपने पूर्व परिचित मित्रसँ करबाक निर्णय केलथि। हमसभ एहि बातसँ बहुत प्रसन्न भेलहुँ।

एकहि संगे गृहप्रवेश, विवाह, द्विरागमन सभ किछु सम्पन्न भए गेल। हमसभ ओहिठाम हर्षोल्लाससँ किछु दिन रहलहुँ। फेर ओहिठामसँ गाम दिस चलबाक इच्छा भेल। परन्तु ओएह कहलाह जे छोड़ू गामक मोह। आब सोझे वृन्दावन चलैत छी। गाममे असगर समय काटब कठिन भए जाइत अछि। दोसर दिन हमसभ बंगलोरसँ वृन्दावनक गाड़ी पकड़ि लेलहुँ।

हमसभ वृन्दावनमे ठोक्के भजनानन्ददासजीक आश्रम गेलहुँ। ओहिठामक रंग-रूप बदलि गेल छल। ओ आब पूर्णत: विधवासभक कल्याण आश्रम भए गेल छल। ओहिठाम जाइते उमा भेटलीह। हमरासभ लेल सभटा सुविधा कए देलीह। बहुत काल धरि गप्प करिते रहि गेलीह। मुदा आश्रमक सभटा छाड़-भाड़ हुनकेपर छल। ओ जाबे हमरा लग रहथि, दस गोटे किछु-ने-किछु काज लए अबैत रहल।

हमहूँसभ थाकि गेल रही। अपन कोठरीमे जाए विश्राम कएल। घरे बैसल राधे-राधे केर मधुर ध्वनि सुनाइत रहल। एक सप्ताह ओतए बितओलाक बाद गामक उचाट होमए लागल। ओहि बीच मथुरा, वृन्दावन सौंसे घुमि अएलहुँ। असलमे भजनानन्ददासजीक नहि रहलासँ ओहिठाम आब ओ चुहचुही नहि रहल। तथापि ओ संस्था अखनहु बहुत लोकक कल्याण कए रहल छल।

वृंदावनमे सात दिन बीति गेल छल। हम दुनू गोटे विचार केलहुँ जे हमसभ गामेमे जिनगी भरि रहलहुँ। गामे घुरि चली। प्रात: उमाजीसँ आज्ञा लए हमसभ गाम दिसका ट्रेन पकड़ि लेलहुँ। ❑ ❑

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903.
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/203720.
पाथेय
https://pothi.com/pothi/node/205009.
हम आबि रहल छी(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/206093.
प्रलयक परात(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/207234.
बीति गेल समय(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208351.
प्रतिबिम्ब(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208632.
बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/209281.
राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/210181.
संयोग(कथा संग्रह)
https://rb.gy/edit6k.
नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)
https://bit.ly/3The07Y
The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385
न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.
www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि।